।। नमः शिवाय ।।

शिव शक्ति कथा

द्वितीय अध्याय ;शिवा खण्डद्ध

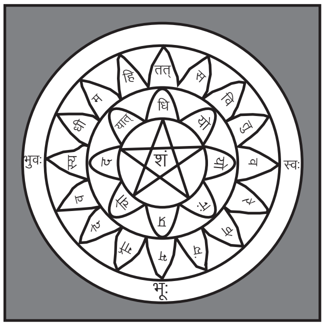

शाम्भवी यंत्रम्

शक्ति

शांभवी	शिव
मंत्राक्षर	बीजाक्षर
तुः	शं
आध्यात्मिक शक्ति	लौकिक शक्ति
मुक्ता	शिवा

फलश्रुति

मुक्ति का अधिकार	अनिष्ट का निवारण

शिवा ;शाम्भवीद्ध

शं कल्याण करने वाली। पोषण के साथ परिवर्तन का भी चक्र इस सृष्टि में चलता है। उसे कल्याणकारी दिशा में गतिशील रखने वाले शिव शक्ति का नाम शिवा है। धर्म रूप वृषभ इस का वाहन है। तीसरा नेत्र कषाय—कल्मषों को नष्ट करने वाली प्रज्ञा का प्रतीक है। वासना, तृष्णा, अहंता तीन आसुरी पुरियों का उच्छेदन करने वाला त्रिशूल आयुध है। मस्तक पर चन्द्रमा शान्ति एंव विकासशील चिन्तन का प्रतीक है।

पुरारिः कामारिर्निखिल भयहारी पशुपतिर्महशो
भूतेशो नगपति सुतेशो नटपतिः।
कपाली यज्ञाली विबुधदलपाली सुरपतिः,
सुराराध्यः शर्वो हरतु भवभीतिं भव पतिः।।1।।
शये शूलं भीमं दितिजभयदं शत्रुदलनं,
गले मौण्डीमालां शिरसि च दधानः शशिकलाम्।
जटा जूटे गंगामघनिवहभंगां सुरनदीं,
सुराराध्यः शर्वो हरतु भवभीतिं भव पतिः।।2।।
भवो भर्गो भीमो भवभयहरो भालनयनो,
वदान्यः सम्मान्यो निखिलजनसौजन्यनिलयः।
शरण्यो ब्रह्मण्यो विबुधगणगण्यो गुणनिधिः,
सुराराध्यः शर्वो हरतु भवभीतिं भव पतिः।।3।।
कामारि त्रिपुरारि खलारि शम्भो,
भवभीतिहारी भव दोष हर्त्ता।
दृश्य अदृश्य जगत जीव रक्षक,
भूलोक पतिनाथ शिव को नमन है।।
वैभव सुसम्पन्न जीवन विपन्ना,
हे नाथ गिरिजापति विश्व स्वामी।
दुःख दोष दारिद भव पीर हर्त्ता,
भूलोक पतिनाथ शिव को नमन है।।
गलमुण्डमाला शशीह भाले,
जटाजूट पावन कर देव सरिता।
मानव सुरासुर आराध्य सबके,
भूलोक पतिनाथ शिव को नमन है।।
सुर शक्ति दाता खल शक्ति हर्ता,
आतंक अवगुण जो नाश करते।
त्रयनेत्र जिनके भाले सुसोहत,
ऐसे शिवा शिव कुल को नमन है।।
सौजन्य चरने शरने सुरक्षण,
ब्रह्मण्य अग्रज सद्गुण विधाता।
ब्रह्म रूप धारी सुर शोक हारी,
संसार स्वामी शिव को नमन है।।

ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ

नमः शिवाय   नमः शिवायै

शिव शक्ति कथा

;द्वितीय अध्याय–शिवा खण्डद्ध

मंगल वन्दना

गिरिजायै विद्महे। शिव प्रियायै धीमहि।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।
पंचवक्त्राय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।
कारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव   काराय नमो नमः।।1।।
नमः शिवभ्यामति सुन्दराभ्यामत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम्।
अशेषलोकैकहितप्रराभ्यां नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।2।।
नमः शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्यां कप्रालकल्याणवपुर्धराभ्याम्।
कैलासशैलस्थितदेवताभ्यां नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।3।।
नमः शिवाभ्यामशुभापहाभ्यामशेषलोकैकविशेषिताभ्याम्।
अकुण्ठिताभ्यां स्मृतिसम्भृताभ्यां नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।4।।
कर्पूरकान्तिंधत्ते सुचारु
गौरी प्रियो यः शशिशेखरश्चदेवाय।
ज्योतिर्मयो यः जयतीह विश्वम्
शिवासमं तं हि शिवं नमामि।।5।।

गंगाधराय आनन्दमयाय सम्यक्
कामान्तकाय फणि भूषण शंकराय।
शवभस्मरंगायसु वेदानाय
नमः शिवायै च नमः शिवाय।।6।।
मुक्तेषु फलदाय प्रखरेषु मतये,
त्रिलोकपूज्याय च विश्वनाथाय।
भक्तिप्रियाय भर्गाय श्रेष्ठाय,
नमः शिवायै च नमः शिवाय।।7।।
बहुदोषहाराय तमोमयाय,
पंचामनाय वृषवाह्नाय।
परमार्थाय जगत्प्रतिष्ठाय,
नमः शिवायै च नमः शिवाय।।8।।

भांति हलाहल पानकरि, पाप दीनता दोष।
प्रज्ञा ज्योति प्रखर करहु, नाथ विश्वकुल पोष।।1।।
देहु ज्ञान विज्ञान मति, सकुल सहृदय ढंग।
सुख वैभव आरोग्य बल, गुण सुरताई संग।।2।।
सृष्टि नाव नहि नाम तुल, शिवा स्वरूप तुम्हार।
विश्व रूप गनि वन्दि पद, नाशहु मनोविकार।।3।।

वन्दउं विश्व रूप नर नारी। मानि शिवा शिव पितु महतारी।।
पुरवहु सकल मनोरथ मोरे। प्रणव रूप धरि जानिय कोरे।।
भांतिय बछड़ा बाल अबोधा। करि अन्तर बाहर शुचि शोधा।।
जगतबन्धु त्रिभुवन शिवशंकर। मंगल मूरति मृड रामेश्वर।।
सोमनाथ नागेश जटाधर। भृंगी प्रिय रजनीश कलाधर।।
व्योमकेश सर्वेश विश्वेश्वर। गंगा धर भयहर शशिशेखर।।
निष्कलंक निष्काम सुरेश्वर। निष्प्रपंच निर्द्वन्द्ध नगेश्वर।।
वामदेव पशुपति काशीश्वर। शुद्ध सच्चिदानन्द नन्दीश्वर।।
श्रीकण्ठ जय धनद मित्रवर। काल काल कर्पूर गौर वर।।
पंचानन महेश सुखकारी। चन्द्र ललाम कुण्डली धारी।।
फणि प्रिय भारी वृषध्वज धारी। आनन्द राशि देव त्रिपुरारी।।
वैद्यनाथ केतार सनातन। आनन्द राशि देव कमलासन।।
त्रिपुर दनुज हर जय करुणामय। महाकाल जय शंभु मृत्युंजय।।
ज्ञान रूप कैवल्यपद अनुपम। भर्ग महेश्वर निरमल निर्मम।।
शक्ति नाथ वेदाय विश्वजिव। खण्ड परशु ईशान सदाशिव।।
महादेव निष्पाप निरंकुश। लोक पितामह रुद्र महाकुश।।

भवभय मोचन जय शमनान्तक। श्रीद त्रिलोचन जय मदनान्तक।।
गुण सागर प्रिय भस्म गिरीशे। डमरू नाद भगत प्रिय ईशे।।
भैरव नीलकण्ठ कृतिवासे। निर्मद निराधार कैलाशे।।
सर्व सर्वदा मंगल दाता। नित बाणेश्वर भव जन त्राता।।
ब्रह्म तेजमय निगुण प्रभा की। अन्धकरिपु शितिकण्ठ पिनाकी।।
शिखिवाहन पितु उग्र कपाली। कण्ठ वरद अधिदेव भुजाली।।
नाथ मृत्युंजय काल स्वरूपा। बहिरन्तर करु ज्ञान प्रधूपा।।
जूंठ ग्रसित प्रीताई झूंठे। दोष इतिक भांती तरु ठूंठे।।
विनवहुं देव इन्द्रियन्ह बूता। जिमि तुम्हरे गण शक्ति प्रभूता।।
संयम ब्रह्मचर्य संग अपने। बल त्रिशूल देहु अनघटने।।
सत्य अहिंसा क्रतुक साधने। त्रक्ष ज्योति बसु हृदय कामने।।
भस्मी शक्ति तहां प्रभु डारा। नेह लगन जहं कर्म हमारा।।
योग शक्ति तुम्हरो जग जोई। बसु संग विद्या अवगुण खोई।।
व्यापइ जटा शक्ति संग वैसे। हेतु मुक्ति पुरुषारथ जैसे।।
प्रणायाम प्राण अविरामा। रहइ बली भांती सम वामा।।
साधि समाधि विलोकउं तोहूं। सपनेउ दूज दिखाइ न मोहूं।।
शिवम तत्व जानब तब पायन। जब जीवन हित लोक लगायन।।
अष्टसिद्धि नवनिधि सुख सेवी। वन्दउं आदि शक्ति जग देवी।।

शिवा शरण कर जोरि परि, आतुर विधि अनुसार।
ऋषिन्ह यूथ लै सूत मुनि, विनवत वचन उचार।।4।।

नमो देव्यै महा देव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।1
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्ये धात्र्यै नमो नमः।
ज्योज्स्नायै चेन्द्ररूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।2
त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।3
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी विशेषतः।।4
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।5
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।6
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।।7

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय विभावनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।8
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।9
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिधायुधा।।10
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।11
यच्च किंचित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।12
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।13
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान भवेत्।।14
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
कुरु विध्वंसौ कलिकअसुरौ व्याभिचाराननीतयः।।15
या देवी सर्व भूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।16
या देवी सर्व भूतेषु प्रज्ञारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।17
या देवी सर्व भूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।18

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्वरूपा, तुम विच्चे यैकार।
जगत जननि मंगल करनि, भव तन वीणा तार।।5।।
अंग आभा रवि प्रात सम, छबि देखब दुश्वार।
वरद मुद्रा भाव मुख, परसत शक्ति अपार।।6।।

जननी जगत नमामि नमामी। सर्व स्वरूपा अन्तरयामी।।
प्रज्ञा श्रद्धा रूप नमामी। शिवम शिवा रूपा जग स्वामी।।
आठहुं यामेउ पुर बदनामी। नाशहु मातु दुराइअ खामी।।
करि सब विनय लेहु भरि हामी। पुरवन्ह मनसा शंकर वामी।।
हम सब मन लोभी मति कामी। सुपथ धराहु सकुल प्रनामी।।
कां कीं कूं काली कल्यानी। कान्ति कराली कात्यायानी।।
खां खीं खूं खेचरी स्वरूपा। शक्ति खगोल खरांशु धूपा।।
जं जं जं जननी जगती की। ज्वाज्वल्या जय श्री जयी की।।

धां धीं धूं धन धान्य धनंजय। धेय धेनु धृति धर्म धरा धय।।
पां पीं पूं पद्या पंच प्राना। परम ब्रह्म परमार्थ प्रधाना।।
भां भीं भूं भगवती भारती। भवम भवानी भगत तारती।।
वां वीं वूं वागेश्वरि विमला। ब्राह्मी ब्रह्मविद्या बुधि बहुला।।
शां शीं शूं शक्ती शिवदूती। शाम्भवी शाश्वत शुचि श्रुती।।
सां सीं सूं सर्वास्त्र धारिणी। सर्व सती सुख सप्त सारिणी।।
हुं हुं हुं हुंकरन हंकारन। भय आतंक शूल दुख टारन।।
दुर्गा क्षमा स्वधा तु स्वाहा। जयति जयन्ती कीजइ छांहा।।
सरस्वती लक्ष्मी भद्र काली। गायत्री तुम रौद्रि कपाली।।
अटल भगति सिद्धी सफलाई। न मोसे बिछुड़इ अब माई।।
जग जननी तुम शक्ति दायिनी। सिंह वाहिनी असुर घातिनी।।
कात्यायनि शशि तेज धारिनी। प्राण पोषिनी विश्व स्वामिनी।।
जन शरणागत पीर नाशिनी। बनु अन्तर शुभ ज्योति ज्योतिनी।।
भक्ति दायिनी सिद्धि दायिनी। नमो नमः सब दोष दामिनी।।
महा अविद्या महा रात्रिनी। विकट गर्जना विकट दाढ़िनी।।
विष्णु माया ब्रह्म वादिनी। नाम नेक सर्वास्त्र धारिनी।।
नारायणी नमामि नमामी। दुख दारिद हारिण शिव वामी।।
राज कोप बैरी षडयंत्रा। होइ दमन जापिय जौ मंत्रा।।
मन माथा उन्माद हमारा। होहि दूर लगु सुपथ पियारा।।
तुहीं परा अपरा सब रूपा। तुम महिमा बल विश्व अनूपा।।
जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाहीं। उपजत मांग तइस लरिकाहीं।।
जब जब मातु तुहंइ गोहरायन। दुख ते उबरि मनोफल पायन।।
अबकी बेर आइ बड़ गाढ़ा। विनय हीन जोरे कर ठाढ़ा।।
नहि सूझत केहि भांति पुकारी। विनवहुं वंश सहित लै नारी।।
पाप पतन बाधा दुख नाशी। रचति सकल रचना अविनाशी।।
जानि शरण अब धाइ उबारा। अनबन भूल बिसरि हंकारा।।
ठाढ़ दुवारी तुमहि निहारी। आश अपेक्षा लै मन भारी।।
जब जे शरण तुम्हारिन आवा। पावा शरण सुपथ मन भावा।।
नमो नमामी भव भय हारी। तुम जानति मन चाह हमारी।।
जननी जगदम्बा जग तारी। तुम समान को विपति बिदारी।।
पीड़ित दीन रखावन वारी। कृपा दृष्टि अब देहु निहारी।।
जेहि विधि बनइ मातु हित मोरा। करहु सोई जानिय सुत कोरा।।
सहित ताप त्रय बैरी शूला। दोष दुगुन उत्पात निमूला।।
हानि दुराइ सकल अभिलासा। पुरवहु मातु आन नहि आशा।।

विश्व रूप जननी प्रनामा। सुरन्ह शकति तुमहीं वसुधा मा।।
सफलइ त्रिसुर तलक तुम बूते। एक नाहि अस नेक सबूते।।
मातु पूजि पद कमल तुम्हारे। एक नाहि जग भयउ सुखारे।।
आयु धर्म धन कीरति विद्या। करि समृद्ध देहु सब सिद्धा।।
जानु ठाढ़ सुत मुखे हमारे। करु रक्षा ताही अनुहारे।।
तुम समान को जग उपकारी। मो समान को और दुखारी।।
जेस निज तनय चीन्हु महतारी। तेस चीन्हउ करि सिंह सवारी।।
सुनि सुत रुदन को मातु न धावहिं। तानुसार हम पीर सुनावहिं।।
भक्त वत्सला जगती जननी। नारायणी बनहु दुख दहनी।।
जानति हित अनहित सब कारन। तनय पीर मन भाव पुकारन।।
सम्पति दायिनि विपति विदारी। भाव भगति भल राखु हमारी।।
ब्रह्म वंश बल वीर्य निकेता। करु पावन गढ़ि भाग्य अगेता।।
देश देह मर्याद नुशासन। बनै प्रखर सब जीवन साथन।।
उपजइ नाहि पतन प्रीताई। भाव अनैतिकता दुख दाई।।
धाउ को मातु न सुनि सुत बोली। लेवेन खबर किवांरिय खोली।।
सुमति सुभाव सतोवृत्ति धारा। ते पोषहु जगती परिवारा।।
पावन प्रीति दृष्टि समताई। सतसंग संयम नियमित ताई।।
कर्म ज्ञान बल योग प्रयोगा। रहउं करत नाशहु भव रोगा।।
सुरन्ह रखावन तुम जेस प्रीती। मोसन मातु राखु सो नीती।।
मैं वन्दउं समेत सुत नारी। धूप दीप करि तुमहिं निहारी।।
देहु रूप यश बल बुधि भारी। वृत्ति मन पूरक जीवन तारी।।
तीन लोक जननी सुख दाता। तुहीं विधाता प्राण प्रदाता।।
बनिय मुदित धन धर्म उभारा। यश विद्या वैभव चहुंवारा।।
अस्त्र शस्त्र गर्जन हंकारन। करि करु भय आतंक विदारन।।
भले कपूत आश कम नाही। होइ कुमातु नाहि जग मांही।।
विद्या विश्व नारि तन जेते। तुम्ह प्रतिमा कह शास्त्र समेते।।
न भल जप तप ध्यान उच्चारण। पदे भ्रष्ट विनवहुं हित कारन।।
भगति भाव बिनु मद अभियाना। नहि तुम्हार महिमा कछु जाना।।
पर चित चिन्तन भाव हमारे। मैं जानउं सब रूप तुम्हारे।।
नमो नमामि मातु कर जोरी। उर बाहर तुम पोरे पोरी।।
नारायणी सर्व गुण राशी। रचना सकल शक्ति प्रकाशी।।
भवभय बाधा दुख अपराधा। तुहीं बिनाशति जे पद साधा।।
विषम परिस्थिति सबु विपरीता। करति नुकूले बूझि अहीता।।
ठग बटमार अगिन आतंका। कुपति प्रकृति विषे बलबंका।।

लोक कपट छल सबु उत्पाता। सुनु न श्रवन तुम बिनु को घाता।।
कुधी ईष्यालू निन्दक नंगा। करु अगुनी व्यसनी मति भंगा।।
बनि अनुकूल करै हित आपन। जौ नाही तो करु इन्ह साथन।।
प्रज्ञा शकति दै कुमति संहारा। बनि गायत्री ज्ञान सुधारा।।
नहि मानहिं तौ दानव मानी। मारि त्रिशूल दुराउ नदानी।।
बूझिय रक्त बीज खल मुण्डा। शुंभ निशुंभ महिष चामुण्डा।।
विश्वेश्वरि तुम विश्व त्रान हर। दूज कहां के तुम समान वर।।
बार बार चरने धरि शीशा। मांगहुं बुधि धन बनहुं बरीशा।।
जीवन दिव्य शकति सदज्ञाना। भूषित बल बुधि प्रतिभा प्राना।।
क्रोधाधिक अन्तर हंकारा। कुमति अज्ञान देहु करि छारा।।
सिद्धी सकल साधना मुकती। काह सुलभ बिनु तुम पद भगती।।
हेतू सद ज्ञाने दिव्यताई। नारायणी शरण चितलाई।।
देहु मातु लरिकन सुख चारी। व्याधि दीनता अवगुन टारी।।
करहु शमन जो मोहि बिगारे। सहित राष्ट्र परिवार हमारे।।
चाह हमारि दुराइ न भगती। बाढ़हिं ढेर बनै नहि कमती।।
जांनु नाहि पूजन आवाहन। जग जननी आवा चढ़ि वाहन।।
जो बिगरत शासन धन कारन। बिगरु न अब करु बेगि उबारन।।
मांग असंभव हम न करई। देन सकोच करन्ह तुम परई।।
यदपि सरल सब तुम्हरे तांई। जेहि जग मानत कठिन बताई।।
भले हिते ता मन ललचाये। पर मोहि मांगत सकुचन आये।।
पर न मातु मन करहु अधीरा। पुरवहु मनसा हलकु गंभीरा।।
तुम समान को दयानिधाना। तुम दइ सकति देइ नहि आना।।
हम तुम्हार तुम मातु हमारी। ठाढ़ पुकारउं पकरि किवांरी।।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली। दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।।
माता पूत नात अनुहारे। मांगहु वन्दउं आश हमारे।।
को न मातु चह बाल सुभागी। पुरवहु मातु जौन हम मांगी।।
देखति जानति तुम सबु वोहू। चाह जरूरत जो कछु मोहूं।।
बाधा विपति व्यथा पन दीना। सहित दुराहु राज भय तीना।।
तनय रुदन करि आश निहारी। काहे करु बिलम्ब महतारी।।
सुनि बिलखन धावा वहि ढंगा। लै जन्मात्री नीति प्रसंगा।।
भव सन्ताप होइ कोउ खानी। हरन मातु लेहीं मन ठानी।।
पाइ मातु गोदी सुत कोऊ। मानत आपु सुभागी होऊ।।
तब लौं पूत अभागी लागे। जब लौं मातु श्रवन न जागे।
पर तुम ते कछु नाहिय भिन्ना। अब राखहु नाही मन खिन्ना।।

तुम सबु ठांव रूप सबु तेरा।	सो नहिं चाह जो ना हित मेरा।।
होइ हंसी जेहि महं अपमाना।	सेवक निन्दा नीच समाना।।
छल पाखण्ड दोष दुरचारा।	शुंभ निशुंभ भांति संहारा।।
आंसु हमारी आश तुम्हारी।	भाग्यधिकारी लेहु उबारी।।
भक्ति हमारी शक्ति तुम्हारी।	देहु न देहु पीर लेउ टारी।।
जासु प्रतिक्षा आश अगोई।	तुम बिनु देइ दूज को वोई।।
खोयेउ सोयेउ रोयेउ बोयेउ।	न मुद मुख बनु बिनु जल धोयेउ।।
पर जे मातु गोद बल पाये।	जावइ खिल मां कर सहलाये।।
जयति जयति जगदम्ब भवानी।	खोवहु अनतर बहिर गलानी।।
भाव अभाव नाहि गुण ध्यानी।	वन्दउं भले मरम नहि जानी।।
भवानन्द तुम ज्ञान प्रकाशी।	दृष्टा सृष्टा जग उर बासी।।
जय जय जय त्रिपदा भयहारी।	महिमा अपरम्पार तुम्हारी।।
बल बुद्धि विद्या शील स्वभाऊ।	नित बाढ़ै मन मोद उछाऊ।।
बनै न विनय कथत मुख बानी।	मांनु अबोधक जगत भवानी।।
जेहि विधि होइ जौन जग हीता।	देइ सोइ लाइअ ता प्रीता।।

बाल लोभ नाही घटइ, दीखु जौन सोइ मांगु।
देत नाहि माता थकहिं, कबहुं न घटु अनुराग।।7।।

वन्दउं पारवती गिरि तनया।	गौरी गणपति जननी अभया।।
त्रय पुर शकती शक्ति तुम्हारी।	कतहुं वृषभ कहुं सिंह सवारी।।
सहित तीन सुर जित भव आभा।	बिनु तुम्हरे कुछ प्रखर कहां भा।।
नव दुर्गा कात्यायनि अम्बा।	ब्रह्मचारिणी तू जगदम्बा।।
महागौरि तुम कालरात्री।	दुर्ग चन्द्रघट सिद्धिदात्री।।
सत्य सुता गिरि स्कन्धमाता।	प्रौढा कूष्माण्ड वृद्ध माता।।
गनिय स्वमूढ़ भार तुम माथे।	दइ चाहत रहु लेखनि साथे।।
सती साध्वी कुमारी।	गायत्री जगती महतारी।।
सर्व शास्त्रमय सर्व मंत्रमय।	दुर्गा नित्या चामुण्डा जय।।
ब्रह्म वादिनी शारद रूपा।	ध्यान ज्ञान तुम वाक् स्वरूपा।।
सुर माता चिन्ता सब विद्या।	सत्ता सत्यानन्द आद्या।।
पाटलि पाटलवती सुहावनि।	देव वदन धरि ऐन्द्री भावनि।।
ज्ञाना क्रिया वैष्णवी बहुला।	नारायणी अनन्ता विमला।।
चिता चिति चित रूपा भव्या।	जया सदागति मनः अभव्या।।
अमेय विक्रमा विश्व आर्या।	दक्ष सुता तुम शंभु भार्या।।
युवति प्रत्यक्षा मातु अप्रौढा	यती कुमारि किशोरी प्रौढा।।
महाबला मुख रौद्र जलोदरि।	उत्कर्षिणी वराहि महोदरि।।

ब्राह्मी सावित्री ब्रह्म बानी। महातपा भव प्रीत भवानी।।
मधु कैटभ महिषासुर नाशी। चण्ड मुण्ड भव विपति विनाशी।।
बुद्धि बुद्धि दा शास्त्र स्वरूपा। पुरुषाकृति बल अस्त्र अनूपा।।
सर्वासुर नाशी खल घाती। शुंभ निशुंभ विश्व उतपाती।।
मुनि मतंग पूजित शिवप्रिया। मांतगी लक्ष्मी जग प्रिया।।
चित्र त्रिनेत्र अनेका वर्णा। वाहन सकल स्वरूप अपर्णा।।
हंकारानन्ता भद काली। भवमोचनि शिवदूति कराली।।
अगिन ज्वाल इक कन्या भविनी। मुक्तकेशि कलमंजिर रंजिनी।।
जननी रूपा घोर शूल धर। विष्णू माया तुम पिनाक वर।।
पट अम्बर परिधाना धाता। प्रेम बहुल परमेश्वरि माता।।

जगदम्बा जग तारिणी, ज्योति अखण्ड तुम्हार।
विविध रूप धरि लोक महं, तुही रखावन वार।।8।।
ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा, ऐं ध्रीं सौं सब नाम।
सर्व सिद्ध मंगल करन्ह, पूरक मनसा काम।।9।।
अं कं ते क्षं तलक तुम, पवन रूप संव्याप्त।
वां रूपिणी वाक बनु, जथा विनायक प्राप्त।।10।।

भूर्भुवः स्वः युत जननी। सकति तुहीं कलुषित मति दहनी।।
वेद जननि बनु मन अनुकूला। भूल शूल हर अवगुन कूला।।
सदबुधि दायिनि सृष्टि विधाता। सर्व शक्तिमय भव सुख दाता।।
वेद मातु तुम वाणी चेतन। अन्तर रहु बनि भगति निकेतन।।
ब्रह्म शक्ति दृढ़ दिव्य स्वभाऊ। आत्म शान्ति दइ कथन उगाऊ।।
पावन ज्योति अखण्ड अनन्ता। अंश देहुं मांगहि सुर सन्ता।।
इहि अवसर कलिकाल प्रभूता। हेतू क्षारन विनय बहूता।।
ज्ञान करम भगती सत जयती। करु ज्योतिश पुनि होइ न कमती।।
विश्व वन्द्य माता ब्रह्मानी। तुम बुधि रूप त्रिधा गुण खानी।।
विश्व व्यापु स्वर शब्द स्वरूपा। बनिय भारती भगवति रूपा।।
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा। प्रभा अनूपा दिव्य स्वरूपा।।
ज्ञान दायिनी प्राण रागिनी। शक्ति दायिनी विश्व स्वामिनी।।
हंस वाहिनी ज्योति तुम्हारी। तिमिर विदारी दुर्गुण छारी।।
तुम्हारी महिमा पार न पावै। शेष महेश देश सब ध्यावै।।
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकाशै। गुरुता देइ अविद्या नाशै।।
तुम्हारी शक्ति दिपै सब ठांई। जानइ विश्व प्राण स्वर नांई।।
कमलासन वीणा कर धारी। विमल श्वेत छबि तुमहिं पियारी।।
सुर मुनि वन्दित मातु नमामी। जयति शारदे अन्तरयामी।।

मनुज जन्म जीवन जेहि हेता। भल फल लह तू जाहि निकेता।।
बिनु तुम्हरे बनहीं को विज्ञा। अनतर ज्योति रूप तुम प्रज्ञा।।
वेद स्वरूपा रसना बासी। तुहीं श्रद्धा मेधा परकाशी।।
मनसा वाचा कर्म समेता। प्रनवहुं पूरन कथा अगेता।।
ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी। आरत अर्थी चिन्तित भोगी।।
चरण शरण तुम्हरी जे आवै। लइ फल वांछित आन बतावै।।
सुमति सनेह बसै परिवारा। न्याय सुप्रेम गठन सहकारा।।
गात तारणे ज्ञान विज्ञाना। जीवन देव साधना ध्याना।।
रूप प्रकृती गगन विहारी। केश कला शशि बिना विकारी।।
मातेश्वरी विद्या व्रत धारी। श्वेत कान्ति नहि जाइ निहारी।।
सकल सृष्टि कै बुद्धि विधाता। पालक पोषक नाशक त्राता।।
देवि स्वरूपा बुद्धि भवानी।। पुरवहु जौन निकसु मुख बानी।।
दृश्य अदृश्य तुम्हार स्वरूपा। निशिबासर छाया अरु धूपा।।
निर्विकार निर्गुण सुखकारी। विश्व वेद अक्षर तन धारी।।
कला कल्पना कृत्य अनन्ता। तुहीं विशुद्ध विनाशक चिन्ता।।
अपरा परा तू नित्यानित्या। विश्व आत्मा जीवन मित्या।।
मोक्षदायिनी ज्ञान विधाता। मन प्रवर्तक भाग्य विधाता।।
विमल बुद्धिदा विद्या रूपा। रूप अनेक तुम्हार अनूपा।।
सृष्टि व्यवस्था रक्षण कारी। सृजन ध्वंसक शक्ति तुम्हारी।।
विद्या काव्य शक्ति अनुदाना। अक्षर अन अक्षर रस साना।।
रसना रस पावै मधुराई। पर श्रवने परसइ प्रीताई।।
भावै भगति लोक हित ढंगे। बहहीं जथा भगीरथ गंगे।।
सुर मुनि शास्त्र हरखहीं जैसे। देहू स्वर वाणी मोहि वैसे।।
हर पर पीरा दोष विदारी। पावउं सोई बुधि महतारी।।
बनु विचार मन विद्या भाषा। चित चिन्तन कर्मे प्रयासा।।
अंश तुम्हार अंश अनुकूले। कथा सरस बनि फरई फूले।।
ज्ञान रूप विज्ञान समेता। बसु माथे मन शक्ति सृजेता।।
ठांऊ कोऊ कोऊ काले। सुनि वन्दन बनि जाउ निहाले।।
कुण्ठित कुमति कलुष दुरियाऊं। न मद होइ भगति सोइ पाऊं।।
सधइ नियम यम संयम संगा। योग कर्म जित नीति प्रसंगा।।

हमें भक्ति दो मां रहे जो अखण्डित सतत साधना की तपन चाहते हैं।
नही वासना कामना चाहिए मां विमल ज्ञान की इक किरन मांगते हैं।।
अहंकार मुझको सता कुछ न पाये, नही भूल भटकन के फन्दे में आयें।
द्वेष ईर्ष्या का नही चित हो चिन्तन इसी साधना का वरन मांगते हैं।।

तुहीं शक्ति रूपा मिलो शक्ति बनकर, दो पथ ज्ञान हमको अगुंली पकड़कर।
अटल अर्चना वन्दना से हों सुरभित, चरन की शरण में रहन मांगते हैं।।।
तुहीं हो सभी रूप सब रूप तेरा, दया दायिनी हो तू मैं दास तेरा।
न जीवन से यह भाव करना बिखण्डन, इसी साधना का भजन मांगते हैं।।

शिवम शिवा वन्दन नमन, सुर नर करि कर जोरि।
जयति गुंजाइअ महि गगन, मनानंद रस बोरि।।11।।

ओर सभा मुनि सूत निहारी। कह शिविरे दिन दूज तयारी।।
जानु लोग सो परम अभागे। जाहि शिर्वाचन नाहि नुरागे।।
शिव समान दाता को आना। जे न जांनु ते मूढ़ अजाना।।
भव वरदानी औढर दानी। जानहिं विश्व आपु घर प्रानी।।
निज रक्तज केहि नाहि पियारू। पर खल खटमल के ना संहारू।।
चिन्तन भाव विचार अहारेउ। अनुसारे बनु बीज प्रकारेउ।।
बीज प्रकार बनै सन्ताना। गुण संगति कर संस्कृतिवाना।।
मानव चरित रूप युग रूपा। युग अनुरूप उपजु मति धूपा।।
जथ प्रकाश व्यापइ जन अन्तर। उपजइ भगति भाउ तेस मंतर।।
न्याय प्रेम बिनु मानव श्रेनी। भल न होइ नहाइ त्रिवेनी।।
बिना शक्ति कछु काम न होई। बिनु सतसंग शक्ति रहु खोई।।
बिनु शिव कृपा कठिन सतसंगा। गनु जीवन जेस जल चर गंगा।।
नमो शिवा शिव विश्व विधाता। तुहीं मात पितु विद्या भ्राता।।
बल बुधि अन्न धनद प्रभुताई। देहु नाथ जोउ जबै खंगाई।।
नमः शिवाय मंत्र पंचाक्षर। जपत मिटत भव पीर भंयकर।।
शिव नाता जोरइ कोउ ढंगा। जन जीवन लह देव प्रसंगा।।
शिव पूजा छीनइ भव शोका। दइ सुख मुक्ति अन्त शिव लोका।।
दारिद रोग भीति दुख पीरा। बहहीं भांती सरिता नीरा।।
सकल दोष अघ ताप अड़ंगा। होहीं क्षार द्वन्द्व दल दंगा।।
शिव परिवार नीति जे राखी। भल बनु राष्ट्र व्यवस्था साखी।।
शिवम अर्चना शिवा उपासन। करि जे मुक्ति आउ ता हाथन।।
सत शिव रूप शिवा शिव शक्ती। सदबुधि उपजावत दोउ भक्ती।।
सर्व शक्ति ब्रह्माण्ड स्वरूपा। आदि न अन्त न मध कोउ रूपा।।
बन्धु अबन्धु नियन्ता अन्ता। न गुरु शिष्य न सुर मुनि सन्ता।।
काल कला न विद्या अवगुन। बंधन मुक्ति न सदगुन निर्गुन।।
कर्म न कारन न भूत भविष्या। न वर्तमान धरम कर्त्तव्या।।
चलै बिना पद सुनु बिनु काना। कर बिनु कर्म करावइ नाना।।
देवी देव रूप बनि सोई। करइ संहार जनम जग होई।।

शिव परिवार

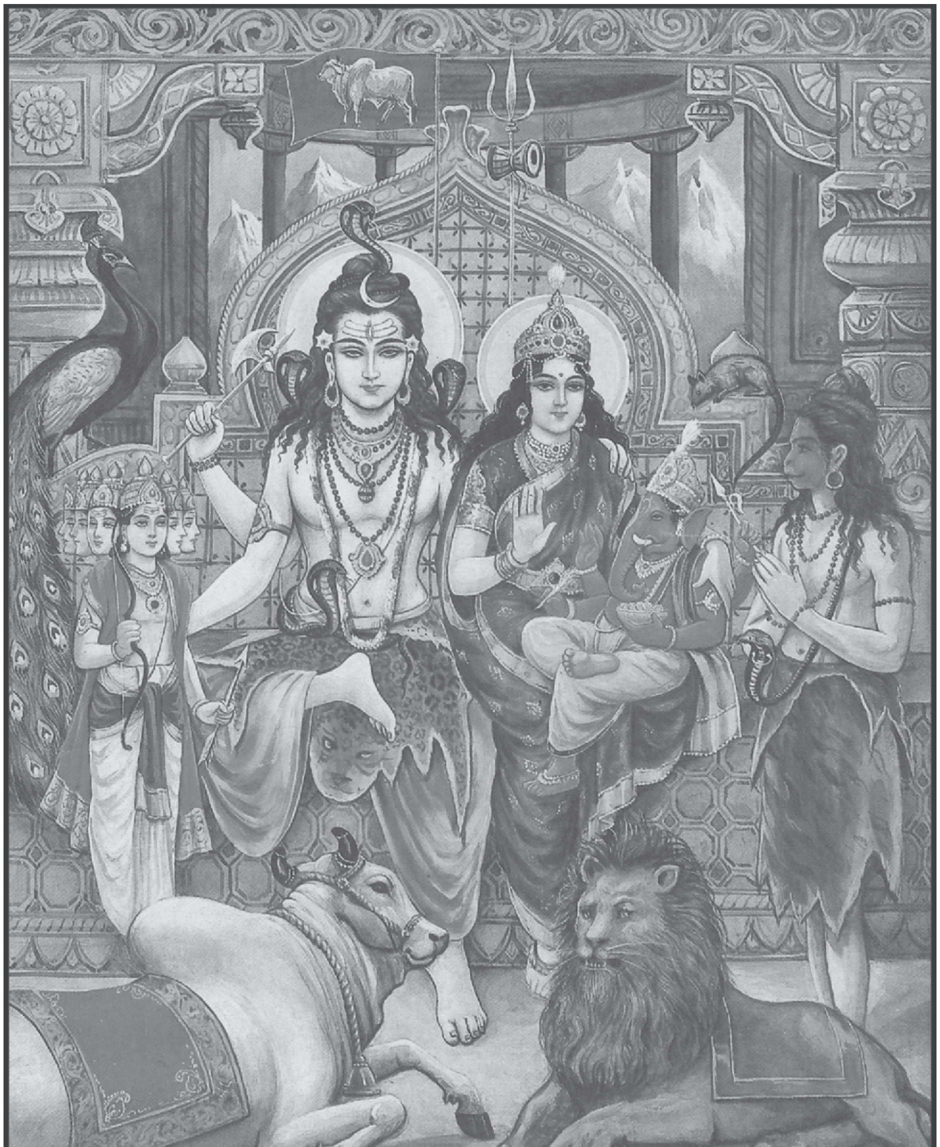

शीशांग गंगा भाल शशि, रह कंठ भूषण सर्प तन।
त्रिशूल डमरू साथ नन्दी भस्म प्रिय बाघाम्बरासन।।
जग जननि बायें शिवा गोदी सुशोभित गजवदन।
आनन्दमय विहंसत विलोकत करि तनय तन मुख चुमन।
शिवदास नमनत माथ धरि त्रय रूप संग शिव सति चरन।।

मैं मतिमन्द दोष दुख कूरा। कामि कोधि छल कपटी पूरा।।
पूजा आलस कुटिल मलीना। तबहुं शिवा शिव कृपा कीना।।
दया सिन्धु करुणा रस आगर। अवसि सुनै आरत वच आखर।।

शक्ति वन्दना ज्योतिलिंग, महिमा श्रवन समान।
और कथामृत पान करुं, ऊबु न आउ थकान।।12।।
लोक धर्म सतसंग हरि, क्षारत आतम कीच।
सतोवृत्ति बुधि विमल करि, बैठत हरि उर बीच।।13।।
सूते सूते सूत जे, जागिय सूता नाय।
ज्ञान ध्यान विज्ञान बल, तिमे आपु उफलाय।।14।।
सभा समय अवसर परखि, शौनक बोले वैन।
भाव विनीते जोरि कर, श्रद्धा झुकाइअ नैन।।15।।

चलत कथा हिम सुर नर हेता। विश्व हितारथ कृपा निकेता।।
सूत समान को ज्ञानी ध्यानी। नाशइ पीर जासु मुख बानी।।
मन शौनक इक पीर समाई। तेहि भाखन विधि अवसर लाई।।
जोरि हाथ तट सूतहि आगे। शौनक पीर सुनावन लागे।।
क्षमहु मुनीश न लायउ कोधा। कहु सो आगु जो बनु मन बोधा।।
शिवम कथा ते प्रीति अपारा। कीन्ह केसस शिव दुष्षृति छारा।।
लोक कुशल कर शिव भगताई। पर इहि काल भगति कमताई।।
स्थिति देश काल पहिचानी। करत फिरइ कलिकाल नदानी।।
सकै जौन कलिकाल बिदारी। जन कल्याणी मंगल कारी।।
करु संग कथा सोउ बतरावन। धोइ आत्म बुधि रांचिय पावन।।
शाश्वत साधन हर कलित्रासन। जो सो होइ कहउ मुनि नाथन।।
गूढ़उ तत्व न साधु दुरावहिं। पूंछ जिज्ञासू जौ पल पावहिं।।
अति आरत पूंछउं मुनिराया। सभा सुनन्ह चह कीजइ दाया।।
तुम्ह सन्तन गुरु भाखु पुराना। सुनत कथा सबही करि ध्याना।।
नहि कवनव संशय मन काहू। सुनि शिव महिमा ऊब न आहू।।
पर विचार उपजा मन मोरे। तुम बिनु के भ्रम संशय छोरे।।
यदपि कथा शिव सुलभ न होई। हरन कलिक दुख गनु ता गोई।।
आदि अनादि रूप शिवशंकर। जग सब रूप चाह सब उनकर।।
करैं सोई जानइ जे आपू। ता मद ताहि देइ सन्तापू।।
सकल चराचर सुर मुनि वृन्दा। जापहिं शिव गनि हर कलि फन्दा।।
प्रगटि महेश बनाउ सुभागी। होइ न भलेउ ढेर अनुरागी।।
एक नाहि बस नेक प्रमाना। करि बुधि विमल थमाइ खजाना।।
सहजइ लाभ दीन्ह भवतारी। पाइअ गुण गावहिं नर नारी।।

जगत जीव नर नारि बढ़ि, विविध इष्ट अपनाइ।
पथ भूले कलि भय परे, भ्रमित फिरइ बौराइ।।16।।

केतनौ व्रत रहि गंग नहाई। जप तप ध्यान ज्ञान अपनाई।।
अनुष्ठान माला करि ढेरा। सहि सहि वातावरण थपेरा।।
करि नाना हठ विविध प्रयासा। दान धरम पथ करैं विकासा।।
भाग दौड़ मानव विज्ञानी। रह भौतिकता भीतर सानी।।
ज्ञान भगति मानिय बल हीना। व्यसने प्रीति सबै चित दीना।।
आपु सतावन आलस नाही। ऐसन मूढ़ ढेर जग मांही।।
नहि मानवता बढ़ु असुराई। दिन दिन होत भगति कमताई।।
बनै मनुज तन केसस सुखारी। कहउ मुनीश सो चाह हमारी।।
यदपि कहत लागइ बड़ लाजा। जौ न कहउं बड़ होइं अकाजा।।
जेहि विधि मिटै नाथ भ्रम भारी। भागै कलि जन होइ सुखारी।।
कहउं कथा सो करि विस्तारी। जो विधि देइ सतोयुग ढारी।।
कहि शिव शिवा कथा विधि नाना। सब विधि हरहु लोक अग्याना।।
बनहीं पूर सभा उद्‌देशा। जौ जग देहु शिवम उपदेशा।।
सुनि पाइअ बांटउं चहुं जाइअ। युग प्रज्ञा द्विज संग बनाइअ।।
दोष देराइअ कलिक भगाइअ। सुर संस्कृति प्रभुता पसराइअ।।
मनुज लक्ष्य भव सकउं दिखाइअ। सन्त लक्ष्य तब पूरण पाइअ।।
अस अवसर पुनि आउ न आये। जहं सुर नर मुनि संग सभाये।।
सभा नुसार समय अनुसारे। सुर नर चाह हिते प्रकारे।।
सुर नर संगम हिम घर द्वारे। मुनिवर प्रश्न सकारन धारे।।
तुम समान को मुनि विज्ञानी। तुम शिव शिवा भगति तन सानी।।
तुम जानत मानव उद्धारा। और करन्ह कलि धाक सछारा।।
जेहि विधि बढ़ै भगति विज्ञाना। कथन करन्ह सो राखिय ध्याना।।
आतम परिष्कार व्यवहारा। आदि शकति महिमा उदगारा।।
बुद्धि विवेक विमलता संगे। कहु कछु देव रहस्य प्रसंगे।।
देव बली विधि असुर निबलता। को दुरचार अतंक कुचलता।।
कृपा दृष्टि करि भाखु मुनीशा। चाहत सुनन्ह देव नर ईशा।।
विश्व रूप शशि धर सुरनाथा। आपु पुनीत बनावहिं गाथा।।
सभा समर्थन भा जय साथे। कहत शिवा शिव ऊपर हाथे।।

शौनक वाणी लोक हित, बूझि सभा सन सूत।
धन्य निकसु सब के मुखे, आउ मोद अनकूत।।17।।
सूत विशिख विह्वल भयो, नयन प्रेम जल छाउ।
कह समान तुम लोकहित, दूज न मोहि दिखाउ।।18।।

शोक मोह सन्देश भ्रम, यदपि न तुम्हरे संग।
शिव अनुराग अनन्त रह, चह इहि जुड़इ प्रसंग।।19।।
धन्य बखानत सूत कह, धन्य हृदय उद्‌गार।
प्रश्न विनय मन चाह गनि, मुदित करिय स्वीकार।।20।।

शंख नाद करि सूत मुनीशा। सभा शान्त बनु थिर सब दीशा।।
हिम कलरव सब लगे ओनाने। निज निज रूप सभा नियराने।।
उभरु सबै मन परम उछाहा। सुनन्ह कलिक मल दोष बिदाहा।।
सभा नीति अवसर पहिचानी। बोले सूत मधुर मुख बानी।।
वन्दउं रूप शिवाशिव गाथा। बूझ जे भल न कलि तेहि साथा।।
मंगल भवन अमंगलहारी। गति उपराजि देहिं त्रिपुरारी।।
बार बार चरनन शिर नाइअ। शंभु उमा कछु भिन्न न पाइअ।।
तुम समान को जग उपकारी। जे शिव कथा रहस्य उभारी।।
जेहि जग जानइ देउं बताई। जागे जथा सपन भ्रम जाई।।
जहां शिवा शिव कृपा बिराजे। भगें दूत यम दूज को राजे।।
जे शिव शिवा चरन अनुरागी। नहि सपनेउ सो बनै अभागी।।
नहि अस प्रश्न करै जन मूढ़ा। लागत सुनन्ह चहत रस गूढ़ा।।
तुम समान को आन जनावन। कीन्हेउ प्रश्न पुनीत सुहावन।।
सकै जिते सुनि विश्व प्रसंगा। पूंछिय जौ तुमहूं इहि ढंगा।।
नारदादि श्रुति शास्त्र पुराना। थकहिं कहत शिव कथ रस गाना।।
शिव स्वभाव रक्षण सब लोका। कबहूं ध्याइअ कबहुं विलोका।।
ज्योति लिंग गढ़ि बारम बारन। भगत रखाइ करिय खल जारन।।
मानिय ज्योति लिंग प्रभुताई। गहि लेहीं जन पीर मिटाई।।
दिन ढेरे शिव लीन्ह समाधी। बैठि रखावइ शक्ती आधी।।
सृष्टि व्यवस्था भै अनदेखी। बाढ़ा अधम असुर बल शेखी।।
शिव समाधि नहि मातु जगाई। सुनि सुनि लोक व्यथा अकुलाई।।
जेस मेंहदी रस परसइ लाली। तेस शिव देखत लोक बेहाली।।
हाहाकारा अत्याचारा। भूतल असुर बली कुविचारा।।
शिव ध्यानी इच्छा अनुदानी। प्रगटे राम हरन नादानी।।
हरन असुरता दोष विध्वंसा। चारिउ भ्रात सहित सुर अंशा।।

ताही समय महेश की, भै समाधि का अन्त।
मुख ते निकला शब्द यह, जयति राम ऋषि सन्त।।21।।
चरण शिवा तुरतइ गिरी, चरणे माथ लगाइ।
भाव विनीते जोरि कर, सेवा चाह दिखाइ।।22।।

जेहि विधि भाखु शिवा मुख बानी। सुनहु सभा कहि सूत बखानी।।

करिय विविध विधि पति पद सेवा। अन्तर भाव राखि सम देवा।।
पति प्रसन्न बूझिय सबु ढंगे। प्रीताचार लोक प्रसंगे।।
वाम समीप भवानी राजिय। पुष्प हार लै शिव तन साजिय।।
हेतु बतावन चिर भ्रम शूला। जासेउ बनै सुखी भवकूला।।
श्रद्धा रूपिणी शिवा भवानी। जग जननी जगती हित जानी।।
परम सयानी पति हित खानी। बोली जोरि हाथ मृदु बानी।।
प्रभु बड़ ध्यानी भव सुखदानी। तुम्हरिन आश बसै जग प्रानी।।
जयति जयति जय दीन दयाला। भव भय हारी जन प्रति पाला।।
यदपि धाम हिम अति मन भावन। बड़ पुनीत लग परम सुहावन।।
वट बिशाल सुन्दर सब काला। ता तर ध्यान जाइ नहि टाला।।
त्रिविध समीर सुशीतल छाया। आपुहि देइ योग भरि काया।।
थल प्रभुताई जाइ न भाखी। निशि दिन साथ विलोकहुं आंखी।।
कुंद इन्दु प्रभु गौर शरीरा। भुज प्रलंब परिधन मुनि चीरा।।
तरुन अरुन अम्बुज सम चरना। नख दुति भगत हृदय तम हरना।।
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी। आनन शरद चन्द छबि हारी।।

जटा मुकुट सुर सरित शिर, लोचन नलिन विशाल।
नीलकंठ लावन्य निधि, सोह बाल बिधु भाल।।23।।

विश्व हितारथ चिन्तक योगी। ध्यान समाधि आपु रस भोगी।।
देह नुकूले धाम बयारी। पाइ को ध्यान समाधी टारी।।
भले नाथ मन ध्यान समाधी। रहत लोक हित नाशक व्याधी।।
पर भव बसत जितै अपराधी। पाइ सून गदहा हर नाधी।।
बाढ़इ लोक व्यथा असुराई। जौ चलि मही देखि न जाई।।
जथा प्रशासन भूपति हीना। सो गति दीखहुं नाथ अगीना।।
बल बिनु देह नदी बिनु वारी। राज सेन बिनु मंत्रि अनारी।।
भय बिनु नारि पुरुष बिनु बन्धन। गुरु बिनु ज्ञान भगति बिनु चन्दन।।
निशि बिनु चन्द बाल बिनु माता। बिना यज्ञ जप व्यथित विधाता।।
रहु सब खोवा विफल बिलूना। वैसे नाथ तुंहै बिनु सूना।।
जेस विधि विष्णु परस्पर झगरे। बिना ज्योति लिंग ना पथ पकरे।।
कहउं नाथ का हाल जगत की। कुपथ प्रीति दिखु साधु भगत की।।
आडम्बर ऊपर पीताम्बर। पहिन चलै कहि मुख शिवशंकर।।
अन्तर सोह कुभाव कुनीती। सन्तन वेश चाल अनरीती।।
बनि व्यसनी मति सुल्फाबाजी। कथहिं शिवा शिव रह अस राजी।।
आपु न चीन्हइ पर उपदेशा। देत फिरहिं जग धर्म सन्देशा।।
देव संस्कृति विकृति करहीं। बनि पाखण्डी लोक विचरहीं।।

भगवन भक्ति देहिं बदनामी। जग परतीत न करु गनि कामी।।
कथनी करनी देखिय अन्तर। आउ न मन मानन्ह ता मंतर।।

धर्म भक्ति वैराग्य गति, धरती कथ अनुसार।
समय पूर्व उपजइ जरा, जौ न शिवम आचार।।24।।

धन बल जन बल बुद्धि अपारे। बिनु सदचार न कोउ हितकारे।।
धर्म आस्था भूलइ मानव। साधै प्रीति पतन पथ दानव।।
निज बल बुधि धन दुरुपयोगे। तजि विधि वेद अवेद प्रयोगे।।
भूलै भजन मगन नादानी। सुख सुविधा देखिय विज्ञानी।।
जीवन रीति नीति जेस चाही। ता न करइ करु आतम दाही।।
करै नीचता त्यागि वरीशा। जाइ तिमे अपुनव पुनि पीसा।।
रांचइ कलयुग दइ ता भोजन। मानइ नाहि किहेउ अनुरोधन।।
बाढ़इ कलह कपट दुरचारा। पाप अनीति पतन व्यवहारा।।
तिते देव मुनि बनहिं अधीरा। नित नित कलिक असुर बल पीरा।।
देन आन दुख हित करि आपन। रह इहि नीति बूड़ जन माथन।।
यदपि न प्रभु तुम ते अनजाना। कहउं न हम अस नाहि विधाना।।
तुम सब जानत अन्तरयामी। इन दिन जौन लोक भय खामी।।
द्वेष ईर्ष्या दोष समाजा। बाढ़े बिगरु आत्मिक काजा।।
आपन परिष्कार दुसवारा। तब को करु जग आन सुधारा।।
बिखरन भाव पियारू मानव। सो करनी जेहि ते बढ़ु दानव।।
पूत पिता झगरइ पति नारी। रहइ न संयम उभरु बिमारी।।
पूत बहू भल रहै न घर मा। रोवहिं नारि बिलोकि अधरमा।।
मानव मांस पकाइ रसोई। निज गरिमा बल अस्तित्व खोई।।
सन्त मनीष सनातन ग्रंथा। उपहासहिं जे चलहिं कुपंथा।।
फूकहिं नारि लगावहिं फांसी। रखहिं बटोरि अगुणता राशी।।
देहीं गारी विप्र पुनीता। करि कुचलन भल यज्ञपवीता।।
दीखहुं नाथ विविध उत्पाता। का हमरइ तुम्हार न नाता।।
तुम ध्यानी हम सुनि जन त्रासा। जाइ न सहि इहि हेतु बकासा।।
मन्दिर मूरति सहित पुजारी। बनि पाखण्डी पावहिं गारी।।
तुम समान को अन्तरजामी। तुम्हीं रूप तुम शक्ति समानी।।
तुहीं सकल घटना निरमारत। ढाकत तुमहीं तुहीं उघारत।।
आदि अनादि आत्मानन्दा। पुरुष पुरातन प्रलय चन्दा।।
देव दनुज बिच पड़ी दरारे। बिनु तुम्हरे को हन तकरारे।।
भूमि कुमार फिरहिं अकुलाई। विधि विष्णु हिम हार बताई।।
गहे कुभाव कुदृष्टि कुनीती। फिरहिं अघी कह सकु जग जीती।।

जौ न नाथ करु जग निगरानी। तौ उपजइ अस लोक कहानी।।

प्रेम न्याय सदभावना, सदाचार सिंगार।
सब एते रूठा चलहिं, करि वर्जित व्यवहार।।25।।
नेह घटत सृजन करन, बढ़त ध्वंस प्रीताइ।
नेह व्यथित बनहीं विशिख, देखिय कुल पतनाइ।।26।।

जिमि प्रभु बढ़हिं विश्व परिवारा। बांटिय धर्म करहिं तकरारा।।
बल बुधि नाहि चाह करि पैसे। बनिय विज्ञानी भाखिय ऐसे।।
जेहि न दीखु मानहुं तेहि कैसे। इहि मद टारु जाइ सो जैसे।।
जौ तुम बूड़त ध्यान समाधी। जाइ युगन्ह दिन बार एकाधी।।
समय प्रकृति मनुज मानवता। पुनि बिरांचु नव भटकन भवता।।
लेहु समाधि तो रखु दिन थोरे। जग रक्षण करु गनि मम कोरे।।
दासी जानि दया करु स्वामी। परु तन बदलन बाढ़े खामी।।
प्रभु जेस सूझ सहारा देहू। सो पथ चलन्ह उभारहु नेहू।।
केहि कारण केहि दोष गोसांई। इहि रहस्य जानन्ह ललचाई।।
गूढ़ तत्व इहि नाथ बतावा। पुंछिय जौन सो नाहि छिपावा।।
विश्वनाथ मम नाथ पुरारी। त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी।।
जग मंगल मन मंगल कारी। माथ शशी जट गंगा धारी।।
चर अरु अचर नाग नर देवा। सब करि प्रभु पद पकंज सेवा।।
करि निज वाणी ते कथनाई। सकउं जइस आतंक दुराई।।

प्रभु समरथ सर्वग्य तुम, सकल कला गुन धाम।
योग ज्ञान वैराग्य निधि, प्रनत कलपतरु नाम।।27।।

जौमम वचन समय अनुकूला। सुर नर होहिं व्यथित इहि शूला।।
तौ प्रभु मोर हरहु अग्याना। विधि बताइ कलि नाशक ज्ञाना।।
जेहि घर होहिं शिवम सुखराशी। तेहि घर शोकित रहु केस दासी।।
मोर भले न कहन्ह अधिकारा। का ना धर्म तु आपु विचारा।।
केहि जापत केहि ध्यान लगावत। केहि मानव जग ब्रह्म बनावत।।
असुराई केहि भांति भगावत। असुर बधत केस नवयुग लावत।।
जग द्विजत्व कैसे उपरावत। भूतल स्वर्ग विधा केहि छावत।।
आपु करत या आन करावत। जो बिगरा तेहि केसस बनावत।।
पूंछेउ जग तुम ते जो पावत। तेहि मानत भ्रम नाहि जनावत।।
बिनु प्रज्ञा जग जन्म गवांवत। तेहि केस पावत जग केस गावत।।
कथा रूप इहि नाथ बतावत। ब्रह्म मनुज तन चलि दिखरावत।।

हिम ते गंगाधार चलि, लय बनु सिन्धु स्वरूप।
कलिमल गंगा गोत हर, कह कथ ता अनुरूप।।28।।

शिव शिवा सम्वाद दृश्य

विश्व आत्मा जग कल्यानी। कीन्ही प्रश्न लोक हित जानी।।
कथा सुनावत शिव सुखदानी। सुनत मुदित मन शिवा भवानी।।
ब्रह्म विद्या ब्रह्म नर आकारा। करत काह विधि हित संसारा।।
साधि जाहि सुर नर मुनि सन्ता। लेहीं करि कलिमल दुःख अन्ता।।

विनय भाव श्रद्धा भरे, लोक हितारथ ढंग।
शक्ति शिवा के वचन सुनि, मुद भे धारी गंग।।29।।
बोले शिव प्राणेश्वरी, धन्य विचार तुम्हार।
प्रज्ञा राम के तंत्र का, तुम चाहति विस्तार।।30।।

बैठी शकति सुनन्ह हरखाई। गद गद हृदय भाव प्रीताई।।
लाग मने जेस अमित प्रसादा। कलिमल नाशी शंभु नुवादा।।
शिव समान को हरइ विषादा। तरु ते कामधेनु के ज्यादा।।
शक्ति समान दूज के श्रोता। हिम समान कहं ज्ञानक गोता।।
सभा दूज कहं सुर नर संगा। चलइ जहां ऋषि वचन प्रसंगा।।
बूझि शिवा कै बड़ अनुरागा। मुख महेश कथ निकरन लागा।।
भूल भ्रम हर मोह शोक के। उत्पत्ति रक्षक तीन लोक के।।
त्रिसुर समेत मनुज अवतारी। ऋषि मुनि सन्त गुरू महतारी।।
प्राण प्रज्ञा आचार विचारा। भांति बनै जेस भव विस्तारा।।
सो मति नीताचार बांटहीं। सुनि गहि मानव विपति काटहीं।।
कह महेश सुनु शिवा भवानी। पति गुरु ऋषि मुनि जन कल्यानी।।
सिरजि ज्ञान जोऊ उर धरहीं। पाइअ पात्र देन नहि टरहीं।।
देहीं गोपन तलक उघारी। अवसर पाइ चाह अनुहारी।।
रह जोउ लोक हितारथ घटना। करि ता कथन आन या अपना।।
देहिं सुधा रस भांति उड़ेली। गढ़िय मनोहर शक्ति नवेली।।
करि भव पान परम सुख मानी। जीवन जानि ब्रह्म वरदानी।।
जग चर अचर विश्व ब्रह्म रूपा। होइ भले दृश्य अदृश्य रूपा।।
सुर नर असुर रूप सब ब्रह्म के। जित गुण अवगुण दीखु जगत के।।
सब तहं ब्रह्म बसै इक खानी। जिमि चन्दन तरु महक समानी।।
पर आचार विचार आहारे। अनुसारे ब्रह्म गात मझारे।।
माया मांहि भजहिं बहु ढंगा। जैसे घाट अनेकन गंगा।।
आपुहि नीच अनीच कहावै। ब्रह्म बल जेहि स्तर रखि पावै।।
सुनहु शिवा सुर नर हित हेता। सुनन्ह चहत तुम जौन कथेता।।
सोई ब्रह्म बनि नर आकारा। प्रगटा धरनि राम अवतारा।।
सुर नर तारन असुर संहारन। देवा चरन करन्ह विस्तारन।।
पुनि सोइ ब्रह्म पठाइअ प्रज्ञा। कलि मल हरन करै मति अज्ञा।।
असुर नाहि आसुरि वृत्ति हारी। नर तन धरि सुर वृत्ति उभारी।।
सोऊ राम रूप प्रज्ञेशा। लोक पसारइ ब्रह्म सन्देशा।।

जन मानस पावस करिय, देव रथे बैठाइ।
आन देइ भव स्वर्ग सुख, ऋषियुग दर्श कराइ।।31।।

राम अनन्त हरि कथा अनन्ता। करहिं गान ऋषि मुनि सुर सन्ता।।
राम समान पुरुष नहि आना। ब्रह्म रूप सो मोहि समाना।।
राम सचिच्दानन्द दिनेशा। ज्ञान सिन्धु प्रतिभा सबु देशा।।
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। देत प्रकाश ज्ञान विज्ञाना।।
आगम निगम पुरान बखाना। रोग शोक हर भय अभिमाना।।
भव भ्रम भटकन मति अग्याना। हारक विश्व विदित भगवाना।।
भगत उद्धारक तिमिर विनाशी। दीन्ह नीति बनु गृह सम काशी।।
समझहिं नहिं भ्रम वश अग्यानी। मूढ़ शठी कपटी अभिमानी।।
अगुनी कुविचारी पाखण्डी। नहि चीन्हइ लम्पटी उदण्डी।।
हरि माया वश बातुल भूता। राम परे रह कह अवधूता।।
जेहि मन व्यसन विषय मदपाना। राम भजब करु आज विहाना।।
राम कथा कलि कलुष विदारी।। संशय हारी परम पियारी।।
आदि अन्त तिन न कोउ पावा मति अनुसार सबै गुण गावा।।
सो प्रभु रूप चराचर स्वामी। नमत माथ कह अन्तरयामी।।
वन्दउं राम कोशलाधीशा। प्रज्ञा रूप जगत बुधि ईशा।
दोउ राम मन बसत हमारे। आपु ज्योति करि तिनहि सहारे।।
जिन हम माना तिन तू जाना। पर संग काह तोरे अग्याना।।
फिरहिं राम बन असुर संहारन। तबहुं पूंछु तू कलि भय जारन।।
बसहिं धरनि जेहि राम प्रज्ञेशा। व्यापु तहां नहि कोउ कलेशा।।
तुम जो ढूढु कलिक भय भंजन। दोऊ राम देहि सोउ चन्दन।।
अब नहि देर समय परिवर्तन। जौ बनु सीय संस्कृति दुख मन।।
राम प्रज्ञा बल बुद्धि प्रकाशक। रक्षक भगत भगति उदभासक।।
प्रज्ञा राम अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहि बरनी।।
अनगिन जनम मनुज अघ दहहीं। साधिय पंथ कथे उन चलहीं।।
भव वारिद गोपद सम तरहीं। प्रज्ञा राम भजन जे करहीं।।

राम कथा सुर धेनु सम, सब सेइअ सुख पाउ।
सत समाज सुर लोक लह, भागि कलिक दुख जाउ।।32।।

पाइ शक्ति सब होहिं सुखारी। जेहि लग शक्ति प्रिया मन हारी।।
सुख दुख जीवन भांती जननी। सकै आपु कलि अवगुन दहनी।।
सो विधि प्रज्ञा राम थमाइअ। जे थामा ते सुरता पाइअ।।
वेद शास्त्र जित धर्म पुराना। प्रभुता प्रज्ञा सबै बखाना।।
आपुहि मनुज बनै निज त्राता। युग बदलइ कह प्रज्ञा विधाता।।
एक राम दल असुर निपाती। दूज राम आसुरि वृत्ति घाती।।
कह प्रद अनुचित दैहिक पापा। मोह अथाहे मिलु सन्तापा।।

व्यापु जबै कलिकाल प्रचण्डा। भजिय राम भांजइ ब्रह्म दण्डा।।
राम प्रज्ञा जे नीति संभारी। राज भले बनु घर सुख चारी।।
मंगल भवन अमंगल हारी। पावहिं देव कृपा नर नारी।।
राम राम कहि करत प्रनामा। विनवत शंभु विलोकिय वामा।।
धन्य शिवा तू शक्ति हमारी। तुम समान को जग उपकारी।।
जौ पूंछिउ कलि हरन प्रसंगा। उभरइ अवसि ज्ञान कथ गंगा।।
तुम जग जननि जगत अनुरागी। चहति बनावन लोक सुभागी।।
रहा प्रश्न नहि जानन्ह तांई। भवहित आनन्द बात उठाई।।

दुर्लभ कृपा राम बिनु, पावन्ह प्रज्ञा प्रान।
प्रज्ञा रूप ते ब्रह्म भव, करत सकल निर्मान।।33।।
पावन प्रज्ञा जासु तन, सोई देव स्वरूप।
ता वच आभा लोक महं, जैसे दिनकर धूप।।34।।

प्रज्ञा ब्रह्म धन ब्रह्म समाना। निराकार साकार खजाना।।
विद्या रूप करै ता पोषण। जप तप ध्यान ज्योति ता जोषण।।
विद्या वेद विधाता दीन्ही। तापर चलन्ह वचन हम कीन्ही।।
वेद विधान देइ सदचारा। संग अस्तेय सत्य उपकारा।।
करि जन इत बनु राम समाना। विरचि भाग्य करु युग निर्माना।।
कलिमल नाशै सत उपराजै। घर अपने चलि राज समाजै।।
साधि सतो आहार विचारा। रचइ देह निज ब्रह्म प्रकारा।।
ब्रह्म बीज ऋषि यज्ञे करनी। बनहिं राम औरहु इहि धरनी।।
जहां राम तहं रह सुरताई। जंह सुरता तहं जन सुखदाई।।
राम विचार फिरइ जेहि ठौरे। तहं सतयुग रह न कलि दौरे।।
प्रभुता राम विधाता खानी। हारक भ्रम मुख शंकर बानी।।
सुनिय शिवा संशय गे सगरे। तर्क दुराइअ बोली अखरे।।
नाथ राम पद प्रीति अपारा। मिलु परतीत कलिक मल हारा।।
बाढु मोद मन पाइ प्रसादा। मो सम भागइ विश्व विषादा।।
मोहिं समुझाइ कहउ वृषकेतू। नर तन ब्रह्म विपिन केहि हेतू।।
यदपि नाहि संशय कछु मोरे। विनवहु नाथ दोऊ कर जोरे।।
सकै जौ बनि चलि दरस करावा। दरसे रहइ न छोह अभावा।।
भल अवसर प्रभु आइ नेराने। हेतू दरस मनहुं ललचाने।।
योनि गात आराधन देवा। अवलोके केहि चाह न सेवा।।
नाथ इष्ट जे होइ तुम्हारू। नहि तुम ते कम नात हमारू।।
अवसि देखबइ देखन योगा। आनि रचिन्ह विधना संयोगा।।
इष्ट मित्र जे सगा सनेही। मिले बांटि सुख दुख जग लेहीं।।

तुम जो प्रिया कही मन भावत। देखि दिखाइ चला फिरि आवत।।

मनानन्द अनुभूति के, प्रेम भाव के स्वाद।
चाह जौन प्रिया मने, सो शिव कीन नुवाद।।35।।
वही समय रह बन मझे, रावण सीय चुराइ।
विकल फिरत रह राम बन, प्रभुता नाहि दिखाइ।।36।।
शिवा चाह सुनि मुदित भे, वृष वाहन असवार।
शक्ति प्रशंसा शंभु करि, कीन्ह वचन स्वीकार।।37।।
मन सोचे चलि दर्श करि, चिर विषपन करि जूड़।
पुरवन्ह मनसा शक्ति कै, जाब कथा रस बूड़।।38।।

धन्य धन्य कहि शंभु बखाना। प्रीति तुम्हार ढेर हम जाना।।
यदपि विकल विपिने असुरारी। फिरु लीला वश मनुज नुहारी।।
बनिय योजना दरसन रूपा। पर शक्ती मन परख स्वरूपा।।
उचित न मिलब लगत इहि ढंगे। भाव न जौ तिन समय प्रसंगे।।
बिना गये नाही भल लागे। बिनु देखे न बढ़हि अनुरागे।।
को करि तर्क करै विधि नाना। इष्ट दास सब विधि भल माना।।
आगे चले विश्व त्रिपुरारी। पाछे शक्ति शिवा महतारी।।
जेहि वन विकल फिरत रघुरामा। ढूढ़त सीय न शोक विरामा।।
तिन दूरिन्ह ते शंभु प्रनामेउ। कर जोरे शिर ऊपर थामेउ।।
शिव समान रघुपति शिर नावा। चीन्हा जाना मर्म छिपावा।।
संग शकति पल ठाढ़ि निहारी। गति विलोकि विस्मय भा भारी।।
भले प्रनाम करिय शिव भांती। पर परतीत न आवत आंती।।
बेश भाव माया भ्रम विकलन। कारण शिवा पाउ नहि अंकलन।।
बूझि महेश्वर कीन इशारा। कह का चलु भा काम तुम्हारा।।
बैन श्रद्धामय शकति निकारी। नाथ मनोभ्रम आवत भारी।।
मानहुं भले करत नर लीला। तिन दुख देखि सबै मन हीला।।
केहि करनी केहि कर्म अगुन करि। इहि दुख पाउ ब्रह्म नर तन धरि।।
तो तुम नाथ कहत बल माया। का अहि आइ बसिय मम काया।।
सुनहु नाथ जे करि पद दरसन। होहीं पार शास्त्र करि वरनन।।
होहीं छार भमत अपराधा। उपजइ ज्ञान भगइ सब बाधा।।
सो पति मोर उपजु भ्रम कैसे। जात न काह सोच बड़ ऐसे।।
इहि संशय प्रभु बेगि निवारा। देखेहुं नयन राम अवतारा।।
कह शिव ताते अभल सगाई। जेहि मन नाहि राम प्रीताई।।
कहं सो तिय गुण तीय समाना। पति जेहि मांनु न तिय तेहि माना।।
बिनु सन्देह भूल भ्रम जारे। मानब नाहि तीय अनुहारे।।

पंथ चलत शंकर शिवा, कहि शिव कथा अनेक।
माया भ्रमित शक्ति मन, रांचिय प्रज्ञा विवेक।।39।।
भ्रमित प्रज्ञा पाइ सोउ, सहजे उतरत पार।
कथन सोइ शंकर करत, आवत चलि हिम वार।।40।।

कह शिव सुनहु बने बल माया। नाही राम दोष कछु काया।।
जे इहि विचरु लेहि तेहि घेरी। दीन्ह जथा तुम्हरो मति फेरी।।
इहि कारण सन्देह तुम्हारे। बन बिछुड़े अब जाहि अगारे।।
करि जे माया प्रीति घनेरा। भले बनै कछु बिगरइ ढेरा।।
माया मृग बनेव मारीचा। प्राण गवांइअ बीच बगीचा।।
माया वेश यती बनि रावन। न करु शक करि वंश नशावन।।
धरिय सीय जौ माया रूपा। गई हाथ फंसि निश्चर भूपा।।
माया पति माया मृग पाछे। चलिय नयन आंसू जल कांछे।।
यदपि राम सृजक मर्यादा। पर न करि मृग वधन उवादा।।
परम तपस्वी नीति यथारथ। माया वस्य भुलेउ परमारथ।।
नर शरीर धरि देइ पर पीरा। कर्म प्रधान बनाउ अधीरा।।
मारे मृग कारन बनु ऐसा। तुम जेस चहत दीखु न वैसा।।
समय परिस्थिति भय दुःख कारन। काह न परु माया भ्रम धारन।।
लक्ष्मण रेख परम मायावी। रक्षण हेतु अचूक प्रभावी।।
जिते हारु मन मोह सो माया। माया मंह मन सकत समाया।।
कह शिव माया विविध प्रसंगा। सुनहीं शिवा फंसी तेहि ढंगा।।
अन्तरयामी शिव अखिलेश्वर। पहुंचे हिम कैलाश पतीश्वर।।
बूझि शिवा मन अन्तर भाऊ। हेतु कथा शिव रचिय उपाऊ।।
शंकर ज्ञान कथा अदभूता। सुनन्ह सभा बनु बोले सूता।।
खग मृग नर मुनि सुर चलि आये। नाग किनर गन्धर्व तकाये।।
नीर नदी हिम विटप बयारी। रवि शशि ग्रह जुटे तेहि ठारी।।
जे सुनु श्रवन धाइ ते आवा। सुनन्ह मुखे शिव प्रियता लावा।।
सभा नुकूल शिवा मन चाहे। कह शिव कथा जौन कलि दाहे।।
जेहि विधि जाइ शिवा मन भ्रमा। उपजइ लोक सतोवृत्ति कर्मा।।
रामाचार उभारिय प्रीती। सोई कथन रही शिव नीती।।
भीड़ विलोकि शंभु हरखाने। सबै लाउ चित हेतु ओनाने।।
वामासन तब सोह भवानी। रहा मोद मन श्रोता खानी।।
लागे अमर कथा शिव भाखन। धामे हिम कैलाश निवासन।।

परथम प्रलय सृष्टि कै, तीन देव निर्माण।
गगन चराचर जीव कै, बरनिय जीवन प्राण।।41।।

पुनि सरेख मानव धरनि, रहन श्रेष्ठता हेत।
माया जीवन चरित गति, गाइअ कृपानिकेत।।42।।
ब्रह्म माया विद्या सबल, जाके प्रज्ञा समाइ।
भगति देखि भगवान तेहि, आपन लेहिं बनाइ।।43।।

सुनहु शिवानी कह शिव बानी। जब बिकसी सृष्टी बहु खानी।।
करन्ह लागि जन प्रज्ञा नादानी। बनि उपजइ बड़ अवगुन सानी।।
देहिं मातु सुत विपिन निकारी। पावहिं तुम सम भ्रम जग नारी।।
सती साध्वी जाइं चुराई। सुरता नाहि बढ़ै असुराई।।
लाइ ध्यान दीखहुं चहुं ओरी। मिलु उत्पात असह्य सब खोरी।।
उपजा भाव करन्ह कलि ध्वंसा। तौ हम करि प्रेरित तुम मनसा।।
उपजेव भरम प्रश्न बनि कारन। भाखन्ह चहत कथा जग तारन।।
थूले सूक्षम गहि विधि दोऊ। जगती ज्ञान सिखाउब वोऊ।।
नाहि कथन करनी तक लाउब। विधि आगे का करब बताउब।।
जेहि विधि लोक मनुज हित होई। चाहत प्रिया करन्ह इह गोई।।
एक पंथ दुइ काज संभारब। राम मदद मानव हित ढारब।।
जौ न दियब युग विधि रचनाई। आगु न सुरता भव रहि जाई।।
इते प्रिया भा बड़ अनिवारा। राम काज करुं युग निरमारा।।
करनी कथनी संग लिवाई। भूल भ्रम भटकन दुरियाई।।
लोक पसारहुं जन मर्यादा। जेहि ते सबै धर्म करु यादा।।
वाहन धर्म हमार तुम्हारा। देवी देव हेतु रखवारा।।
संस्कार सहमति कुल सेवा। संग जासु जीवन ता देवा।।
मर्यादित जीवन सुख चारी। सेवाश्रम सन्तति भल नारी।।
जौन शास्त्र उपनिषद नुवादा। सोई जन जीवन मर्यादा।।
करनी शास्त्र उलंघन जोई। इहि सम भव बन्धन न कोई।।
कथा कथब साधब सो करनी। मानव हिताचार जो धरनी।।
परु संग साधन रखु मन एही। जौ जग जननी जगत सनेही।।

मुसकानी मनहीं शिवा, भाव लाइ स्वीकार।
हर्षित मन करहीं कथन, जगत वन्द्य त्रिपुरार।।44।।
आत्म देव परमात्म सम, जीव स्वरूप हमार।
राम चरित तन साध जो, शक्ति तासु रखवार।।45।।
दुःख दुरूह दुर्मति दहन, गंगा जल सदबोध।
ता जीवन भव धन्य बनु, दिव्य परख अविरोध।।46।।

ईश्वर अशं जीव अविनाशी। स्वर बिरले जीवन सुख काशी।।
उछरि चोट करु बनि गतिशीला। जीव रुप जो डोला हीला।।

साधु सन्त कहि अनहद नादा। जौन शून्य तेहि प्रबल नुवादा।।
अन्तर ज्योति शक्ति सम नारी। कह गायत्री जन संसारी।।
आदि अन्त ता नाहि जनावत। त्रय सुर बनि त्रय लोक चलावत।।
देह तीन पन आत्म बिठा के। माया फन्दा मन भरमा के।।
ओंकार मुख दिव्य सुनादा। स्वर संगीत अमिय रस स्वादा।।
सृष्टि बीज जीवन ब्रह्म धारी। शक्ती स्रोत ध्यान विधि सारी।।
अक्षर ब्रह्म ओउम् ता रूपा। विधि विद्या सो अन्तर धूपा।।
उत्पत्ति ओउम होत लय ओमे। आतम ज्योति शक्ति सबु वोमे।।
सुनहु शिवा जब लेहुं समाधी। महामंत्र बल ओउम कै साधी।।
तिते तीन पुर करि संरक्षण। विष अनव्यापु भले करि भक्षण।।
लोक दोष दुख कलिमल हारी। सम नाही भाखिय त्रिपुरारी।।
लोके वेद विधाता रूपा। दाता विधि विद्या सुख भूपा।।
ताते पोषइ जे निज गाता। लह विष्णु बल शुचिता त्राता।।
सदबुधि साधन महामंत्र का। अपनाये मिलु शक्ति शिवम का।।
बिना बुद्धि को जन भवतरहीं। संग सतकर्म सुपंथ न धरहीं।।
तासु बुद्धि भव बनहिं सयानी। जे पूजहिं नित पद कल्यानी।।
बल बुधि धन त्रय देव समाना। प्रेम न्याय पोषइ ईमाना।।

जन्म मात पितु होत कोउ, जीवन का सदचार।
होत जीविका मात पितु, कर्म ज्ञान धन दार।।47।।
अनुचित आलस अगुण सुख, लै करि समय विध्वंस।
जुरा साथ पाखण्ड रहु, तौ बनु पामर वंश।।48।।

ज्ञान कर्म जीवन आचारा। इत जीवन निर्णायक धारा।।
बढ़े अनियमितता अवगूना। होहीं मनुज साधना सूना।।
माया बाधा वातावरना। प्रेरक वचन शकति अवतरना।।
जीवन बदलन साधन एही। वैदिक नीति अध्यातम के ही।।
जे न आन हित मन मति राखे। जग को देव रूप तेहि भाखे।।
शुचिता समता बिना मधुरता। होहिं न सुरता अन्तर थिरता।।
संयम प्रेम प्यार सहकारा। बिना को कलिमल अवगुण जारा।।
बिनु बदले दृष्टी पथ गाता। नहि टूटइ माया भ्रम नाता।।
बनि मानव मर्याद विहीना। होइ शान्ति सुख सदगुन हीना।।
धर्म चार जीवन उपचारा। करत त्रिदेव नुकूल प्रकारा।।
ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म ध्यान स्वरूपा। सोइ गायत्री ज्योती रूपा।।
पेट अहार विहार नुसारन। विधि विधान लोहू संचारन।।
संगति ज्ञान माथ आहारा। पाइ विराचइ बुद्धि प्रकारा।।

रिपु अनदेख भांति शैताना। बसहिं मने देहीं दुख नाना।।
हेतू जीवन जित उपचारा। वेश भाव मन मंत्र विचारा।।
सतसंगे सात्विक आहारे। साधि मनुज करु युग निरमारे।।
जांनु जे जौन सो सकत बताई। खाइ जौन जानइ सब तांई।।
देह समय धन अपव्यय करई। सो जन जियत नरक पुर परई।
ब्रह्मा विष्णू भूमि कुमारा। आदि आदि सुर रूप हजारा।।
शिवम भाव बिनु बनै न आपन। कीन्ह शिवा ते शंकर भाखन।।
कह शिव चिन्ता मोहि न आपन। होइ न जब लौं अनघ निपातन।।
भ्रम भटकन युग रांचन तांई। बांटहु विधि करि विविध उपाई।।
करन्ह कथन भावइ सो गाथा। जेहि विधि होइ मनुज भल माथा।।
इहि कारन ऋषि सन्त समाना। रहउं पसारि राम गुन ज्ञाना।।

त्रय गुण विद्या शक्ति लै, तीन देव अनुरूप।
मनुज गात जैसे बसहिं, कह शिव सुनु सबु चूप।।49।।

ब्रह्मा शक्ति देह ब्रह्मानी। यंत्र शरीर रूप उथलानी।।
कफ कटि कर्म प्रात पन बचपन। वर्तमान निर्माण आत्म धन।।
वर्षा तारा पति सम काजा। विद्या उत्पत्ति व्यक्ति सुराजा।।
ब्रह्मचर्य आहार स्वरूपा। सहकारिता रूप ब्रह्म रूपा।।
शक्ति वैष्णवी विष्णु रूपा। सूर्य शीत गुण रूप अरूपा।।
साथ साधना बल गृहस्थ के। पित्त परिवार सुरक्षा रथ के।।
सेवा भावी प्रेम बिहारन। भौतिक सन्तति लोक सुधारन।।
कर्म सुकर्म युवा बल दुपहर। आत्म विकास देह विष्णु वर।।
समता शशि गर्मी रुद्रानी। वाणी बुद्धि संगठन सानी।।
संयम न्याय विचार संहारन। नारी कृत्य वृद्धता चारन।।
वात रूप सामाजिक सेवा। विश्वाराधन धर्म चरेवा।।
वानप्रस्थ गुण दैविक शक्ती। जीवन प्रीति संग शिव भक्ती।।
इहि विधि बसहिं त्रिदेव शरीरे। निज निज गुण नाशहिं तन पीरे।।
अंग अंग दैहिक प्रभुताई। सुनहु शिवा जेहि भांति सुहाई।।
शिर शिव रूप चक्षु तन दिनकर। निशा नाथ प्रभुता मस्तक पर।।
उदर शक्तिनी विष्णु वक्षेउ। ब्रह्मा निवसहिं कमर प्रदेशेउ।।
बुद्धि वेद गनु त्वचा आकाशे। गुण लै परसइ सप्त प्रकाशे।।
हाथ स्वरूप जांनु विश्वकर्मा। महि सम पांव धर्म सब कर्मा।।
भोजन भगति भाव भव भीरा। देहिं आपु पीरा हर पीरा।।

बिनु प्रज्ञा पावन किहे, बिना वेद अनुकूल।
मिले नाहि दैवी शकति, उपजइ नाना शूल।।50।।

काम क्रोध मद लोभ तन, जौ उफनै अफनाइ।
देहिं शूल अन्तर हृदय, बुधि राखै बिलवाइ।।51।।

माया वश्य जीव अभिमानी। ईश वश्य माया गुण खानी।।
पर वश जीव स्ववश भगवन्ता। जीव अनेक एक श्रीकन्ता।।
ज्ञान विवेक विरति विज्ञाना। मुनि दुर्लभ गति जो जग जाना।।
परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा। पर निन्दा करहीं बल भ्रंशा।।
हरि गुरु निन्दक दादुर होई। जन्म सहस्त्र पाउ तन सोई।।
सुर श्रुति निन्दक जे अभिमानी। रौरव नरक पाउ ते प्रानी।।
होहिं उलूक सन्त निन्दा रत। मोह निशा प्रिय ज्ञान भानु गत।।
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर बनि अवतरहीं।।
मोह सकल व्याधिन्ह कै मूला।। तेहि ते पुनि उपजइ बहु शूला।।
हेतू जाहि उपजु मन माया।। निज अनुसार बियापइ काया।।
काम वात कफ लोभ अपारा।। क्रोध पित्त मन छाती जारा।।
प्रीति करहिं जौ तीनहु भाई। सन्निपात विकृति तन तांई।।
विषम मनोरथ दुर्गम माना। ते सब शूल नाम को जाना।।
ममता द्रदु कण्डु इरषाई। हर्ष विषाद गहर बहु तांई।।
परसुख देखि जरइ सो छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलाई।।
अहंकार बड़ दुखद डहरूआ। दम्भ कपट मद मान नहरुआ।।
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी। त्रिविध ईषणा तरुण तिजारी।।
युग विधि ज्वर मत्सर अविवेका। कहं लग कहउं कुरोग अनेका।।
कृत्य कोउ दैहिक विपरीता। बनहीं दृश्य अदृश्य अमीता।।
इहि विधि सकल जीव जग रोगी। शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी।।
सुपथ सुनीते संग विवेके। पावहिं सुरता मनुज प्रत्येके।।
सौरज धीर जाहि रथ जाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल विवेक दम परहित घोरे। क्षमा दया समता रजु जोरे।।
ईश भजन सारथी सुजाना। विरति चर्म सन्तोष कृपाना।।
दान परसु बुधि शक्ति प्रचण्डा। वर विज्ञाना कठिन को दण्डा।।
संयम नियम सिलीमुख नाना। अमल अचल मन त्रोण समाना।।
कवच अभेद विप्र पद पूजा। यहि सम विजय उपाय न दूजा।।
महामंत्र सुख वातावरना। भव शिव धाम जाइ सो वरना।।
प्रिया धर्ममय अस रथ जाके। लेहिं विजय भ्रम आउ न ताके।।
वेद शास्त्र सन्तन सुर बानी। सुनिय अमांनु तो सो खल खानी।।

जाके अस रथ होइ दृढ़, सोई राम सम बीर
महा अजय संसार रिपु, सुनहु शिवा मति धीर।।।52।।

यज्ञ कृत्य पाये पतन, सो सुरता सुख ह्रास।
अशुभ कर्म बाढ़े भवन, खल गण करै विकास।।53।।
बिनु विद्या मानव उथन, बिना संस्कृति नारि।
बिना धर्म कौनव युगे, सुर न सके खल जारि।।54।।

विश्व आतमा ईश्वर अंशा। उपजइ भले देश कोउ वंशा।।
पर जित भगति भाव सदचारा। मिलु ईश्वरता तेहि प्रकारा।।
उत्पत्ति रक्षण कृत संहारन। विधि तीनउ जीवन तन तारन।।
ईश्वर दोष एक नहि लेहीं। कर्म नुसार जगत फल देहीं।।
जीवन साधन दैविक कर्मा। सम भल ज्ञान विज्ञान न धर्मा।।
सुनहु शिवा तेहि सम सन्तानू। मानहुं जानिय राम समानू।।
मानव गात शीश ओंकारा। मांनु पिण्ड महमंत्र नुहारा।।
भाव भावना अन्तर जोई। महामृत्युंजय सम गनु वोई।।
मंतर अक्षर जामे पांचू। सोई पंचकोष भल ढांचू।।
स्वाहा स्वधा अगिन अनुरूपा। भव चिन्तामणि कर्म स्वरूपा।।
ध्यान साधना लगन विचारे। श्रद्धा पूजा युग निरमारे।।
प्रेम साधना जीवन खेती। कर्म काण्ड सुख हेतु अगेती।।
गुण गनु हेतु जीविका वरना। तन आधार दिखाऊं चरना।।
धर्म काण्ड बिनु दुर्लभ धीरा। सोह लोक अस मनुज शरीरा।।
मनुज देह महिमा प्रभुताई। चाह जे जेस तेस लेइ बनाई।।

गायत्री अन्तर ज्योति, दिनकर लोक प्रकाश।
सूक्ष्म एक इक थूल विधि, करहीं प्रज्ञा विकास।।55।।

गायत्री गौ गंगा गीता। सद्गुण देहिं सजीवन मीता।।
प्रज्ञा मण्डल जीव देह के। जागृति करहीं शक्ति ठेल के।।
देव दिवाकर सम नहि आना। भ्रम भटकन हर मति अज्ञाना।।
कोक कोकनद लोक प्रकाशी। तेज प्रताप रूप रस रासी।।
हिम तम करि केहरि करमाली। दहन दोष दुख दुरति रुजाली।।
सप्त अश्वरथ गगन विहारी। ज्योति अनन्ता प्रभा तुम्हारी।।
सारथि पंगु दिव्य रथगामी। हम हरि विधि मूरति जग स्वामी।।
सचराचर आतम रवि देवा। ज्योति पठाइ करहिं जग सेवा।।
कल्प वृक्ष भानू किरनाई। नयन ज्योति भरु शुचि रक्ताई।।
स्वारथ्य प्रदाता प्राण विधाता। सहज सरल नाशक भय त्राता।।
दर्शन लाभ आप भवतारी। करि पूजन बनु सुर अनुहारी।।
माया मोह भूल भ्रम हारी। बांझे शक्ति देहि महतारी।।
दिव्य होहिं जेहि कुष्ठ निहारी। मन अभिलाषा पूरण कारी।।

जय सूरज जय भुवन विभाकर। जय पूषा जय प्रखर प्रभाकर।।
जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत चित आनन्द भूमा जय जय।।
जय रवि अखिल आत्मन् जय जय। विश्व रूप उत्पति रक्षक लय।।
सुनहु शिवा सूरज दिन देवा। मानहुं भव मंगल महदेवा।।

धारण आदित्य ज्योतिकरि, नित विनवहिं करि जोरि।
विश्व देव कृपा लहहिं, भले बसै कोउ खोरि।।56।।

आदि देव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेत पद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णु महेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
वृंहितं तेजः पुंजं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्व लोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
बन्धूकपुष्पसंकाशं हार कुण्डलभूषितम्।
एक चक्र धरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
तं सूर्यं जग कर्तारं महातेजः प्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।

भानु विनय जग हेतु हित, विनवत कह त्रिपुरारि।
सहित शिवाकर जोरि पुनि, दीन्हेउ अर्ध्य निहारि।।57।।

आदि देव आदित्य दिवाकर। विष्णु विभाकर भानु भास्कर।।
ज्योतिर्मय विभु शंखचक्र धर। रत्नहार केयूर मुकुटधर।।
लोक चक्षु मंगल विग्रह वर। सविता जग जीवन पालन कर।।
पाप ताप हर भव मंगल कर। मार्तण्ड दुःख दरिद कष्ट हर।।
महातेज लोकेश तमिसहर । तपन अनादी महारोग क्षर।।
रवि नारायण सर्व सुखाकर। मुदित मनोहर दान दया घर।।
सोह विश्व तर तुम नभ अम्बर। पुरवहु मनसा मांगहु कुल घर।।
विश्व व्यथा कलि दोष करत क्षर। शक्तिमान को बिनु तुम्हरे वर।।
विधि विद्यावर ज्योति किरन कर। अब चाहत मांगत सचराचर।।
युग बदलन्ह जग चाह प्रखर कर। कथन महेश प्रज्ञेश रूप धर।।

कर्म योग उपदेश प्रथम कर। जगत ज्योति सविता मण्डल वर।।
योगी भोगी सब तन हित कर। ध्यान ज्ञान कल्याण जगन कर।।
पंच तत्व पंचाग्नि पंच स्वर। दूरि भले फल देत निकट कर।।
तंत्र मंत्र सब यंत्र सिद्धि कर। हेतु मनुज विज्ञानी बुधि धर।।
भूर्भुवः स्वः ऊँ रूप धर। महः जनः तप सत्यम बल फर।।
वेद देव त्रय तीन लोक कर। शक्ती गायत्री त्रय अक्षर।।

ब्रह्म बेला जागब नियमितता। उचित व्यवस्था ब्रह्मचर्य ता।।
जागरूकता मय संयमता। चलु रवि रूपे अनूकूलता।।
सुनहु शिवा माया भ्रम भटकन। आपु दुराइ बनइ पूरक मन।।

सावित्री का त्रिकाल ध्यान

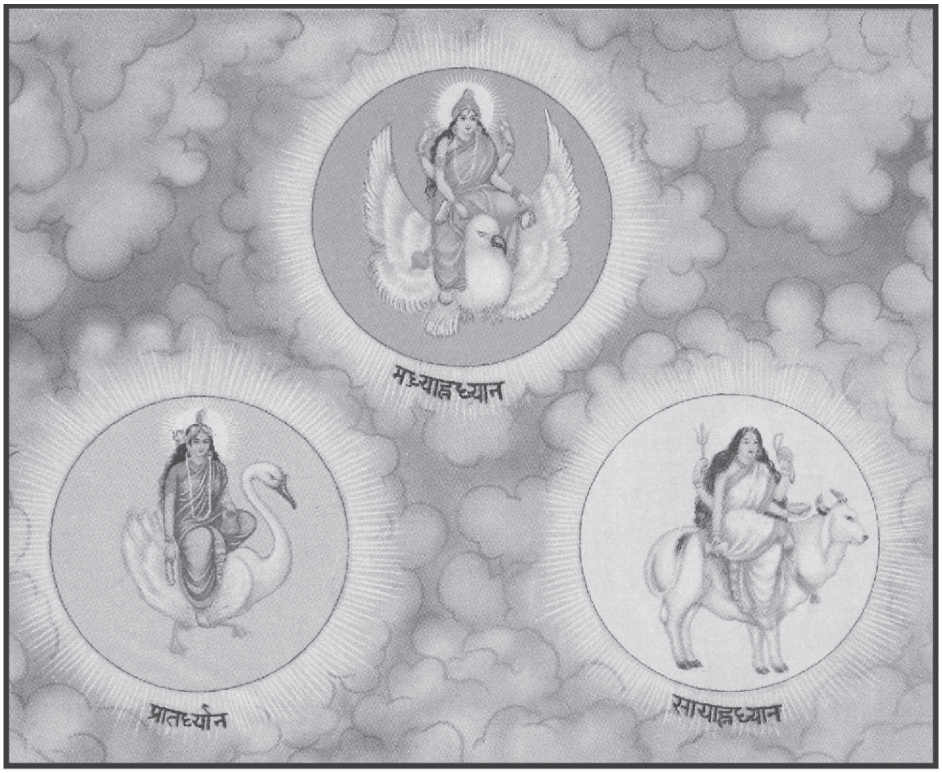

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायळयास्तु परं नास्ति देवि चेह न पावनम्।।

हंसारूढ़ सोह रविमण्डल। वेद कमल रुद्राक्ष कमण्डल।।
भूषित वदन रक्त मणि धारी। आयु किशोरी प्रात संवारी।।
गरुड़ वाहिनी तेज अनन्ता। बल वागेश्वरि रंग कृष्णवन्ता।।
शंख चक्र वीणा ज्ञानागर। मण्डल मध्ये शक्ति प्रभाकर।।
शिवा स्वरूपा वृषे वाहिनी। रुद्राक्षी त्रिशूल धारिनी।।
प्रिय श्वेताभी शक्ति मातृ बल। सन्ध्या रूपा बसु अन्तस्थल।।
तीन रूप त्रय शक्ति भवानी। ध्याइ परम सुख कह शिव बानी।।
नित्य तनाव निराशा माया। रोग दोष ईर्ष्या भय काया।।
चिन्ता मोह द्वेष पथ भटकन। जाइ दुराइ उगै मन सत धन।।
न्याय प्रेम सत पथ भगताई। नमताई समता शुचिताई।।
श्रम पुरुषार्थ आत्म विश्वासा। दृढ़ संकल्प लगन जिज्ञासा।।
स्नेह सहानुभूति सतकर्मा। धीरज त्याग अभय मन धर्मा।।

सो गायत्री हृदय हमारे। नाना शक्ति विविध निरमारे।।
अध नारी तन हम तेहि कारन। हेतु लोक हित कीनेव धारन।।
नर नारी सम रूप प्रसंगा। प्रगटाइअ मानिय अध अंगा।।
स्वारथ कर्म ज्ञान अरु माया। कारन पथ बिसरै जन काया।।
संस्कार सतयुग सुख साधन। धरनी धर्म कुनीति निपातन।।
संस्कार बिनु मानव कोऊ। नाही देव रूप बल होऊ।।
संस्कार सुरता प्रभुताई। हृदय पसारत दोष दुराई।।

सन्ध्या वन्दन शक्ति बड़, भूल भ्रम करु दूर।
सिद्धि साधना नेर करुं, जीवन सुख भरपूर।।58।।
त्याग तपोबल पाइ महि, शोषइ सविता ताप।
संस्कार प्रताप ते, मिटइ पंच सन्ताप।।59।।
सुर सन्तति पितु मातु लह, करि सन्ध्या बल यज्ञ।
नहि भौतिकता परि बनु, भले अपढ़ अरु अज्ञ।।60।।
शिवा तुमहि भ्रम नाहि कछु, जग हित तुम उद्‌देश।
सुनन्ह सुनावन आन चह, तुमहूं मम उपदेश।।61।।
जहं माया हंकार मद, मोह भ्रम मन साथ।
बिना शिवा शिव शरण के, होइ न भल ता माथ।।62।।

सोइ न जेहि संग शक्ति साधना। तासु न रह भल भक्ति भावना।।
धन बुधि बल त्रयसुर गुण हीना। हीन प्रयास कर्म रहु दीना।।
तासु मुहूरत करै न कामा। मूड़ हाथ धरि रोवइ धामा।।
भाग्य दोष दै खोवइ आपन। ता दुख बनु केहि भांति निपातन।।
आवश्यकता कमी भय फन्दे। उबरन नाहि कोउ दिन चन्दे।।
काम लोभ मद वातावरना। समय ठांव साथी आचरना।।
अनुसारेउ उपजइ मन माया। करि सकु निर्मल सतसंग छाया।।
माया मोह भ्रम मन जापर। ज्ञान बादि दुज नाहि व्यथा हर।।
बनै हेतु बुधि सम पितु माता। लहहिं न माया भ्रम भय घाता।।
सुनहु शिवा ऋषि मुनि सुर जेई। माया फंसे पाउ दुख तेई।।
धरनी ठांव शकति अदभूता। करु निज गुण सम देउं सबूता।।
जथा ब्रह्म इक तीन स्वरूपा। बनि विचरइ धरनी भवकूपा।।
तानुसार धरनी प्रभुताई। ढंग विविध बहु रंग सुहाई।।
धरनि नुसारे मन वृत्ति उपजे। आयु नुसारे तन बल सिरजे।।
करनी कर्म नुसार चरीता। उपजइ बुद्धि संग मति गीता।।
शक्ति साधना गुण अनुसारे। मनुज आपु दुख दोष निवारे।।
सुनहु शिवा भ्रम माया व्यापे। पथ अनहोनी जीवन नापे।।

बोले विहंसि महेश तब, ज्ञानी मूढ न कोइ।
जेस ईश्वर जेहि छिन करहिं, सोई मति मन होइ।।63।।

एक बार देवर्षि मुनीशा। विरचत लोक फिरत सब दीशा।।
धाम पुनीत हिमे चलि आये। करि दर्शन अतिशय हरखाये।।
परमानन्द न जाइ बखाना। लगु प्रिय आपु रहन्ह मन ठाना।।
भाव नुसार विलोकन लागे। इत उत फिरिय बढ़ाइ नुरागे।।
सन्मुख गुहा दिखानी पावन। गै समीप लगु परम सुहावन।।
पाइ देव रिषि मन अति भावा। सो सम आश्रम परम सुहावा।।
उपजु ब्रह्म पद आपु नुरागा। निरखिय शैल सुरम्य विभागा।।
सहज विमल मन लागि समाधी। वन्दत हरि पद सांस अबाधी।।
बीते काल गयेउ षट मासा। मुनि तप करत ध्यान हिम बासा।।
हिम संगति धरनी प्रभाऊ। भयो तपोबल मुनि मम नांऊ।।
देखि सुरेश भीति मन लाई। लै न लेहिं कहुं सुर पुर आई।।
तप बल जब जाके अधिकाने। बाढ़े छीनइ मोर ठिकाने।।
इहि भय लाइ सुरेश डेराने। काम बुलाइ विनय सनमाने।।
सहित सहाय जाहु मम हेता। निज माया विरचउ हिम केता।।
रचि माया दै मुनि मन त्रासा। बनु जेहि विधि तेस मुनि तप नाशा।।
काम लोभ सुख जाहि सताये। समय नुकूल परिस्थिति पाये।।
भूलहिं सबै आपु प्रभुताई। मन सुहाइ इक तिय प्रीताई।।
सुरपति नीति काम मन भावा। मुनि तप हरन जुगुति मन लावा।।
द्वेष ईर्ष्या मद हंकारा। चले करन तप बल ते रारा।।
जब जब देव अनीति संवारी। भयउ पराजित गयउ निकारी।।
विधि विरोध सुरपति लै कामा। सोच न सूझु चले भरि हामा।।

करत जहां तप देव रिषि, मदन जाइ तेहि ठांव।
लगेउ पसारन आपु बल, ऋतु बसन्त उपजाव।।64।।

लागि बहन्ह तहं त्रिविध बयारी। काम प्रभाव बढ़ावन वारी।।
कूंजु कोकिला गूजहिं भृंगा। भयउ विटप सुरभित बहु रंगा।।
रंभादिक सुर नारि नवीना। लगी करन नृत काम प्रबीना।।
मन स्वतंत्र करि तान तरंगा। जब तब करहिं वदन अधनंगा।।
अश्लीलता विविध विधि रांचा। काम प्रपंच अनेकन ढांचा।।
कहि दिखाइ करि काम बढ़ावन। जेहि उद्देश्य कीन्ह रह आवन।।
देखि डिगा हिम तरु बन प्रानी। तहं अस पसरु काम नादानी।।
पर मुनि ध्यान तनिक न छूटा। जेस बछरू नाचइ बल खूंटा।।
सुनहु शिवा सो तप थल मोरा। परै न कोउ तहं माया कोरा।।

भले काम बल ब्रह्म समाना। विधि वरदान सुरा सुर माना।।
धरनि धाम अपने अनुसारे। वातावरण विरचु आचारे।।
बनि रखवार महेश भवानी। लेहीं जाहि आपु जन जानी।।
तापर व्यापि सइि को माया। अरि प्रकोप जावइ बनि दाया।।
काम पराजित बनि खिसियाये। जोरि हाथ मुनि पद शिर नाये।।
ध्यान त्यागि मुनि काम निहारी। देखिय लाग दीन अनुहारी।।
गाइस काम पिछारु हवाला। जानि विजय मुनि भयो निहाला।।
व्यापि गवा मुनि मन मद ढेरा। तप तजि चह करु त्रय पुर फेरा।।
भै हरि माया सबै सहाई। उपजिय त्रय हेतू सफलाई।।

नाइ शीश नारद चरन, काम फिरेउ खिसियान।
अहंकार मुनि लाइ मन, तहं ते कीन पयान।।65।।
थल बल न मुनि मान करि, बल आपन सब मानि।
अपने पथ ओरी चलेउ, गर्व हर्ष सब खानि।।66।।

नारद बूझि आपु प्रभुताई। सुरपति सभा गयउ सबु गाई।।
सुनु जे ते मन अचरज लावा। मुनि प्रशंसा बहु विधि गावा।।
माया हर्षित चलेउ मुनीशा। विश्व वन्द्य मोरउ पुर दीसा।।
मम सन्मुख देवर्षि उचारा। जीतेउ काम भाव हंकारा।।
तीन लोक शिव अन्तरजामी। सुनिय बूझि मुनि अन्तर खामी।।
सोचि मुनी भल करिय सिखावन। करिय विविध शिव कथा सुनावन।।
जेहि विधि मुनि नहि पाउ कलेशा। कह महेश देइ सोइ उपदेशा।।
उनते जाइ कहेउ न कबहूं। सृष्टी काम विराचेंउ जिनहूं।।
शायद बनु अवसर कथनाई। बात टारि जायहु बगिलाई।।
यदपि काम जीतेउ तुम जैसे। जीतब आन कठिन रह ऐसे।।
आशिष देत प्रशंसा लावत। पुनि महेश कह मुनि समझावत।।
जौ न सिखावन मांनु हमारे। निश्चित बिगड़हि काम तुम्हारे।।

दीन्ह ताहि उपदेश हित, नारद नाहि सुहान।
माया वश नहि सूझि परु, हरि इच्छा बलवान।।67।।

चलेउ मुनीश थामि कर बीना। जापत हरि हरि पुर चित दीना।।
काम विजय बल लेत तरंगे। मम उपदेश असुधि सबु ढंगे।।
जाको प्रभु दारुण दुःख देहीं। सम नारद ता मति हरि लेहीं।।
यदपि मोहि सब कह जगदीशा। सीख भूलि पथ चलेउ मुनीशा।।
क्षीर सिन्धु जहं श्रीनिवासा। गे मुनि भाखन विजय हुलासा।।
हरखि मिले उठि विश्व विधाता। बोले विहंसि सआदर बाता।।
आसन दीन्ह सहित अनुरागा। पूंछु कुशलता भांति सुभागा।।

रहु भव विरचत तुम केहि ठांही। गयउ ढेर दिन आयउ नाही।।
कहु आयउ आजू केहि कारन। या देइ दरसन मोद उभारन।।
कमलापति के वचन सप्रीता। सुनि मुनि करिय सकारन गीता।।
मुनि दिन पाछिल कृत्य बखाना। भाखन जौन चाह मन साना।।
हिम तप काम विजय अनुवादा। शिव उपदेश सहित सम्वादा।।
पुनि कह पाइ प्रभु पद दाया। तब इहि आवन अवसर पाया।।

भाव मुनीश्वर कै परखि, बोले कृपानिधान।
लीन्हेउ अद्भुत विजय तुम, महिमा करिय बखान।।68।।

नारद बोलु भाव अभिमाना। कृपा तुम्हारि रही भगवाना।।
भाव भजन भगती अनुसारे। धरहीं ईश आपु अवतारे।।
मद अंकुर मुनि मन हरि देखे। करन्ह ध्वंस विधि सोच विशेखे।।
जौ भगतन मन रहु मद माया। तौ हम बसब केसस तिन काया।।
हमरे बिना भगत रहु दीना। कह जग नाथ साथ का कीना।।
अवसि उपाइ करब हम सोई। जेहि विधि मुनि हित कौतुक होई।।
मनोनीति अस हरि निरधारा। करिय बिदा मुनि मुदित पधारा।।
जात चला मुनि बीन बजावत। राम राम नारायण गावत।।
जेहि पथ गमन करिय वीणा धर। तेहि पथ कौतुक हरि रचना कर।।
मग सत योजन नगर निराला। विरचेउ हरि सुर पुर ते आला।।
तेहि पुर सोह शीलनिधि राजा। अगणित हय गज सेन समाजा।।
रूप तेज बल नीति सुचारी। पुर सम्पन्न योग नर नारी।।
नगर दिव्यता अनुपम ढंगा। सब युव परसहिं काम प्रसंगा।।
यदपि मुनी विचरक त्रय लोका। अस न दीखु कहुं नीक सबों का।।
विश्व सुन्दरी नृपति कुमारी। लगु कमला सन सबै पियारी।।
दैहिक माया सब गुन खानी। अति सुन्दरता हीन नदानी।।
आये तहां विश्व महिपाला। रहा स्वयंबर नृपति बाला।।
नारद जौन काम ठुकराये। आज नगर छबि लखि ललचाये।।
समय समय धरनी प्रभूता। देहि बदलि मन कह अवधूता।।
पूंछु नगर जन ते मुनि ऐसे। नाम नगर आयोजन कैसे।।
मुनि जानिय पहुंचे नृप भवना। चीन्हि नृपति करि आदर अवना।।
दइ आसन भूपति बैठाये। कथा स्वयंबर गति विधि गाये।।

लाइ दिखाइअ नारदहिं, भूपति राजकुमारि।
कह मुनिवर तन दोष गुन, भाखहु आपु विचारि।।69।।

देखि नृपति बाला सुन्दरताई। गयउ बिसरि आपन प्रभुताई।।
रहा न नारद मन बल पाछिल। माया देखि बदलु मनसादिल।।

मुनि माया मद संग हरि माया। माया नगरी माया काया।।
माया खेल खिलौना माया। रही तहां सब माया छाया।।
रहिगै मुनि नृप सुता निहारत। देर बड़ी नहि पलक सुधारत।।
जे देखा तेई तहं जाना। मुनि मन भाव विचार निशाना।।
गहिय हाथ मुनि लच्छन देखा। चाम रेख गुण पाउ विशेखा।।
अजरामर अजेय बनु सोई। बनु इहि कन्या वर जग जोई।।
जगती करै तासु सेवकाई। तीन लोक सुख संग सगाई।।
लह जेस मन सुख लोक सभीसा। तेस कन्या कर थामि मुनीशा।।
थामि आपु उर लच्छन गावा। शोक हर्ष लै तुरत तकावा।।
सुनहु शिवा जब बनु ऋषि कामी। बदलइ युग तब व्यापहि खामी।।
बाला लोभ मुनीश सतावा। हेतु युवति बहु तर्क लगावा।।
करि निश्चित भल होइ स्वरूपा। अवसि मिलै तौ कन्या भूपा।।
रूप देखि आपुहि बनु राजी। मम मित विष्णु देहिं सो साजी।।
आश भरोस सुदृढ़ विश्वासा। त्वरित मिलन हित मुनि प्रयासा।।
जप तप किहेउ स्वयंबर जाये। मिलहीं हरि जब कोउ गोहराये।।

जात क्षीर पुर देर लगु, विनय करउं इहि ठार।
प्रगटहिं मांगहुं रूप तिन, जाउं स्वयंबर वार।।70।।

हरि चाहे पथ गयउ मुनीशा। प्रगटे वेगि हरखि जगदीशा।।
पाइ दरस मुनि हृदय जुड़ाने। बरनेउ मनो चाह अफनाने।।
मांगु कबहुं नहि चाह न कीना। सो न कहत तुम जेहि ते हीना।।
देहु नाथ आपन मुख रूपा। जिते वरहिं मोहि कन्या भूपा।।
आन भांति प्रभु मिलै न वोहू। भव भूपति ताते करि छोहू।।
भले आगु कछु दूज न देहू। पर इहि देहु जिते मन नेहू।।
नहि भूलब उपकार तुम्हारा। जौ अबकी भल होइ हमारा।।
आतुर आरत बैन नुरागी। सुनिय प्रभु तेहि करहिं सुभागी।।
प्रभु स्वीकारा वचन उचारा। मुनि तुम जांनु स्वभाव हमारा।।
भगतन हित करि कुपथ दुराई। चाह करउं तिन आपन नांई।।

मुनिवर जेहि विधि हित बनै, गये स्वयंबर ठार।
करब सोई हम आन नहि, राखु हृदय इतबार।।71।।
ब्याकुल रोगी भूख भय, कामी लोभी चोर।
मन अथिरे सत सूझु नहि, धावै हित पथ ओर।।72।।

दै हित वर हरि आपु हेराने। सूझु न सत मुनि मन हरखाने।।
ठांव स्वयंबर पहुंचे धावत। जथा मूढ़ मुनि आन दिखावत।।
मुनि हित कारन कृपानिधाना। दीन्ह नवा मुख कीश समाना।।

मर्म न जानि देव रिषि मानी। करिय नयन सब आशिष पानी।।
भूमि स्वयंबर मुनिहि बिराजे। जहां भूप सब बैठे साजे।।
मुनि मन हरख भाव अनुरागा। परसिय सभा देर नहि लागा।।
चलु कानाफूंसी उपहासा। आयउ नारद परि केहि त्रासा।।
सोह सभा तेहि शिव गण दोऊ। देखन्ह कौतुक आयउ वोऊ।।
तिनहि ज्ञात रहु मर्म मुनीके। बैठि बगल गति दीखु इन्ही के।।
सबै निहारत राज कुमारी। गण अवलोकत मुनि गति सारी।।
कहि हरि दीन्ह गजब सुन्दराई। कूटि करहिं दोउ मुनिहिं सुनाई।।
सो सुझाइ अति भीड़े कारन। पहुंचि न पाउ दृष्टि इहि वारन।।
मुनिवर उठि उत जाउ अगारी। जेहि पथ प्रविशइ राज दुलारी।।
गणन्ह नीति नारद मन भावा। करत कूट इहि सूझि न पावा।।
उठिय झपटि बैठेउ वहि ओरी। क्वारीं गमन सभा जेहि खोरी।।
सभा नीति आपन मरजादा। रहा न एकहु नारद यादा।।
काम लोभ दुइनो मति माथे। ज्ञान प्रभावित माया साथे।।
मूढ़ समान करै मुनि करनी। दूत विलोकु आन का परनी।।
नारद निकट लीन्ह चलि आसन। गण दोऊ कह शंभु शिवा सन।।

नृपति कुमारी संग सखि, निकरी लै जयमाल।
प्रविशत देखिय कीश मुख, रूठि नयन भे लाल।।73।।

बैठु जासु दिशि मुनि मन फूले। ओरी तेहि सो दीखु न भूले।।
मन आतुर मुनि उकसन लागे। उपजु भाव जेसु चलु तेहि आगे।।
शीश उठावत भौंह बढ़ावत। हेतू जेस कोउ हाथ दिखावत।।
भा मन उठिय जाउं अब बहरी। अकुलाहीं केस आउ न यहरी।।
देखि दशा हर गण मुसकाने। बोले बचन भाव अनुमाने।।
राज कुअंरि अब गै जेहि ठौरे। आलस त्यागि जाउ कछु दौरे।।
तुम न देखु ता दोष न पाथेउ। भये बिलम्ब मीजन परु हाथेउ।।
भूप रूप तहं सोह कृपाला। तब लौं पहुंचि मेलि जयमाला।।
रथ बिठाइ चलि भे निज देशा। भै निराश मुनि सबै नरेशा।।
मनि बिनु फन जेस जल बिनुमीना। सो दुख व्यापु मुनीश्वर सीना।।
तब हर गण कह कर्कश बानी। देखु रूप तनी चुल्लु पानी।।
बीन बजावत धरि मुनि वेशा। हेतू परतिय इतिक कलेशा।।
तुम सम होहिं जहां दुइ चारी। बनइ राज सोई भ्रष्टाचारी।।
लाज न लागति मुंह दिखरावत। घर न दुवार विवाह लोभावत।।
अस कहि दोउ भागे भय लाई। मुनि मुख देखु नेर जल जाई।।
मुख अवलोकि खौलिगा लोहू। कह जिन हंसु अब ते खल होहू।।

पुनि मुनि दर्पण दीखु मुख, पाउ न कपि अनुहार।
पर न आउ संतोष मन, रह रिसि मने अपार।।74।।

नारद झपटु श्रीपति ओरी। भा मन मिले देउं शिर फोरी।।
इत बड़ धोखा जाइ न नापा। मिटइ न घाव दिहे अभिशापा।।
जौ अस कपटी तीन लोक पति। तौ सुर मानव कै गनु को गति।।
तबलुं मिलेउ पथ कृपानिकेता। राज कुमारी संग समेता।।
आपुहि वचन बोल मुसकाई। जात मुनीश विकल केहि ठांई।।
सुनत वचन मुनि भे अंगारा। जेस कोउ नमक जले पै डारा।।
कटु कर्कश कोपित मुख बानी। कह मुनि अस कपटी नहि जानी।।
फरकत अधर पीसि मुख दांते। तानि तर्जनी भाखत बातें।।
तुमहिं लोभ जौ राजकुमारी। तौ काहे मुख मोर बिगारी।।
भले न देतेउ आपन रूपा। का मांगेन हम कीश स्वरूपा।।
बनि जग स्वामी गई न खामी। नहि भय लोक लाज बदनामी।।
बनु स्वतंत्र जे जग तुम नांई। कहं भावइ तेहि आन भलाई।।
डहकि डहकि धिक्कारु मुनीशा। लीन्ह चूप सुनि सबु जगदीशा।।
मद असुरन्ह सुर सुधा पियायउ। दृष्टि बिषम सब दिन अपनायउ।।
तुमहिं पूजि को भयउ सुखारी। मांगु खोलि मुख दिहेउ न नारी।।
बदले दिहेउ विश्व उपहासा। होत मने बधि थामि गड़ासा।।
किहेउ जौन दीन्हेउ तुम मोहूं। देहुं शाप गल बांधउ तोहूं।।

नारद वाणी शीश धरि, लीन्ही कृपानिधान।
पुनि निज माया खीचि लेइ, तौ उपजा सत ज्ञान।।75।।

सुनहु शिवा भगतन हित हेता। सहहिं सबै कुछ कृपानिकेता।।
कुपथ कुनीति कुभाव दुराही। भले नुभूति करै दुखमाहीं।।
हरि स्वभाव हर हित भगतन के। जौन तौन कह शास्त्र वचन के।।
भै नारद हरि माया हीना। बहु पछिताहिं भूल बड़ि कीना।।
हरि हितकारी कुमति निवारी। अघ अवगुन सब दोष विदारी।।
कीन मोर संरक्षण जैसे। सकइ बचाइ दूज को ऐसे।।
बड़ दुख लाइ प्रभु पद लेटेउ। कह प्रभु आगिल भूल समेटेउ।।
काम क्रोध मदमन हंकारेउ। रहेउ संभारत नाथ हमारेउ।।
होइ न पुनि अस भूल गोसांई। अस किरपा राखेउ सब ठांई।।
शाप वचन मिथ्या बनु मोरे। अन्तर चाह कहउं कर जोरे।।
कह नारद सन पुनि जगदीशा। भजहु शिवा शिव चलि सब दीसा।।

हरि माया ते काहु के, चलु न कतहुं कोउ जोर।
भगति भाव बिनु कौन कहं, पाइ सका दुख छोर।।76।।

सुनहु शिवा हरि हृदय स्वभाऊ। भगतन हृदय गढ़त निज नाऊं।।
जेहि जोरत बिछुड़त न तिनते। जेहि छोड़त जोरत न फिन ते।।
जीवन नाव बनत सबु ठौरे। आवत भगत पुकारेउ दौरे।।
दाम न लेत काहु ते भारा। जेहि गनि आपन करत सहारा।।
सुनि नारद कथ जीवन गाथा। बोली शिवा हाथ दै माथा।।
नाथ उभरु जैसे कलिकाला। भै विकृत मुनि संग महिपाला।।
हेतू मुनि अस कौतुक कीन्हा। पर उपहास हेतु चित्त दीन्हा।।
करिय सुपनखा बन उपहासा। भले गलत रह नारि प्रयासा।।
सत्य वचन तेहि दीन्ह न ज्ञाना। पठवा इत उत गेंद समाना।।
नारद भूल भरम अभिमाना। रहा न नाशन दूज विधाना।।
हरत ज्ञान भव अवगुन नाना। आगम निगम पुरान बखाना।।
नाथ न भल लागत इहि करनी। हरि कृत जेस नारद संग वरनी।।
उत नारद तप करन्ह नशावन। कीन्ही सुरपति काम पठावन।।
ताते नाहि कोउ रिसियानेउ। भै मुनि दुरगति हरन भिमानेउ।।
नाथ न जौ होवत सिय हरना। तौ का नाहि बनत खल मरना।।
भा भ्रम मोहि रहउं तुम चरने। सुर नर मुनि सब भ्रम आचरने।।
कलि समान चहुं दिशि उतपाता। दीखउं नाथ भईं का बाता।।
तुम सब जानत अन्तरयामी। व्यापी कलि समान केस खामी।।
पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी। विधिवत कथन करन भरु हामी।।

शिवा वचन शंकर सुनिय, नाना ढंग विचारि।
बूझि सभा हित भ्रम हर, आगे ज्ञान उचारि।।77।।

सुनहु शिवा भाखउं समुझाई। क्षण परिवर्तन गयउ नेराई।।
आलस अहंकार अभिमाना। भूल भ्रम कामादि जोराना।।
भगतन देत शोक सन्तापा। देखिय सुरन्ह तनाव अमापा।।
पति उपदेशे सुघरु न तीया। होइ हरण जग भांती सीया।।
बनहीं राम भांति बनबासी। बनु सम नारद भोग विलासी।।
रीति नाहि अनरीति जोराये। प्रिया तबै युग बदलन्ह आये।।
उत्पत्ति प्रलय रक्षण कारी। करुं तीनहुं स्थिति रखवारी।।
सब जानउं तोहि देहुं जनाई। धरु तन दूसर तौ भ्रम जाई।।
चाह नुसार बनउं सहयोगी। भले सहन परु विपति वियोगी।।
जेहि विधि मिटै लोक भ्रमताई। रांचउं हम तुम सोइ उपाई।
करिय सीय जेस पावक बासा। राम स्वतंत्र करै खल नाशा।।
तानुसार सुनु रूप भवानी। यज्ञ बैठि बनु युग निर्मानी।।
लेहुं समाधि बनहुं तप धारी। सूक्षे लड़ब राम अनुहारी।।

एक पंथ चलि करि दुइ काजू। लोके उपजइ राम सुराजू।।
सुनहु भवानी आउ सो अवसर। देन विश्व वर संग भ्रम हर।।
जेहि विधि बनै मनुज कल्याना। धरि तन बांटहुं वंश विधाना।।
पाइ जाहि मानव संसारी। आपु सुधारि चलै नर नारी।।
करि कछु चिन्तन शिवा भवानी। स्वीकारा स्वामी मुख बानी।।

यज्ञ अगिन प्रविशन शिवा, आपु मने बैठाइ।
हेतु सुधारन मनुज मति, नवयुग बिरचन ताइ।।78।।

विधि विधान अवसर बनि आवा। जौन शिवा शिव चाह बनावा।।
दक्ष यज्ञ तेहि अवसर रांचेउ। हरि माया बदलेउ ता ढांचेउ।।
दीन्ही शिवम मेखला तूरी। कीन्ही मने यज्ञ करुं पूरी।।
जब जेहि काल चलै हरिमाया। कुपथ चले न भल कोउ काया।।
तेस जेस रहि शासन विपरीता। जियइ भले पर होइ न हीता।।
भूल भ्रम अभिमान समेता। बनेव दक्ष निज यज्ञ प्रणेता।।
शिव बेराइ करि सुर आवाहन। चले सभी चढ़ि चढ़ि निज वाहन।।
नभ निहारि अनुराग समेता। बोलि शिवा सुनु कृपानिकेता।।
सजिय सुरन्ह चलहीं पथ एके। स्वामी सबै जात पुर के के।।
प्रभु सर्वग्य बतावहु एही। जौ मोहि मानत चरन सनेही।।
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा। भाखेउ सकल दक्ष अपराधा।।
जानि स्वामि रुख जगत भवानी। पहुंचन यज्ञ ठांव अकुलानी।।
युग बदलन भव भूल हटावन। आपन दूसर जन्म बनावन।।
ऋषि मुनि कुल सत पंथ धरावन। हेतु मनुज नव सीख सिखावन।।
आयसु जगपति पूर निभावन। लोके माया चार हटावन।।
करन्ह जगत पुनि चरित दिखावन। जौन करइ मानव अपनावन।।
जग हित हेतु स्वामि अनुकूला। बोलिय वचन संकोच समूला।।

नाथ दक्ष उत्सव सुनेउं, होत मने तहं जांउ।
होइ लोक हित जाहि विधि, आयसु आपु निभाउं।।79।।

कह महेश मोरे मन भावा। बड़ अनुचित नहि नेवत पठावा।।
बिनु बोलाइ जहं जाइ भवानी। जग स्वभाव नहि कोउ सन्मानी।।
उत्सव यज्ञ होइ कोउ ठांऊ। जाब नीक भल नाहि बुलांऊ।।
पर विरोध अपमान जहां पर। नाही भल रह जाब तहां पर।।
हेतू गमन शिवा हठ लावा। शिव समुझाउब न मन भावा।।
शिव जानत करि शिवा बिदाई। हित रक्षण गण युगल पठाई।।
करिय भवानी पद प्रनामा। कहि न तजेउ मोहि जग सुख धामा।।
जेहि विधि होइ नाथ हित जग के। करब सोई जाइअ यज्ञ लग के।।

सहब न नाथ निन्द उपहासा। बने तो पुरवहु मन अभिलाषा।।
पहुंची दक्षे यज्ञ भवानी। तहां न ताहि कोउ सनमानी।।
गति अवलोकि शिवा करि क्रोधा। वचन सुनाइअ हेतु प्रबोधा।।
होइ जहां नहि शंकर अंशा। जांनु नेर ता आउ विध्वंसा।।
जहं निन्दा उपहास पमाना। सुनहु ताहि सबहीं निज काना।।
लागै अघ भावइ असुराई। पाउ व्यथा कुल संग लड़ाई।।
सुनहु सभा सद सुनब न निन्दा। इन्ह अज्ञानी छली मुनिन्दा।।
कटब जीभ या खोउब प्राना। जौ निन्दा पहुंचे मम काना।।
दक्ष यज्ञ आयसु अनुसारे। होन लाग सब यज्ञाचारे।।
उपजेउ शिवा मनेउ बड़ शूला। बूझिय समय वचन अनुकूला।।
पति हित हेतू जग भ्रम टारन। कूदिय तुरतइ यज्ञ मझारन।।
तजिय प्रान करि यज्ञ विध्वंसा। हेतु सुधारन जग जन वंशा।।

दक्ष यज्ञ विध्वसं भै, मचिगा हाहाकार।
गण आयउ शिव तेकहे, कथा हाल समचार।।80।।
वीर भद्र शिव पठइ तहं, सो करि नाश समूल।
शिव बैरी अभिमानि के, क्षमा होइ नहि भूल।।81।।
जनम जनम अनुराग शिव, शिवा मरत वर मांग।
चलि महेश कैलाश गे, लीन्ह समाधि विराग।।82।।
सुनहु सभा सद सूत कह, अतुलित शिव प्रभुताइ।
आपुहि सर्वस रूप धरि, रचना ध्वंस कराइ।।83।।
ज्ञान भगति वैराग्य सुख, मनुज हितारथ जौन।
शक्ति देह बदलन करिय, चरित दिखावन तौन।।84।।
जाहि विलोकिय सृष्टि जन, चलहीं जौ अपनाइ।
लहहिं राम गुण आपु तन, ऐसन सूत बताइ।।85।।
शिव समेत प्रनवत शिवा, सभा नुराग उभारि।
नाइ शीश कर जोरि मुनि, आगे वचन उचारि।।86।।

वन्दे देवमुमापतिं सुर गुरुं वन्दे जगत्कारणं,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे सर्वजगद्विहारमतुलं वन्देऽन्धकध्वंसिनं,
वन्दे देव शिखामणिं शशिनिभं वन्दे हरेर्वल्लभम्।
वन्दे नागभुजंगभूषणधरं वन्दे शिवं चिन्मयं,
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।

वन्दे दिव्यमचिन्त्यमद्वयमहं वन्देऽर्कदर्पापहं,
वन्दे निर्मलमादिमूलमनिशं वन्दे मखध्वंसिनम्।
वन्दे सत्यमनन्तमाद्यमभयं वन्देऽतिशान्ताकृतिं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे भूरथमम्बुजाक्षविशिखं वन्दे श्रुतित्रोटकं,
वन्दे शैलशरासनं फणिगुणंवन्देऽधितूर्णारकम्।
वन्दे पद्मजसारथिं पुरहरं वन्दे महाभैरवं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे पंचमुखाम्बुजं त्रिनयनं वन्दे ललाटेक्षणं,
वन्दे व्योमगतं जटासुमुकुटं चन्द्रार्धगंगाधरम्।
वन्दे भस्मकृतत्रिपुण्ड्रजटिलं वन्देष्टमूर्त्यात्मकं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे कालहरं हरं विषधरं वन्दे मृडं धूर्जटिं,
वन्दे सर्वगतं दयामृतनिधिं वन्दे नृसिंहापहम्।
वन्दे विप्रसुरार्चिताङ्घ्रिकमलं वन्दे भगाक्षापहं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे मंगल राजताद्रिनिलयं वन्दे सुराधीश्वरं,
वन्दे शंकरमप्रमेयमतुलं वन्दे यमद्वेषिणम्।
वन्दे कुण्डलिराजकुण्डलधरं वन्दे सहस्राननं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे हंसमतीन्द्रियं स्मरहरं वन्दे विरूपेक्षणं,
वन्दे भूतगणेशमव्ययमहं वन्देऽर्थराज्यप्रदम्।
वन्दे सुन्दरसौरभेयगमनं वन्दे त्रिशूलायुधं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे सूक्ष्ममनन्तमाद्यमभयं वन्देऽन्धकारापहं,
वन्दे फूलननन्दिभृंगिविनतं वन्दे सुपर्णावृत्तम्।
वन्दे शैल सुतार्धभागवपुषं वन्देऽभयं त्र्यम्बकं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
वन्दे पावनमम्बरात्मविभवं वन्दे महेन्द्रेश्वरं,
वन्दे भक्त जनाश्रयामरतरुं वन्दे नताभीष्टदम्।
वन्दे जह्नुसुताम्बिकेशमनिशं वन्दे गणाधीश्वरं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।

वन्दउं शंकर रूप त्रय, गुण कारण सब रूप।
आदि अनादि प्रकाशमय, पुरुष अजन्म अनूप।।87।।

वन्दि शंभु पद नाइ शिर, सुर मुनि सभा समेत।
सभा ओर मुख सूत करि, हेतु कथा मन चेत।।88।।
शिवा अगिन प्रवेश करि, शंभु बसेउ कैलाश।
लोकाचरित दिखाइ जग, करन्ह दोष वृत्ति नाश।।89।।

लीला महाकाल कै सोई। अनुकरणीय जौन जग होई।।
सो सब लागेउ सूत बतावन। चरित मनोहर जग मन भावन।।
विश्व बीज शंकर त्रिपुरारी। कथि गुण गाउ जन्म महतारी।।
वर कन्या परिणय कृत पावन। पिछ कन्या करु पति गृह आवन।।
कन्या दूज जनम अनुहारे। मानि आपु ससुरारि पधारे।।
लै पति पतिनी धर्म नुठाना। गढ़ही देव रूप सन्ताना।।
करु सो मात पिता सेवकाई। दर पीढ़ी सृष्टी कहलाई।।
दूज जन्म लै शिवा भवानी। मन हेतू परिणय सुखदानी।।
युग बदलन नव सृष्टि रचावन। करि परिणय शिव धर्म बढ़ावन।।
यज्ञ अगिन चलि शिवा प्रवेशा। आगु सूत कह निज उपदेशा।।
अहंकार सम दोष न आना। ताते दूरि बसै भगवाना।।
कथइ सोचु दीखहि जो जैसे। लोक लोग जानइ तेहि तैसे।।
जगती तीय सर्व निर्मानी। नर संग रक्षक शोभा खानी।।
तीय बिना गृह आश्रम नाही। बिनु शिव आन नाहि हित छांही।।
जे तिय कुचलइ करि क्रय विक्रय। सपनेउ तासु सुनाइ नाहि जय।।
जे ब्रह्म विद्या नारि विहीना। भाग्य हीन सो दीन मलीना।।
लोक सुधारन युग निरमारन। प्रथम शिवा शिव करि उद्गारन।।
यदपि महेश्वर पुरुष अजन्मा। पर परिवर्तन विधि धरि मनमा।।
महाकाल बनि अन्तरयामी। गढ़ि विधान नाशन भव खामी।।
जग मानव मनु रूप महेश्वर। शतरूपा शक्ती सरबेश्वर।।
मन कालांश काल शिव रूपा। समय प्रकृति गढ़इ भवकूपा।।
मन सम पुरुष देह सम नारी। मिलि द्वो पुरुष प्रकृति नुहारी।।
मन मनु रूपा तन शतरूपा। शिव समेत सो शिवा स्वरूपा।।
रूप रंग तन कै भल सोई। जेहि विलोकि मोहित जग होई।।
ज्ञान विवेक विमलता जैसे। मनन समन सुन्दरता वैसे।।
गुण स्वभाव कर कर्म नुसारा। जन जीवन शोभित संसारा।।
समय प्रकृति उभारु प्रवृत्ती। बुधि संगति जावइ बनि शकती।।
समय रूप पितु मातु प्रकृती। मिलि दोऊ बनु जीवन वृत्ती।।

आपु समय पहचान करि, सुनु जे समय प्रकार।
रहत समय अनुकूल तेहि, सो करु युग निरमार।।90।।

ज्यों ज्यों मानव अघ करै, त्यों त्यों कलि उद्‌गात।
दुख दारिद भव रोग बनि, शनै शनै तन खात।।91।।

भले मनुज तन परम सरेखा। लोभु सोइ जेई इहि देखा।।
पावइ मान प्रतिष्ठा वैसे। करम स्वभाव सोह गुण जैसे।।
राम प्रीति अनकूत महेशा। मनाराध्य तेहि मांनु हमेशा।।
बनु मानव कोउ राम समाना। तेहि निज मानन्ह शिव प्रण ठाना।।
इहि कारण जगती नर नारी। शिव पूजहिं शिव रहत संभारी।।
शिव समान मानव हितकारी। देव न दूज सबै स्वीकारी।।
पाउ जबै जन काया पीरा। सुर स्वभाव तब बनै अधीरा।।
जब जब अघ बाढ़त भव मांही। हरि अवतरण होत कोउ ठांही।।
जब जब मनुज पाउ मति भ्रमा। कुबुधि कुनीति कुचार कुकरमा।।
हेतु शिवा शिव आउ सुधारन। दइ कोउ नवल शकति अवतारन।।
कुछ ऐसन वहि समय दिखानी। शिवा सीय जब अगिन समानी।।
माया काया भरम अनीती। नर मुनि सुर नेकन्ह करि प्रीती।।
बहु उपदेश शंभु जग भाखा। बढ़िय न ताते सदबुद्धि शाखा।।
हेतू जन्म शिवा स्वीकारा। चरित सुधारन युग निरमारा।।
चलत प्रक्रिया सो इहि काला। सूक्ष साधना करत कृपाला।।
महामंत्र जप मौन समाधी। सकल दोष हर शोक वियाधी।।
सो शिव साधत बसि कैलासा। दुजे जन्म करि शिवा प्रयासा।।

समय योग भल योग कहं, जौ शिव संग वियोग।
सुर नर मुनि चिन्ता करहिं, ऐसो देखि कुयोग।।92।।
सूक्ष्म साधना शंभु बल, ते बधि गा दसमाथ।
राम राज न बनि सकै, बिना उमा शिव साथ।।93।।
इत महेश निज ध्यान मंह, मुदित मगन लवलीन।
हिमे धाम प्रगटन पुनः, जग शक्ती चित्त दीन।।94।।
देव दनुज मानव सकल, ऋषि मुनि सहित त्रिदेव।
भू नभ पावक पवन जल, सबै ठांव हिम सेव।।95।।
मूल धाम शंकर सोई, तिते ढेर प्रीताइ।
भुवन स्वर्ग अनुरूप सो, जे दर्शहीं छोहाइ।।96।।

शैल रूप धरनी सुर धामा। सम नहि दूज कतहुं वसुधामा।।
तेहि हिम धाम शर्व शिवशंकर। लेहीं मौन समाधी तब वर।।
जब भव भूल भ्रम कलि कारन। बाढ़इ साधिय करु संहारन।।
अबकी बेर हरन भव दोषा। करन्ह शान्त त्रिशूले क्रोषा।।
महामंत्र सोइ जपइ महेशू। हेतु शक्ति जेहि देइ उपदेशू।।

शंकर मनेउ प्रीति बड़ उन से। रघुपति चरित पसरु जग जिनसे।।
मिलहिं मनुज जे राम समाना। तेहि शिव मानहिं सम सन्ताना।।
निज सर्वस तेहि देहि उड़ेली। कह जग छप्पर फारि ढकेली।।
पाछ शिवा सन भईं जोउ बाता। आउ सो नेर सोचु सुखदाता।।
बूझि शिवा हिम धाम पुनीता। जन्मब तहां लाइ मन प्रीता।।
शंभु प्रेरना सुरन्ह सतावा। हिम मैना संग ब्याह रचावा।।
आपन लोक हितारथ हेते। करन्ह दोऊ बड़ तप चित्त चेते।।
जपत दोउ शिव सम मह मंतर। साधत वर्ष विगत भे सत्तर।।
परम घोर तप व्रत उपवासा। बनु मैना हिम पूरक आशा।।
बूझि दोउ तपसी नुष्ठानी। प्रगटिय आदिशकति कह बानी।।
महा साध्वी महा प्राज्ञेउ। मांगु तौन जो तोहि अनुरागेउ।।
जोरि हाथ बोले दोउ प्रानी। नाइअ शीश नयन भरि पानी।।
आउ न बैन दिखाइअ जड़ता। बुझिय भवानी बुधि जर्जरता।।
तपसिन भाव प्रीति अनकूता। पाइ देवि बनु मुदित बहूता।।
मैना बांह पकरि उर लाई। देई दिव्यता लै जड़ताई।।
उपजा दिव्य ज्ञान मैना के। दरसन परसन पाइ प्रभा के।।

मुद मैना कर जोरि के, करन्ह विनय भै ठांढ़ि।
छबि पद पूजन चित धरन, मने लालसा बाढ़ि।।97।।
पुष्पाक्षते उपांग करि, पग उपकण्ठे लागि।
सम कनऊड़ी पूजि पद, मन उत्सेकन त्यागि।।98।।

जय जग जननी सृष्टि कारिणी। भव सुखदायिनि लोक धारिणी।।
सकल विश्व रह दान तुम्हारू। पुरवहु मनसा चाह हमारू।।
हारी रोग शोक भव फन्दा। माता मही विश्व आनन्दा।।
प्रतिमा लोके नारि स्वरूपा। योग निद्रा माया रूपा।।
नित्यानित्या दृश्यादृश्या। शाश्वत शकति रूप सर्वस्या।।
ज्ञान सकल तुमहीं सब सिद्धा। लोके व्यापु रूप ब्रह्म विद्या।।
उत्पत्ति रक्षण मारण योगा। नाही तुमते कछुक वियोगा।।
तुहीं भानु शशि ज्योति स्वरूपा। सुर मुनि मानव अन्तर धूपा।।
ब्रह्म रूप धरि अन्तर बासी। पंच तत्व बल प्राण प्रकाशी।।
तुहीं देव त्रय हेतु शरीरा। सुरन्ह निवारक भव भय पीरा।।
भक्तिदायिनी माता अम्बे। पग लागउं सब विधि जगदम्बे।।
पालक पोषक नाशक त्राता। वरदायिनी विज्ञान विधाता।।
जय जय जय त्रिपदा भयहारी। आदि शकति जननी हितकारी।।
जानिय शरण क्षणिक सेवकाई। देहु सोई जेहि हेतु तपाई।।

मैना स्तुति देवि सुनि, कृपा दृष्टि निहारि।
कह अदेय कुछ नाइ मोहि, हर्षित बैन उचारि।।99।।
सुधा वचन मुख देविके, सुनि मैना सन्तुष्ट।
प्रथम मांगिय शत तनय, यशी आयुबल पुष्ट।।100।।
पुनि कह तनया रूप धरि, कोख पुनीत बनाउ।
सुरन्ह साधना सिद्ध करु, जग ते चरण पुजाउ।।101।।

कहि तथास्तु मुख बोलि भवानी। मानिय भल भईं अन्तरध्यानी।।
हिम मैना करि हर्ष अपारा। मन भावा मांगा जोउ दारा।।
उपजु हिमे मन सब विधि एही। सुतन्ह गढ़ब सुर काज सनेही।।
सुता शकति रहु देवि समाना। सब मन बसि लावइ शिव ध्याना।।
मने कल्पना करि अस दोऊ। ओरी भवन फिरेउ मुद वोऊ।।
मैना मांगन वर अनुसारे। तनय शतक क्रम लाइ पधारे।।
नाम कहां लौ तासु गनावउं। पूत प्रथम मैनाक बतावउं।।
मैना तप वर मांग कहानी। रहेउ विदित पुर तीनहु जानी।।
गुंजु वतारण देवी आशा। भल भविष्य पूरण अभिलाशा।।
जे हिम आउ ते जांचत एही। कब देवी आवहिं धरि देही।।
ज्योतिष गणित लगावन वारे। दीखु ब्याह शिव देव सुखारे।।

हिम मैना चिन्तन करिय, शतक तनय उपरान्त।
तनया बारी आइ अब, सोचु दोउ मन शान्त।।102।।
बार बार उभरत हृदय, जग जननी वरदान।
बनत स्मरण देवि छबि, मांग नुसारे ध्यान।।103।।

प्रबल भाव कन्या अनुरागा। सहज हिमे मैना मन जागा।।
सोह चिते दैवी प्रभुताई। रहु जेहि चिन्तन मन श्रद्धाई।।
मिलै सोऊ या ता अनुहारा। विधि विधान व्यापित संसारा।।
हिम मैना चिन्तन दिन राती। पायउ वर देखा जेहि भांती।।
वर वरदान देवि प्रभुताई। सोई नयन बसेउ उर आई।।
तन हिम मैना लह ज्योताई। दीखु जे ते कह देवि समाई।।
पसरी बात गात ज्योताई। आउ जे प्रीति करइ शिर नाई।।
बनेउ धाम हिम परम सुखारी। पाइअ जब ते कन्या बारी।।
भयउ मनोहर मैना गाता। जोरि गर्भ ते दैवी नाता।।
जीव जन्तु दैवी गुण लाये। ऋषि मुनि नाना यज्ञ रचाये।।
सकल सिद्धियां शैल विराजी। सिद्धी सबै देन बनि राजी।।
गिरि वन गंगा झरना झाड़ी। बनि पुलकित बढ़ि चलै अगाड़ी।।
रवि शशि देहिं ज्योति अनुकूला। आउ दिखन्ह विधि हरि सुरकूला।।

मंगल गीत मनोहर गावहिं। नाना स्तुति विनय सुनावहिं।।
उर सुख उपजइ प्रीति अखण्डा। होइ न सपनेउ जौन विखण्डा।।
बनहीं वृत्ति आसुरी छारा। ताहि समय जे हिमे पधारा।।
मैना हिम सुरभित सब ढंगे। पाइअ तनया गर्भ प्रसंगे।।
मास गवा नव भा दस अन्ता। चैतमास छबि पाइ वसन्ता।।
तिथि नवमी अंजरोरे पाखा। शिवा ज्योति उपजी अस भाखा।।
वर अवसर मांगा रह जोऊ। मैना मातु दीखु छबि सोऊ।।
दिव्य रूप गिरि प्रिया निहारी। करि परतीत विनय मनुहारी।।
सो छबि रूप नयन उर लाई। कह बिनु शिशू कौन सुख पाई।।
कहि तथास्तु जगदम्ब भवानी। बनि नव जात रुदन मुख ठानी।।

हिमे गृहे तनया जनमु, सुनि चलु मंगल गान।
सुमन वृष्टि सुर गण करिय, कौतुक बाल समान।।104।।

नील सरोरुह कान्ति समाना। छबि अनुपम तनया हिमवाना।।
मंगल गाइ विनय सुर करहीं। बनचर बिना बैर गिरि फिरहीं।।
सुख शत पूत जोन हिम छावा। तनया जनमि तिते बड़ लावा।।
छटा शरद ऋतु जथा मयंका। सो शोभा मैना मुख अंका।।
तनया बढ़इ दिव्यता हिम घर। जिमि बाढ़इ भादौं जल स्तर।।
वेगि पसरु तनया प्रभुताई। हिमे देव मुनि विनवत आई।।
वेदाचार लोक उपचारा। अनुसारे नामे संसकारा।।
पराशकति कालिका भवानी। नाम करण मुनि देव बखानी।।
अरी उमा कहि मातु पुकारी। पार्वती कुल बन्धु उचारी।।
तनया गृह सुनु आपु प्रभूता। संस्कार मंगल अनकूता।।
सुनि सुनि बड़ आतम सुखमानी। रहु निशि दिन पुलकित हरखानी।।
तनया बाढ़ विलक्षण अनुपम। जे देखी ते कह देवी सम।।
करि परतीत पूजि पद जोई। ते सहजइ भव विपदा खोई।।
विधि हरि सुर जब तब तहं आई। दरसिय सोचिय आगु भलाई।।
बूझि बूझि अवसर अनुकूला। करहिं फिरा नारद सुख फूला।।
विद्या संस्कार अनुदानी। करत नमन गनि जगत भवानी।।
भई सविद्या पार्वती तेस। गुण औषधि मंह आपु उपजु जेस।।
रवि शशि तेजवन्त बनु आपू। तेस विद्या बल उमा प्रतापू।।
विगत बालपन होत सयानी। देखि मुदित हिम सुर जग प्रानी।।
देखन्ह शिव विवाह कै चिन्ता। गा नारद मन व्यापि अगन्ता।।

वीणा धारी एक दिन, हिम गृह पहुंचेउ आइ।
हिम पाइअ आदर करिय, दइ आसन बैठाइ।।105।।

दैहिक लक्षण रेख निहारी। लगे भविष्य कथन मुनि चारी।।

मुनि पद पूजि हिमे सुख मानी। पाइ आगमन धन्य बखानी।।
लागी होन परस्पर बाता। दूजे एक हेतु कुशलाता।।
मुनि आगमन हाल भै जारी। मैना निकसी सहित कुमारी।।
नारद चरन लागि प्रनामा। कीनेव सकुल मुदित हिम धामा।।
मुनि नमनेउ लै बेटी नामा। मन भा होत योग्य शिव वामा।।
कर जोरे हिम भाव विभोरे। बोलि परेउ लखि तनया ओरे।।
मुनिवर तुमहि ज्ञात त्रिकाला। छिपा न कुछ जानत जग हाला।।
बड़ सर्वज्ञ लोक उपकारी। कहु तनया गुण दोष विचारी।।
घर वर कथहु मिलै केहि ओरी। बा बड़ि भाग्यवान प्रिय छोरी।।
सुनि नारद मन ढेर सुहावा। सोचु हरखि हरि हित जेहि आवा।।
तनया अंग विलोकन लागे। अन्तर नमन भाव अनुरागे।।
दैहिक लक्षण रेख निहारी। गहि गदोरि मुनि भाग्य उचारी।।
ब्रह्म तनय करि ऊपर नैना। कह सुनु शैलराज अरु मैना।।
भांति कला शशि तनया बाढ़ी। शुभ लक्षण हर विपदा गाढ़ी।।
माता पिता कीरति यश दाई। परम साध्वी सुर सुख दाई।।
करहीं पुर तीनउ सेवकाई। अस कर रेखा लक्षण ताई।।
कह नारद इक दीखु विलक्षण। लागइ जौन तुमहिं न अच्छण।।

कन्या पति योगी निकल, निर्गुण मातु न बाप।
नंग धड़ंग अमंगल बेशे, ख्याल न निज प्रताप।।106।।

सुनतइ हिम मैना मने, व्यापु विशद सन्ताप।
पर कन्या मन मुद बनेउ, जानि आपु वर माप।।107।।
कुल के भाव विचार बुझि, पुनि नारद कह बैन।
हाथ रेख ब्रह्मा लिपिक, शैलराज सुनु मैन।।108।।
नाही मने गलानि करु, सो मिथ्या न होइ।
पर उपाइ इक दीखु हम, कन्या करु अब सोइ।।109।।

शिव समर्थ अवगुण दुख हारी। हित भागीरथ गंग उतारी।।
करि तप मांगु जे जौन सो पावा। कहि औढरदानी जग गावा।।
तुम जानत सो दीन दयाला। प्रवर्तक सोई मह काला।।
निर्विकार वसुधा उपकारी। जाइ शरण तिन सुता तुम्हारी।।
भगति विलोकि दोष हर लेहीं। करि परतीत जानुं भल एही।।
नाहि लोक कोउ दूज उपाई। कहि नारद निज बीन उठाई।।
हिमे प्रशंसत आशिष साथा। भजत नाथ गै बढ़ि मुनि नाथा।।
गहि तनया कर फेरत गाते। चिन्तित भयो दोउ करि बाते।।
जेहि विधि बनइ उमा हितवन्ता। काज करन्ह बा सोइ अगन्ता।।
प्रविशि भवन गृहि कारज लागे। सोचि वचन मुनि चिन्ता आगे।।
पार्वती मुनि वचन नुसारे। शिव तप हेतू मन प्रन धारे।।
चिन्तन चिन्ता कन्या ब्याहे। हिम ते बड़ मैना उर दाहे।।
बीते दिवस गये दुइ चारी। पति ते मैना बैन उचारी।।
नाथ मुनीश वचन सम शूला। पर करु उमा व्याह अनुकूला।।
जौ न ब्याह करु तनया जोगे। जड़ कहि हंसहि चराचर लोगे।।
सब विचारि पति करहु विवाहा। जिते न उपजइ कुल मन दाहा।।
प्रान पियारी उमा हमारी। बिनु जोगे वर रखब कुंआरी।।
अस कहि चरन शीश धरि मैना। नीर धार ढुरकावत नैना।।
हाथ लगाइ उठावत गाता। प्रीति सहित बोले हिम बाता।।
विधि विवाह जोउ लिखेउ लिलारे। प्रिया न तेहि कोउ मेटनवारे।।
दीन्ह जेई रचि उमा अनूपा। रांचहि सोई वर अनुरूपा।।
झूंठ न होई देव ऋषि बानी। तजु संशय मानहु मन रानी।।
पर चलु मानि मुनीश सलाहा। भले सुता सन परम उछाहा।।
आन उपाइ न दोष दुरावन। शिव तप तनया देहु सिखावन।।
सकल दोष दुख दुर्गुण हारी। दीनबन्धु शंकर त्रिपुरारी।।
तर्क वितर्क बिसारहु शंका। पाइ शरण शिव हतहिं कलंका।।

संयोगन ते ताहि पल, गई उमा तहं आइ।
बूझि मातु ममता दरद, बोली वचन सुनाइ।।110।।

सुनहु मातु देखेउं सपन, वृद्ध विप्र इक आउ।
उपदेशेउ सो मोहि अस, शिव तप हेतू जाउ।।111।।

सोऊ मातु करन्ह मन भावत। पर भय लाज कहन्ह सकुचावत।।
पति हित हेतु लिखा जोउ माथे। बिना किहे सो मिलइ न हाथे।।
तनया नीति मने दोउ भावा। पर मैना मन पीर जनावा।।
वदन कुमारी कोमल ताई। तप सम कठिन न आन लड़ाई।।
बन पठवत दुख उपजु अपारा। भाखत मैन नैन जल धारा।।
देखिय उमा मातु करुणाई। बोलि वचन साहस बल लाई।।
मातु जन्म देई कर्म हमारे। सुख दुख रूप बनइ संसारे।।
समय स्थिती कुल अनुकूले। चलिय तीय पावहिं नहि शूले।।
नारी धर्म सहित तप ध्याना। सहनशीलता धीरज ज्ञाना।।
जे इहि ते बिछुड़न प्रीताई। सफल न ता तहं मातु सहाई।।
मातु नाहि तप सम बल आना। निश्चय देहिं शंभु वरदाना।।
उतपत्ति रक्षक बनि दुख हारी। तपे काल करु शिव रखवारी।।
तनया वचन सुनिय महतारी। भा भरोस मन दृढ़ता भारी।।
सुरन्ह सुना जे ते हरखाई। आश जौन सो नेर जनाई।।
हेतु बिदा करि मातु सिखावन। हिमे कहिअ जो करि ऋषि गावन।।
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी। जपि गायत्री शिव चित धारी।।
महामंत्र पंचाक्षर साथा। जहां तहां रह दोष न पाथा।।
रेख हाथ का भाग्य बदलहीं। जाहु सुता वेगिय हर मिलहीं।।

चलिय उमा तप हेतु विधि, विकल भवा परिवार।
शिव अर्चन तप ज्ञान विधि, सुर मुनि आपु उचार।।112।।
विजया जया सहेलि लै, कुल आयसु अनुसार।
शैल शिखर श्रृंगतीर्थ महं, तप हित आसन डार।।113।।
देख रेख हिम करत रह, सुता व्यवस्था हेत।
साधन सिद्धि साधना थल, रचि हरखन वृष केत।।114।।

उर धरि उमा प्रानपति चरना। विपिने मुदित लगी तप करना।।
जानइ लोक हेतु चिन्ता पति। पर पर्वत पितु सुता पार्वति।।
पाछिल भरम वियोग विदारन। सहित विश्व जन नीति सुधारन।।
देखइ तासु दृष्टि जग जोई। सकै बूझि जग न सब कोई।।
जग जानइ हेतू त्रिपुरारी। गई विपिन गिरिराज कुमारी।।
हतइ तपोबल सर्वस खामी। रहहीं मुदित तीन पुर स्वामी।।
पर गिरिजा तन न तप योगे। रहिं सुकुमारि तजिय गृह भोगे।।
सर्वस भूलि तपो मन लाई। अन्तर नव अनुराग उगाई।।

साग पात आहार अस्वादा। साधिय व्रत उपवासन्ह ज्यादा।।
सूखे बेल पात बलबूते। जग जननी दिन गयउ बहूते।।
अनुष्ठान गायत्री मंतर। साधिय जौन बसइ शिव अन्तर।।
पंचाक्षर निज अन्तर बोई। जेहि ते सकइ लोक दुख खोई।।
सहसन बरस कीन तप भारी। हेतू संगति जग दुख हारी।।
भाव समर्पण श्रद्धा विशेषा। चित चिन्तन इक रूप महेशा।।
मांस ओरानी तन सुन्दराई। अस्थि दिखाइ तपस्विनी नांई।।
आपु न चिन्ता चिन्ता उनकी। भयउ जनम सेवा हित जिनकी।।
होहिं जाहि विधि शंभु सुखारी। करहिं सोई नित शैल कुमारी।।
हरन दोष तन विपति उठाना। जगत नारि को उमा समाना।।
कीन जथा तप जगत भवानी। तेस नहि कीन धरा मुनि ज्ञानी।।

पार्वती तप देखि के, ब्रह्म वचन नभ दीन।
शिव हरखन दिन देर नहि, धरु मन शक्ति नवीन।।115।।
दुख देखिय पितु चाह करि, लै चलु गृहे लिवाइ।
करि हठ त्यागेउ नाहि तप, मानेउ जौन बताइ।।116।।
सुनिय उमा पुलकित भईं, कहेउ सूत तेहि ढंग।
जिमि प्यासे मुख नीर परु, नर्तक शब्द मृदंग।।117।।
विश्व बालिका बालपन, जीवन कै निर्मान।
बनु कैसे अनुकूल पति, कीन उमा संधान।।118।।

जब ते शिवा आपु तन त्यागी। भा मन शिव बनि अहउं अभागी।।
योगी पाइ वियोग विशेषा। परि प्रकृति चिन्ता चित देशा।।
बस मर्यादा परन निबाहत। नाना शक्ति साधना गाहत।।
देव संस्कृति शक्ति साधना। करन्ह प्रखर रह दोउ कामना।।
जगती मनुज भूल भ्रम टारन। तपहिं शिवा शिव लै निज कारन।।
सुरन्ह सुधारन असुर संहारन। देन शक्ति भव शकति वतारन।।
बहु दिन शंभु तपे कैलासा। निज तप शक्ती विश्व विकासा।।
जेहि विधि जाइ विश्व कलिकाला। सो बल परसइ दीन दयाला।।
तप करि शंभु धरनि पसरावा। योग साधना बहु अपनावा।।
पर प्रकृति बिनु बनै मलीना। जब सोचइ गढ़ु सृष्टि नवीना।।
बिना शक्ति शिव शक्ती भारा। सकुचइ थामन अनुचित धारा।।
शिव सरेख त्रिदेवन्ह मांही। बिना शक्ति मन मान न पाहीं।।
रहत इते शिव मन दुःखियारा। बिनु सृष्टा को बनु रखवारा।।
बनु सन्तति विलून बिनु माता। होत भले पितु रूप विधाता।।
एक दिवस अवसर अस आवा।। गिरि ते शिव मन बहु अकुलावा।।

सोचेउ चलउं दूज कोउ ठांऊ। ब्रह्म लीन आनन्द मनाऊं।।
रह जीवन उद्देश्य अनन्ता। होन पूर सब करि शिव चिन्ता।।
करन्ह तपोबल आपन भारी। गंग वतारन तीर्थ पधारी।।
संग गये लै सेना पूरी। बाधा रक्षण विवश सदूरी।।
नन्दी आदि प्रमुख बलशाली। जे न कबहुं शिव आयसु टाली।।
पहुंचि महेश तपो मन लाये। योग वियोग भाव बिसराये।।
जेहि विधि होइ लोक हित ढेरा। सो जप तप शिव गह इहि बेरा।।
लागि समाधि ध्यान मन बूड़ा। तब लौं फाटि परा इक कूड़ा।।

कठिन श्रम तप कारने, स्वेद टपकु शिव माथ।
गिरत धरनि शिशु रूप बनु, खसकि थामु शिव हाथ।।119।।

कुछ पल सोचु होहिं रखवारू। विविध भाव बनु आग पछारू।।
पर नुभूति भै बाल समाना। विस्मय करिय दुराइअ ध्याना।।
बाल देखि उपजा मन एही। बिनु तिय को पालइ शिशु देही।।
बाल व्यवस्था भयो जरूरी। पर रह शिव सन्मुख मजबूरी।।
वसुन्धरा शिव मन पहिचानी। धरि तिय रूप तहां प्रगटानी।।
बाल भार निज गोद उठाई। शिव स्वतंत्र कीन्ही तप तांई।।
आगु नाम परु भूमि कुमारा। भौम ग्रह कह तेहि संसारा।।
करु जे लोक धरनि सेवकाई। रहु मंगल तेहि सदा सहाई।।
पुनि सहेजि सेवक गण शंकर। ध्यान लाइ करि अनुष्ठान वर।।
बैठे तीन लोक पति भूपा। योग समाधि लगाइ अनूपा।।
भा तेहि काल असुर इक तारक। भुज प्रताप बल सृष्टि बिदारक।।
सुर गण भे तेहि पीर दुखारी। हेतु निवारण विविध विचारी।।
जाइ विरंचि भवन दुख गावा। सोचि बूझि सो जतन बतावा।।
शिवम शुक्र सुत लड़इ न जबलौं। तारक वधन लिखा न तबलौं।।
इतै शिवा शिव तपत अगाधा। को कराउ परिणय बनि बाधा।।
बनि सहाइ ईश्वर तब जाहीं। पठवहु काम जाइ शिव पाहीं।।

सुरन्ह सुझाइअ विधि कहेउ, तब हम शंभु मनाइ।
परिणय उमा ते लाइ पुनि, देब तनय उपजाइ।।120।।
सुरन्ह मने भावा बहुत, काम विनय सब कीन।
देव हितारथ काज गनि, काम चलेउ शर लीन।।121।

सब विधि सोचि काम मन चलई। शिव विरोध नहि आश कुशलई।।
परहित सुरन्ह असुर संहारन। होइ मरन तौ गनु तन तारन।।
जग निन्दा न करै कोउ खानी। सो पथ चलब काम भल मानी।।
चला ओर शिव सेन समेता। करत जहां बड़ तप वृष केता।।

उपजइ बार बार मन सोई। करि शिव बैर जात सब खोई।।
दक्ष यज्ञ तक बनिय विध्वंसा। जीति सकै केस तेहि मम मनसा।।
जाइ टारि कहं विधना अंका। काम गवा चलि मनेउ ससंका।।
जेहि गिरि विपिन शंभु तप लीने। तहां कामु रचु कृत्य नवीने।।
नारि पुरुष नर तीय लोभाने। जल थल चर सब आपु भुलाने।।
जप तप संयम व्रत उपहासा। भाग न लाग काहु प्रयासा।।
शिवगण तक भूले निज काजा। तजि पहरा को कहां बिराजा।।
सब मन प्रबल काम अभिलासा। जेहि देखा ते मिलहिं हताशा।।
बन तरु गिरि सरिता जल बाढ़े। उथले जेस परु झोंका गाढ़े।।
दीखि न जाइ सचेतन करनी। घरी काल का जड़ गति बरनी।।
कथु कामी कै कौन हवाला। दानव देव भूत बैताला।।
योगी सिद्ध तपस्वी जेते। भयो काम बश नहि सुधि चेते।।
रहा न काहू मन मति धीरा। भये सब कौतुक काम अधीरा।।
मदन मुदित जग खेल निहारी। चलि धीरे गा लग त्रिपुरारी।।
दीखु शंभु तन व्यापु न माया। भा भय पीछ न होब सुहाया।।
लाग पठावन काम बयारी। सोचि तबै जागइ त्रिपुरारी।।
पठइअ काम अगिन संतापा। पर शंकर तन एक न व्यापा।।
काम कांपि फिरि भाग पछाड़ी। अवसर बूझि छिपा इक झाड़ी।।

आड़ पाइ मन काम के, साहस उभरु नवीन।
लेब भागि शर मारि इक, दीखि न सकु तप लीन।।122।।

होनी प्रबल मेटि नहि जाई। उपजइ नीति आपु तेहि नांई।।
काम अंध जेस सबै बनावा। सो फल विधना बेगि चखावा।।
छण भर भूल शंभु प्रभुताई। लीन्ह काम शर धनुष चढ़ाई।।
मारेउ तेहि त्रिशूल करि छारा। काम क्रोध करि पुनि ललकारा।।
दूसर बान सरासर ताने। भांति सोई निज काल जगाने।।
खैंचि कान तक कोप समेता। हनेउ जगावन सो वृष केता।।
काम प्रयोजन तब कुछ सफले। ध्यान वियोगी गै बनि अमले।।
सुर हित थोर पाप भै ढेरा। जागि शंभु त्रय नयन उबेरा।।
गयउ काम जरि तृन समाना। भवा न यह कछु शंकर ज्ञाना।।
हाहाकार सुरन्ह प्रगटाई। विनवत शिव सन खबर जताई।।

शिव क्रोधागिन ज्वालबनि, करि धूं धूं उठु जोर।
उड़इ गगन मा भांति लौ, फिरन्ह लाग चहुं ओर।।123।।
सुरन्ह डेराहीं देखि सो, भा मन प्रलय नेरान।
सुर विरंचि मिलि धाइ सब, आये शंभु ठेकान।।124।।

रति विलाप देवन्ह व्यथा, विनवत ब्रह्म सुनाउ।
कहेउ नाथ जगि सोवनहि, सम सेवक अपनाउ।।125।।

।। नमस्तेऽस्तु महादेव नमस्ते परमेश्वर। ब्रह्मणे विश्वरूपाय नमस्ते परमात्मने।।

यं योगिनस्त्यक्त सबीज योगा, लब्धा समाधिं परमार्थभूताः।
पश्यन्ति देवं प्रणतोऽस्मि नित्यं, तं ब्रह्मपारं भवतः स्वरूपम्।।
न यत्र नामादिविशेषक्लृप्ति, र्न सदृशे तिष्ठति यत्स्वरूपम्।
तं ब्रह्मपारं प्रणतोऽस्मि नित्यं, स्वयम्भुवं त्वां शरणं प्रपद्ये।।
यद् वेदवादाभिरता विदेहं, सब्रह्मविज्ञानमभेदमेकम्।
पश्यन्त्यनेकं भवतः स्वरूपं, तं ब्रह्मपारं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।
यतः प्रधानं पुरुषं पुराणो, विवर्तते यं प्रणमन्ति देवाः।
नमामि तं ज्योतिषि संनिविष्टं, कालं वृहन्तं भवतः स्वरूपम्।।
ब्रजामि नित्यं शरणं गुहेशं, स्थायुं प्रपद्ये गिरिशं पुरारिम्।
शिवं प्रपद्ये हरमिन्दुमौलिं, पिनाकिनं त्वां शरणं व्रजामि।।

ब्रह्मादिक सुर विनय सुनि, शंभु कोप करि शान्त।
मिलि सबही कह देव दुख, रति विलाप वृत्तान्त।।126।।
सुरन्ह सान्त्वना दीन्ह शिव, पुनि रति पति वरदान।
सुरन्ह बिदाई दीन्ह करि, आपु लगाइअ ध्यान।।127।।

सुरन्ह विवेक न चलु चतुराई। काम जारि फल एक न पाई।।
जहं रह जो जेस रहिगा वैसे। चिन्ता भले बाढ़ि सम भैंसे।।
पर तप पार्वती अनकूता। रह कठोर दिन चलत बहूता।।
ज्यों त्यों तपसिन बढ़ै साधना। त्यों त्यों हर उर उपजु यातना।।
गयउ हीलि चतुरानन आसन। शेष डिगे धरनी लगि कांपन।।
भै हिम डगमग ऋषि मुनि संगा। ठहरि गये रवि शशि जल गंगा।।
भयउ धरा नभ हाहा कारा। मिलु न भेद सब बहुत विचारा।।
दीनदयाल कृपालु पुरारी। भक्ताधीन भगत भय हारी।।
तिन समाधि आपुहि बगलानी। जागे सुर हित चिन्ता सानी।।
शक्ति चाह भै थिरता भागी। करन्ह तपस्विनी देह सुभागी।।
ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाये। लै विष्णु शंकर लग आये।।
दै आसन अखिलेश जुड़ाने। सबक प्रशंसा पृथक बखाने।।
पूंछेउ बैन शंभु मन भावन। कारन कौन करिय सब आवन।।
कह विष्णु तुम अन्तरयामी। जानत लोक कहां का खामी।।
कहं के चाह तुमहि का चाही। अस पूंछत जैसे कोउ राही।।
बिनु परिणय तिथि पाइ तुम्हारे। सुर नर मुनि सब लोक दुखारे।।
सबै उछाहिल देखन एहू। काम जरे चिन्ता सब केहू।।
मानिय पार्वती पति रूपा। करत हिमे तप अतुल अनूपा।।
ताहि तपे धरनी नभ हाले। होइ न थिर बिनु कृपा कृपाले।।
सृष्टि व्यवस्था पाइ विषमता। जबलुं न दीख तीन सुर समता।।
तुम सब जानत जानन्ह वारे। पूंछत कारन काह पधारे।।
दीन दयाल देव हितकारी। दर्द दुराइ करउ स्वीकारी।।

विधि विष्णु विनती बैन, शंकर लाग पियार।
मानि देव हित मानि लेइ, दया सिन्धु त्रिपुरार।।128।।
देव दुन्दुभी बाजि नभ, करि ऋषियन पहिचान।
आवन लागे द्वार शिव, करन्ह जयति गुणगान।।129।।
सबल समर्थ सुयोग्य बुझि, सातों ऋषि के वृन्द।
नेर पाइ भाखे वचन, शिर जाके दुइ चन्द।।130।।
गौरी शिखरे शैलजा, बैठि घोर तप लीन।
बूझहु तप उद्देश्य का, चित आपन केहि दीन।।131।।

.ऋषि सातो शिव पद शिरनाई। लै आयसु निज पथ अपनाई।।
होइ ब्याह शिव पसरी बाता। भवन फिरे सब मन मुद गाता।।
पहुंचेउ पार्वती तप धामा। झुकि सातों ऋषि करिय प्रनामा।।
दरसि उमा मन उपजा एहू। भयउ सफल जेस मोर सनेहू।।
बूझिय पार्वती तप घोरा। बोले ऋषिगण वचन कठोरा।।
कौन कामना तप केहि तांई। दिव्य देह दुख देइ लरिकाई।।
यदपि बैन ऋषि न प्रिय लागे। जानि भक्त शिव रख अनुरागे।।
गोपनीय पर नाहि छिपावा। परखि मुनीश उमा बतलावा।।
उमा भेद तप मुनिगण जानी। बोले वचन एक स्वर सानी।।

सप्तर्षि और पार्वती

धन्य धन्य गिरिराज कुमारी। धन्य विचार शक्ति अवतारी।।
बूझिय नारद ज्ञान अकूता। करिय मने विश्वास बहूता।।
पर नारद कीन्ही धुरताई। सूध जानि पथ टेढ़ पठाई।।
एक नाहि तुम अस बहु तेरे। परि फन्दे पावहिं दुख हेरे।।
तुम तनया तन तपन भुलावा। भई भूल कोउ न समुझावा।।
नंग धड़ंगे कुत्सित बेशेउ। लाज हीन चहुं फिरहि महेशेउ।।
कुल अज्ञान हीन पितु माता। मने अमंगल पथ प्रिय नाता।।
नहि योगे वर सब गुण हीना। बिनु समझे तपि तन दुख दीना।।
बा भल अबहिं बदलु मन नीता। लेहु आप करि तप फल मीता।।
कह सप्तर्षि तीन पुर गामी। जानहुं भल के केहि लग खामी।।
दइ बड़ जोर उठाइअ हाथा। ऋषि सातों बोले इक साथा।।
शिव स्थिति जेस कह ऋषि बातन। होत कोउ छाड़त पथ आपन।।
कह जेहि काल काम शिव जारी। करति चाह अस पति को नारी।।

तहं नारद ते गुन कइव, करि प्रभाव ऋषि बात।
पर नहि लागेउ अंश तिन, पार्वती उर घात।।132।।
लोक देवगण सन्त ऋषि, काम जरे अकुलाइ।
तजि विवेक मोसे कहहिं, बोलि उमा मुसकाइ।।133।।
गिरि तनया गिरि भवन बसि, गिरि कारज हम कीन।
गिरि सम हठ गिरिजा धरे, गिरब न राखु यकीन।।134।।

कर उठाइ कह वचन भवानी। तुम सब कहेउ आपु नादानी।।
तुम जो कहा नीक नहि लागा। जनम जनम मो शिव अनुरागा।।
नाही जात बिना तप दोषा। करतेउ नाहि शंभु पुनि होशा।।
पुनि नहि लिखेउ ब्रह्म वर दूजा। तन मन वर गनि वर पद पूजा।।
वर पूजिअ को बनै दुखारी। वर ते काम काम नहि नारी।।
जे जग रचइ पोषि संहारै। जौ मन चाह सोई निरमारै।।
पुरुष पुरातन आपु अजन्मा। निर्गुण सगुण शकति सब तनमा।।
जगत वद्यं शंकर जगदीशा। मन वर मानि न चलु पर दीशा।।
पुरवहि आश महेश हमारे। भले देहिं दिन चारि गुजारे।।
काम जरे शिव मोहि न जारा। वर विरोध मुनि नाहि उचारा।।
हठ जेहि हेतु पाइ बिनु उनके। नहि तन तजब त्याग करि तनके।।
जाहु जाहु मुनिवर निज राहे। होहुं लीन तप मन जेहि चाहे।।
शिव स्मरण ध्यान मन लाई। बनिय शैलजा पूरब नांई।।
निश्चय अटल शंभु प्रीताई। बूझि सप्त ऋषि बड़ हरखाई।।
करत नमन आशीष सुनावत। चलेउ ऋषी गण बहु सुख पावत।।

होहिं मनोरथ सफल तुम्हारे। तप तनया करि जेहि चित धारे।।

उमा योग तप भाव हठ, प्रीति स्वभाव विचार।
वर शिव ते ऋषियन कहेउ, करउ ब्याह स्वीकार।।135।।
उमा दिव्यता शंभु सुनि, देखन्ह लोभ जोरान।
विप्र वेश धरि चलि पड़ेउ, हम तुम लोक समान।।136।।
रहा न साथे दूज कोउ, वस्तु न कोउ उपहार।
भले परीक्षा नाम रह, पर तन छटा निहार।।137।।

शिव द्वारा पार्वती परीक्षा

बनि तन बूढ़ विप्र छबि धारी। लिये दण्ड छत चलु जट धारी।।
लागि न देर पहुंचु तेहि ठांई। उमा धूनि जेहि ठांव सुहाई।।
चन्द्र कला छबि जबै विलोके। भा मन बा जेस लायक मोके।।
बाढ़ि प्रीति मन पाउ उछाहा। भाव प्रगट करि ठहरन्ह चाहा।।
उमा देखि आश्रम द्विज आवा। तपसी तेजस्वी तन पावा।।
लाग पूर्वज गात नुहारा। चाहत ठहरन्ह देत विचारा।।
जौन उचित कर्त्तव्य नुशासन। गिरिजा कीन्ह व्यवस्था आपन।।
पद पूजिअ दीन्ही शुभ आसन। सादर करिय कुशलता बातन।।
कहु आवन कारन ब्रह्मचारी। लागत जेस कोउ सुर अनुहारी।।
फिरउं तीन पुर विप्र सुनावा। जेस जो हित करु तहं तेस गावा।।
रहेउ जात इहि बड़ प्रिय लागा। इतेउ करिय ठहरन्ह अनुरागा।।
कह द्विज भाखु समस्या आपन। समाधान करि चलुं पथ आपन।।

तुम बतराउ मातु पितु नामा। लगु तन तपसी बड़ केहि कामा।।
आयु किशोरी बाल न वृद्धा। चाह कौन या करु कुछ सिद्धा।।
दरसे नाहि लगै अनुमाना। जिते प्रीति का तासु ठिकाना।।
बीतहिं विपिन केसस तरुणाई। सब अदभुत तुम संग समाई।।

एक दूज ते नाहि कम, परम तपस्वी दोउ।
होत परीक्षा तासु कै, जे जग स्वामी होउ।।138।।
विप्र वचन गिरिजा सुनिय, बुझि सर्वज्ञ निधान।
निज पाछिल वृतान्त कह, मानि होइ समधान।।139।।

सुनहु विप्र कह उमा भवानी। दक्ष सुता पिछ जगत बखानी।।
शिव पति रूप रहेउ तिन संगा। देखि राम भ्रम भा बहु ढंगा।।
पति संकल्प कीन मन मांही। गनु न तीय बिनु भरम नशाहीं।।
अवसर ताहि गयउं पितु भवना। दुख भा सुनि पति निन्दा श्रवना।।
योग अगिन आपन तन जारा। पाइ हिमे घर जनम दुबारा।।
सो पितु मातु उमा परु नामा। दोष निवारन रचु तप धामा।।
जेहि विधि मिलै शंभु पति रूपा। सो तप ध्येय सुनहु बुधि भूपा।।
सुनि गिरिजा वाणी ब्रह्मचारी। मन करि सुलझि समस्या सारी।।
पर कह मैं बड़ अन्तरयामी। सखि ते लगेउ भरावन हामी।।
फिरउं तीन पुर छिपा न मोसे। को कितना भल को कत दोषे।।
पुनि भै भूल बिगड़ु कछु नाही। विधि हरखे पहुंचेउ इहि ठांही।।
जौ मोसे तुम करि विश्वासा। तौ हम भाखि बतांउ खुलासा।।
तुम पति रूप मने जेहि मानी। देति कठिन दुख इहि जिनगानी।।
जारि काम सो बनेउ विरागी। आश न करु बनिहंइ अनुरागी।।
दिव्य रूप तुम शैल कुमारी। सो औघड़ी स्वरूप भिखारी।।
रहत अलंकृत तुम संग लाजा। सो तन भस्मी फिरत अलाजा।।
तुम सुन्दरता रूप न आना। लोह रूप सो बशत मशाना।।
ज्योति रूप तुम कंचन काया। सो तन जर्जर वृष मन भाया।।
तुम गल सोह रतन मणि हारा। गल तिन नाग करैं फुंफकारा।।
करि जौ वर कन्या गुण मापा। मिलै योग जीवन संतापा।।
सब विधि एक दूज विपरीता। यह जग दीखु मानु परतीता।।
मांनु वचन तू भले न काहू। लिखा न शिव संग तोर विबाहू।।
लेहू मानि कर्त्तव्य न खोवा। मां पितु दुख दै स्वयं न रोवा।।
अब ते सोचु बनावन आपन। परिणय बन्धन लाग न साथन।।

ढंग परीक्षा वर कन्या के, दीन्ह शंभु दरसाइ।
तानुसार जे करि चलै, बैर न ता घर आइ।।140।।

भांति उमा पति नेह जेहि, तप बल विद्या बाल।
उपजइ सुरता तासु कुल, बनै सबै खुशहाल।।141।।
शिव निन्दा श्रवन परत, उमा नैन भे लाल।
अन्तर उपजेव क्रोध बड़, साथे भरा मलाल।।142।।
बाधा विपदा ते भरा, विगतत बाल हमार।
आउ जे ते पति रोधकरि, पीरा देत अपार।।143।।

आउ जे ते करि शंभु बुराई। समझु न जनम मोर प्रीताई।।
भये लोक सब दक्ष समाना। सो संताप देइ विधि नाना।।
पति निन्दा जौ सुनु इक बारा। न सहि गयउ योग तन जारा।।
पति सनेह जौ रह मन वैसे। तौ पुनि पुनि निन्दा सुनु कैसे।।
नहि द्विज वधन योग लगु पापा। रहउं जियत तौ व्यथ सन्तापा।।
इहि ते प्राण देहुं तजि आपन। तप करि थकी न भाग व्यथापन।।
मनहिं उमा करि विविध विचारा। लाइ रोष मुख बैन निकारा।।
जो मैं जांनु आउ द्विज ज्ञानी। पूजिय पद भै भूल नदानी।।
जो जनतेउं द्विज बुधि गुण हीना। शिव रोधी तो रोकु कभी ना।।
लोक मिलै को शंभु समाना। आई न लाज करत अपमाना।।
अरे दुष्ट तू कह अस कैसे। का मैं नहि जानउं शिव कैसे।।
को तपसी करहीं तप यज्ञा। बिनु जाने आराध्य गुणज्ञा।।
तोहि न ज्ञान कछु शंभु प्रभूता। सम निन्दक लखु दोष बहूता।।
दृष्टि न तोर वृद्ध अनुसारा। करत प्रगट यह वचन तुम्हारा।।
कहां शंभु तन पुरुष पुरातन। लोक अजन्म अजाति सनातन।।
कारण आदि जगत आधारा। तोहि न ज्ञान कह फिरुं चहुंवारा।।
निर्विकार सो रूप मृत्युजंय। उत्पति रक्षक रखु लय पर जय।।
विश्व ताप दारिद दुख हारी। माप न प्रभुता विश्व उचारी।।
पूर मनोरथ करता धरता। बिनु शिव शरण दूरि रह सुरता।।
जहं न शिव तहं नरक बसेरा। कलुष कलह अज्ञान घनेरा।।
विश्व वंद्य शंकर त्रिपुरारी। जे न जांनु ते मूढ़ अनारी।।
मैं तपसिन पूजिय शिव द्रोही। लाग पाप चिन्ता बड़ वोही।।
कारन तोरे त्यागब प्राना। मिलै न मोको दूज निदाना।।
मंगल काज अमंगल लायउ। करि शिव निन्दा मोहि सतायउ।।

कुपित उमा अस बैन कह, सखिन्ह इशारा कीन।
विप्र दूरि इहि ते करहु, होब अगिन लवलीन।।144।।
नाही नाही विप्र कह, सखिन्ह चली करि दूरि।
तब लौं गिरिजा गिरु अगिन, सो बुतानि बनु धूरि।।145।।

दिव्य स्वरूपा पार्वती, लगी उठन्ह नभ ओर।
विप्र वेश शिव रूप बनु, वचन कहा दइ जोर।।146।।
जाति कहां तप पूर भै, आनन आयउं तोहि।
शान्ति लाइ धरनी फिरउ, जोहत आशा तोहि।।147।।

गई भूलि सब पाछ कहानी। भईं लाज वश उमा भवानी।।
सो सुख नाहि जाइ कछु वरना। पाइअ उमा दीन्ह जेहि धरना।।
नाइ शीश दोउ कर जोरी। लागिय चरने भाव विभोरी।।

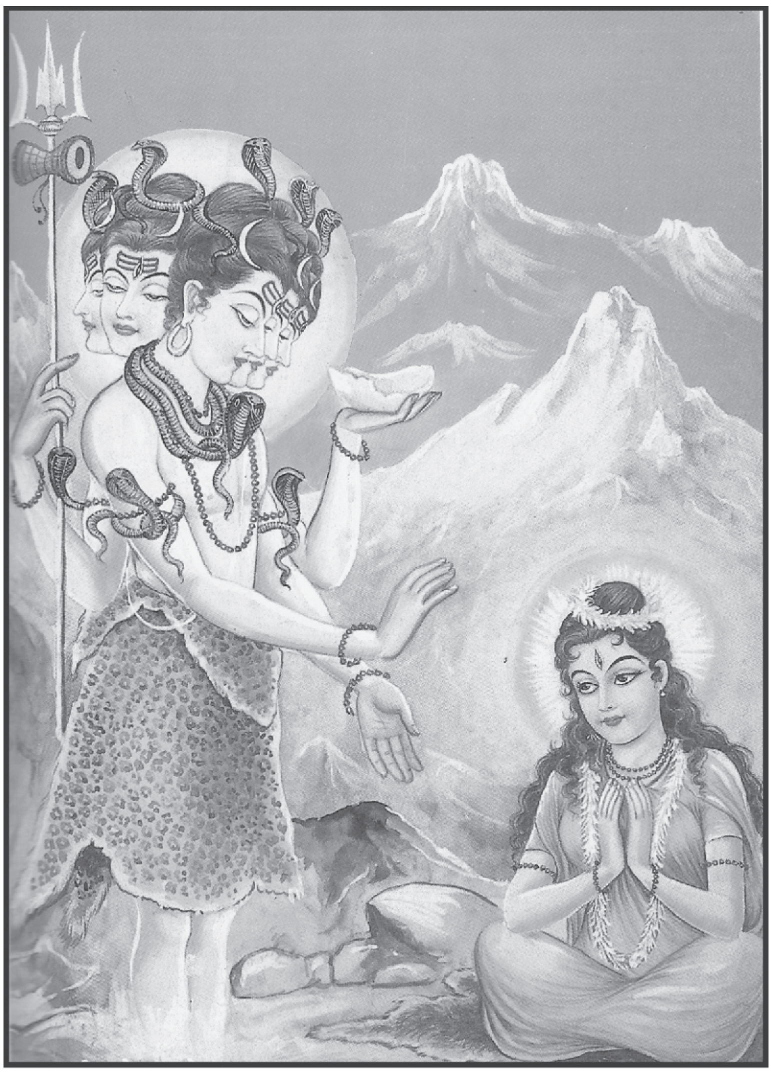

तपस्विनी पार्वती के सन्मुख शिव का प्राकाट्य

अन्तर उमड़ु प्रबल अनुरागा। सर्वस लोक व्यथा श्रम भागा।।
जागि ज्योति नव मोद अथाहा। जेस सम्पन्न कोउ चौ पाहा।।
जेहि छबि ध्यावत शैलकुमारी। सोई विलोकि बनु परम सुखारी।।
तप वर मनवर तन वर पाये। उमा हृदय सुख सिन्धु समाये।।
भयउ प्रेम वश कृपा निकेता। जगत विधायक जगती रेता।।
उमा हाथ गहि कह मृदु बानी। जाउ न मोहि तजि कतहुं भवानी।।
तुम्हरे तपबल भयउ अधीना। जेस धन दै कोउ क्रय कीना।।
जब ते दीखु देह सुन्दराई। चाह प्रबल बनु कहत लजाई।।
बिनु तुम्हरे पल लगत पहारा। सुधि न आपु जब तोहि निहारा।।
तुमहीं मोर सनातन नारी। लाज छोड़ि बनु चाह हमारी।।
लीन्ह परीक्षा नीक न कीना। तुम हमार हम तुम आधीना।।
महा साध्वी महा सयानी। बनिय लाज वश वचन ओनानी।।

पार्वती कर जोरि कह, नाथ वचन स्वीकार।
पर अस लीला नाहि करु, जिते हंसइ संसार।।148।।
पितु प्रेरन तुम दइ सकत, ऋषिन्ह यूथ पठवाइ।
लोक रीति अनुसार चलि, परिणय लेहु कराइ।।149।।
होइ सार्थक मोर तप, कटइ सुरन्ह सन्ताप।
दूषित होइ वियोग नहि, तुमहिं मांनु जग बाप।।150।।

स्वीकारो प्रभु मम अनुरोधा। यदपि न तुम्हरे वचन विरोधा।।
तुम जग भीतर जग तुम अन्तर। दीखु जानुं सो प्रीति भयंकर।।
लोक लोग सब सम सन्ताना। तिन हेतू रचु विमल विधाना।।
जेहि ते मानवीय मरजादा। होइ न कलुषित करु जग यादा।।
हम प्रकृति तुम आतम रूपा। सबके गात बसत भवकूपा।।
करु सो जाहि जगत अपनाये। सुरता उभरु सुरन्ह सुख आये।।
नट लीला धारी त्रिपुरारी। हर्षित उमा वचन स्वीकारी।।
गयउ महेश शिखर कैलासे। उमा पधारिय पितु हिम बासे।।
तप वर पाइ भयउ बिख्याता। हरखे सुर जौ भा सब ज्ञाता।।
पार्वती शिव ब्याह रचावन। सुरन्ह परस्पर कीन्ही गावन।।
कहेउ सूत सुनु सकल मुनीशा। हरखेउ देव वृन्द सब दीशा।।
आउ मोद आशा उर उपजे। लै लीन्ही चाहा वर गिरिजे।।
सकल दोष भय पीर निवारी। शिव शरणे जे बनै भिखारी।।
ताहि भिखारी रहन्ह न देहीं। आपु भले रहु भीख सनेही।।
जग सम शिव को औढरदानी। जे जेस चाह ते लह तेहि खानी।।
चाह असूया पूत समाना।। सहज बनेव तेस कृपानिधाना।।

पूत बनब यदपि कठिन, सहज सो बनु त्रिपुरार।
पति इच्छा जग कै प्रबल, करिय सो शिव दुश्वार।।151।।

तप करि उमा पती वर मांगी। भले सो वर देइ विश्व विरागी।।
सो श्रम उमा समैना जाने। आगम निगम पुराण बखाने।।
हेतु उमा सुख शिव बनि लीन्ही। पति अनुरूप वचन वर दीन्ही।।
देखिय तरुणि तीय सुन्दराई। को नहि लोभु भूलु प्रभुताई।।
शिव वर दीन्ह चाम चिकनाई। संग आकर्षण प्रबलताई।।
पुनि वरदान दीन्ह विधि नारी। बनु तुम्हार जे तुमहि निहारी।।
दृष्टिकोण जेस रहु संग जाके। तियानंद तेस मिलु तेहि आके।।
वस्तु परिस्थिति कहं आनन्दा। मिलु तेस जथा मनोमति फन्दा।।
जेहि विधि उमा हृदय सुख बाढ़े। मुख ते बैन सोई शिव काढ़े।।
काम बिनाशी काम सलीना। जग रक्षक बनु भक्ताधीना।।
साक्षात शिव पुरुष पुरातन। रूप प्रकृति उमा जग मातन।।
जो कछु कीन सो लीला कारन। बदलन्ह मानव दृष्टि विचारन।।
बिनु अवतार महेश दिखाई। जेहि विधि उभरु लोक सुरताई।।
मोहि निहारि गहहिं जन धरनी। सो शिव करिअ उमा संग करनी।।
माया मोह भरम मति टारन। शिव मति पाइ उमा अवतारन।।
होइ न जौ तिय पति अनुरागी। तौ सन्तति उपजहीं अभागी।।
उमा देह धरि पति तप लीना। तिन संतति जग के नहि चीना।।
नर नारी जेस प्रेम परस्पर। सन्तति बनु गुणज्ञ तेहि स्तर।।
तपसी सन्तति जग सुख देहीं। पीर पराइ बांटि कुछ लेहीं।।

एतै उमा इत लोक पति, करु अपने गृह बास।
मैना ते हिम बैन कह, भै पुर उमा भिलाष।।152।।
तनया व्याहे योग्य भै, तासु विवाह रचाउ।
घर वर कहं अनुकूल मिलु, कासे वचन मिलाउ।।153।।

टरै न टारे ब्रह्म विधाना। भावी होइ प्रबल बलवाना।।
दीह जे सेंदुर जासु लिलारे। सो वर मिलइ भाखु संसारे।।
बड़ श्रम तप करि उमा भवानी। लह वर सेंदुर ओढर दानी।।
सबै सुनन्ह चह शंभु विवाहा। नहि मिलु खबर सून चौपाहा।।
लोक व्यवस्था कारज भारा। तेहि काले ऋषि वर्ग संभारा।।
जौ भव बाढ़ि जाइ असुराई। जाइ व्यवस्था चरमर राई।।
स्थिति देखि ऋषिन्ह करि चिन्ता। काह न ब्याह सुनहुं भगवन्ता।।
सुरन्ह प्रेरणा वर अनुसारे। समय नुसार न ब्याह सुनारे।।
चाह जो वेगि देखि ता देरी। ऋषिन्ह मंत्रणा आपस फेरी।।

निर्णय एही परस्पर साधे। अब शिव ब्याह रुकेव केहि बाधे।।
दिन दिन धरनि पीर अधिकाई। जग सह हम सब नहि सहि पाई।।
ऋषि अकुलाइ चले हिम धामा। अलख जगाइ द्वार अविरामा।।
सुनिय मैन हिम आयउ दौरे। दरसिय मानि जथा सुर सौरे।।
पाइअ द्वार नमत शिर नाई। दइ आसन चरणामृत पाई।।
मुदित सप्रेम भईं कुशलाई। सहित ऋषिन्ह हिम मैन सुहाई।।
फिरहिं तीन पुर इहि ऋषिकूला। जानिय हिम अवसर अनुकूला।।
ऋषिवर तनया उमा भवानी। लोक विदित सो सब गुण खानी।।
ब्याह योग भै घर वर चाही। कहं ढूंढ़हु बनि जाउ सलाही।।
उमा सुखे हम रहब सुखारी। सब कुछ सोचि बताउ विचारी।।

जौन चाह ऋषियन मने, सो प्रसंग हिम गाउ।
मानि सगुन मुद ढेर भै, सुख ते हृदय अघाउ।।154।।
हिम मैना मन भाव बुझि, विधि आंका मन देख।
उमा चाह वर बूझि ऋषि, बोले वचन विशेष।।155।।

सुन हिमेश मैना सुकुमारी। दिव्य स्वरूपा सुता तुम्हारी।।
तुम कुल भिन्न अनूप तपस्या। करि सो हल करि लीन्ह समस्या।।
त्रिकालज्ञ भावी हम देखा। ब्याह उमा शिव माथे रेखा।।
सुर नर मुनि चाहत सब एही। उमा ब्याह शिव परम सनेही।।
तिन समान जग दूसर नाही। देहु सुता शंकर संग ब्याही।।
सुनि मैना प्रिय लाग न बैना। कह इहि नाहि मात पितु धैना।।
जौ देखउं तनया सुन्दराई। होइ न मन करु तितेउ सगाई।।
लोक हंसइ निन्दा करि ढेरा। जौ भांवरि बूढ़े संग फेरा।।
जानिय जड़ देहीं अपमाना। नहि कोउ सोचइ लिखा विधाना।।
देश न जाति न ठांव ठिकाना। बिन गृह कहां गृही सन्माना।।
रूप हीन सो नंग धड़ंगा। कइस उमा रहु साथ भुजंगा।।
सब विधि समरथ गिरि परिवारा। इहि ब्याहे ले सुता बधि डारा।।
शिव संग ना इक सुता नुकूले। रह कुंआरि अस ब्याह न भूले।।
सो इक नारि अगिन तन जारेउ। काम हीन जब काम संहारेउ।।
इहि अघ दोष बड़िय डर उपजे। केस रहहीं भुतहा घर गिरिजे।।
लोभ मोह कामी नहि जोऊ। परिणय तासु कटब शिर होऊ।।
मैना बैन हिमेउ मन भावा। करि मनसा शिव ब्याह बेरावा।।
आखिर अबै तौ सब कुछ बाकी। का पहलेन शंकर घर झांकी।।

अनुचित प्रतिकूलित वचन, हिम मैना अनचाह।
सुनि ऋषियन स्वर एक कह, शिव सर्वस दुख दाह।।156।।

हिम कुल को)षियों का उपदेश

कह ऋषेश सुनु हिम परिवारा। लाइ ध्यान तजि मद सविकारा।।
दोष कुरोष भाव जड़ताई। बिसरि जाउ सुनु श्रद्धा लाई।।
शिव समान वर लोक न दूजा। तरु सो लिंग ज्योति जे पूजा।।
आदि न अन्त तीन पुर रांची। जग ऐश्वर्य सोई सब खांची।।
विश्व तासु घर जन परिवारू। रांचइ रूप चाह अनुसारू।।
जारहिं काम काम निर्मानी। पाप ग्रह हर मंगल खानी।।
सो जग आतम नारि प्रकृती। हरन लोक कै असुर प्रवृत्ती।।
कह तिय ते धरु जनम दुबारा। करउं जिते भव अघ संहारा।।
घर सो तनया ज्ञात न तुम को। दोष हजार लगावत शिव को।।
उत्पत्ति रक्षक दुख संहारी। निर्गुण सगुण रूप सब धारी।।
ऋद्धि सिद्धि सुर देव कुबेरा। अनगिन करहिं शंभु पद फेरा।।
शिव रोधी सुख पाउ न कतहूं। तुम सम गिरि कुल बहु गढ़ उनहूं।।
उमा ब्याह विधि जौन बिरांचा। जाइ न तामेउ दूसर खांचा।।
जश अपयश दौरत तुम नेरे। जो मन भाउ लेहु सोई हेरे।।
उमा ब्याह करु दूज न आपन। व्यर्थ व्यथा राखत मन माथन।।
शिव ते श्रद्धा नेह नहि जब लौं। भल स्वरूप दरसन नहि तब लौं।।
मानि चलहु ऋषियन मुख बानी। तजु मति आपन समझि नदानी।।
सुर नर मुनि बसहीं हिम धामा। तप करि सिद्धि लेइ अविरामा।।
शंकर धाम सोह इहि ठौरे। अस तजि जाउ दूरि कहं दौरे।।

सब विधि शंभु उमा अनकूला। सोई विश्व हेतु सुख मूला।।
फिरि पुर तीन ठांव सुख जानी। तजि संशय लीजे इहि मानी।।
जौ नहि मनिहउं मोर विचारा। शिव विपरीते पांव निकारा।।
होहिं दूरि हिम धाम विभूती। महिमा लोक लोग लेइ कूती।।
भले पियार न लागइ बैना। पर स्वीकार करउ हिम मैना।।
सुनहु हिमेश्वर समय पुकारन। करन्ह चहत शिव लोक सुधारन।।

हिम मैना ऋषि बैन सुनि, प्रभुताई त्रिपुरार।
उमा ब्याह शिव ते करब, खुले मने स्वीकार।।157।।
भयउ मुदित गिरिवंशकुल, उपजा शंभु सनेह।
उमा मने सोचन लगिय, भयउ सफल इहि देह।।158।।
लगन पत्रिका देव ऋषि, मंगल अवसर पाइ।
रांचि थमाइअ शैलपति, आपुहि चले तकाइ।।159।।

लगन पत्रिका नेह समेता। माथ लाइ हिम धरिय निकेता।।
सकुल विचारत ब्याह प्रसंगा। दिन दुइ चार गये इहि ढंगा।।
दिशा दिवस शुभ तिथि पल पाये। लै पत्री हिम शिव गृह आये।।
आदर अतिथि भगत समताई। दइ आसन शिव नेर बिठाई।।
पुंछिय कुशलता आवन कारन। सुनि हिम बोलु श्वसुर अनुहारन।।
प्रेरन ऋषिन्ह बूझि वर योगा। चह गिरिजा ब्याहन कुल लोगा।।
ऋषियन्ह रचिय पत्रिका जोई। हिमेउ थमाइ दीन्ह शिव सोई।।
कह तुम्हार कुल जन बनि रांचे। गिरिजा ब्याह करन्ह शिव वांचे।।
तुम्हरिन चाह उमा तप कीना। बरजनवारू कहा न कीना।।
हमरिउ चाह जे आपु सनेही। पाइ शरण दुरियाव न तेही।।
खबर नाइ हम आइ मनावन। पुरवहु मन मनसा जग भावन।।
इहि कारण आंयउ त्रिपुरारी। चाहत बनु वर शैल कुमारी।।
मन ते उमा तुमहिं पति माना। का वर धर्म तुमहि सब ज्ञाना।।
तपसी तीय व्यथा भय हारन। बनु तो तइस करइ जग धारन।।
उपजइ तिय तीरथ प्रभाऊ। जौ तुम करु तौ जग अपनाऊ।।
स्वारथ सुनि मानहु तुम योगा। पाछे करहिं जिते जग लोगा।।
तुम सर्वज्ञ तीन पुर स्वामी। हेतु ब्याह लेहू भरि हामी।।

वचन विनीते शैल के, मन भाये त्रिपुरार।
जानहिं उमा बजाय जग, को करु ब्याह हमार।।160।।
पुनि जो विनवत भाव भरि, ताहि करब इनकार।
धर्म न होवत जांनु जग, अजश देइ संसार।।161।।

उमा चाह गुण तन सुन्दराई। प्रीति प्रगाढ़ महातप तांई।।

हिम विचार व्यवहार कुशलता। कुल पुनीत बड़ ब्याहे क्षमता।।
सुर हित पूरण आप उद्देशा। गनि भल करि स्वीकार महेशा।।
सुनि हिम सखन्ह सहित हरखाने। भा मन नात दमाद समाने।।
त्वरित तिलक करि अर्पण कीन्ही। मंगल द्रव्य साथ कुछ दीन्ही।।
हिमे आत्मीय साथे जोई। करि शिव तिलक पाउ सुख सोई।।
तिन समान को लोक सुभागी। जे करि तिलक महेश विरागी।।
जो सुख पाउ शैल हिमवाना। सो दुस्तर जग पाउ न आना।।
सुरन्ह दुन्दभी लगेव बजावन। नचीं अप्सरा लागी गावन।।
चहुं ते मंगल ध्वनि हिम श्रवने। लगि आवन तहं ते जब गमने।।
आगिल काज विवाह प्रसंगा। हिम बतियानेउ जेहि शिर गंगा।।
बनिय व्यवस्थित लीन्ह बिदाई। आशिष नमन जे रह जेहि नांई।।
करत ब्याह शिव पसरी बाता। सुनु जे जहां तहां हरखाता।।
बनु ते मुदित शंभु निज जानी। निज घर ब्याह बनै तेहि खानी।।
चलब बरात बजावइ गाला। गावइ मंगल रहइ निहाला।।
भूत पिशाच देव नर दानव। खग मृग तरु बन सुख उपजानव।।
शैले शिखर उपजु ज्योताई। हिम मैना देखिय हरखाई।।
आउ मने जग शंकर कूला। रही भूल सो रहु अनुकूला।।
दूज नाहि वर शंभु समाना। भला रहा गिरिजा तप ध्याना।।
लागे करन्ह विवाह तयारी। हिम मैना सम जग नर नारी।।
होत ब्याह शिव जे सुनि पावा। चलि बरात नहि भले बुलावा।।
देखन्ह लोभ सताइस सबका। भूत प्रेत ग्रह ऋषि मुनि सुरका।।
शिव नुराग सब आवन लागे। पूरब ते सब शिव लग भागे।।
यदपि महेश आमंत्रण देहीं। चहुं चलि नारदादि ऋषि जेहीं।।
पर सब जांनु ब्याह शिव आपन। थामिय काज व्यवस्था हाथन।।
शिव आमंत्रण मंगलचारा। भयउ यथावत बनु परचारा।।

होन ब्याह शिव ते उमा, करि निश्चित गिरिराज।
आमंत्रण लागेउ दियन, पत्रक भेजि समाज।।162।।

लिखि लिखि गिरिजा ब्याह प्रसंगा। देइ पठाइ सो रह जेहि ढंगा।।
जेहि जेस आवन तइस बुलावन। कीन हिमेश सनेह उगावन।।
जाति बन्धु जे रिस्ते दारा। भवा बुलावा लै परिवारा।।
सरिता शैल सिन्धु जग जेते। हिम न्योते तिन आवन हेते।।
आत्मीयता रखु गिरि जासे। ताहू न्योतेउ सहित हुलासे।।
शिव विवाह सुनहीं जे काना। लाग तिनै अश्वमेध समाना।।
अस अवसर पुनि आउ न आऊ। देखन्ह चाह सबै मन छाऊ।।

चलु ते तहं जेहि जहां बुलावा। गिरि कैलास को हिम घर आवा।।
चढ़ि विमान केउ धरनि पधारे। चहुं ते भागि अवत हिम वारे।।
दिन दिन बाढ़न्ह लागी भीरा। गिरि गिरिपति घर उड़इ अबीरा।।
परमानन्द भयउ हिमवानू। हेतु बरात व्यवस्था ध्यानू।।
हाट गली पुर नगर सजायउ। झारि बहारि अतर छिड़कायउ।।
सोचि आउ बहु ढंग बराती। ऊंच नीच भल अभल उताती।।
चुनि गिरि बन्धु करिय निर्माना। ठहरन्ह सबै योग स्थाना।।
लै गिरिपति गृह तक हिमवन्ता। लागी झड़ी प्रकाश अनन्ता।।
ध्वज पताक बहु बन्दन वारे। लागे पाक ठांव बहु ठारे।।
हिम बल बुधि जित समरथ तांई। स्वागत करन्ह उपाइ सजाई।।
मंगल सूचक सब दिशि राजे। मंगलदाई मंगल काजे।।
को तेहि नगर छटा अनुमाने। जहां उमा शिव आपु पयाने।।
मंगल भवन अमंगल हारी। आवत ब्याह करन्ह ससुरारी।।
मण्डप ब्याह रचावन तांई। हिम विश्वकर्मा न्योति बुलाई।।
सो मण्डप रचु विमल प्रकारा। जौन उमा शिव उचित नुसारा।।
लागेउ मणि मुक्ता मनहारी। मूरति द्वार पाल रखवारी।।
सहित विधाता विष्णु तांई। आसन बनेउ स्वर्ग समताई।।
बैठहि कहां देव कुल नारी। अनुकूलित आसन गा ढारी।।
ऋषियन मंच बना तेहि ओरी। जहं ते होन मंत्र ध्वनि धोरी।।
दूज बरातिन ब्याह विलोकन। आसन लागि गयउ सबहोंकन।।

शिव विवाह मण्डप समे, दूज लोक कहुं नाय।
सो अनुकरणे शिव करि, अब लौं रहत सजाय।।163।।

जथा बरात तथा जनवासा। गयउ कीन विरचन प्रयासा।।
तेहि ठांऊ निवसन शिव हेता। रचु विश्वकर्मा विचित निकेता।।
शोभा ताहि न जाइ बखानी। पुरजन गिरिजा भाग्य बखानी।।
शिव ब्याहे अस रहा न कोऊ। जेहि मन परम उछाह न होऊ।।
जे जेस रहा ताहि अनुहारे। ठहरन्ह ठांव भवा निरमारे।।
रिद्धि सिद्धि ऋषि मुनि तप तीरथ। आइ बसेउ तहं भाव भगीरथ।।
धरनि न भव कहुं हिमे समाना। देव देवि तहं करिय पयाना।।
अवसर ब्याह घड़ी जगदीश्वर। नहि क्षमता सो कथन कवीश्वर।।
विविध ढंग नाना पकवाना। करि तयार राखिय हिमवाना।।
जे जन जाती परिजन पुरजन। मीत मंत्री रह कोऊ ढंगन।।
हरखि हिमे पुर कीन पयाना। प्रीत अथाह विलोकि जुड़ाना।।
एहि विधि सकल मनोरथ करहीं। आनंद उमगि उमगि उर भरहीं।।

बड़े भाग्य विधि बात बनाई। देखन्ह सबै नयन ललचाई।।
आउ जेई गिरिजा शिव ब्याहे। देखि तरा तन सब दुख दाहे।।
प्रमुदित पुरजन शंभु बराती। गयउ बीति सब दिन इहि भांती।।
शंकर उमा ब्याह दिन आवा। रहा जौन ऋषि सोधि धरावा।।
न्योता जहां जाहि ते गयहू। निज निज करन्ह तयारी भयहू।।

लोकाचार विवाह कै, काज मंगलाचार।
होन लाग शंकर गृहे, जुटु सुर ऋषि परिवार।।164।।

कृष्ण त्रयोदशि फागुन बेला। ऋतु वसंत सुख सब मन खेला।।
मंगल मूल लोक सुखदाई। सकल अलौकिक सुन्दरताई।।
आपु प्रकृति रचिय शुभ अवसर। जौ जानिय बनहीं शंकर वर।।
नारदादि ऋषियन कुल जेते। आयउ शिव घर वंश समेते।।
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू। देखन गिरिजा शंभु विवाहू।।
विधि विष्णु चढ़ि आप विमाने। लै अध अंगी गै शिव ठाने।।
तिनहहिं देखि सब सुर नर नारी। हरखे पसरी शुभ उजियारी।।
आपन आपन बेश निहारी। जो न लाग भल ताहि संवारी।।
सुरन्ह सुमंगल अवसर जाना। सुमन गिराइ बजाइ निसाना।।
सकल अमंगल मूल नशाहीं। जासु नाम धरि मन मुख मांही।।
करतल होइ पदारथ चारी। बनन्ह सो दूल्हा करत तयारी।।
तट जे आइ ते शिव समुझावा। तू कुल मोर अगार सजावा।।

शंभु संवारन जुट गई, सप्त मातृ का संग।
भूषन बसन सिंगार करि, जौन ब्याह प्रसंग।।165।।
बाजि बीन नाचन लगे, ऋषि मुनि देव समेत।
जब दूलहा लागे बनन्ह, जग पति कृपानिकेत।।166।।

सोह नयन त्रय तिलक स्वरूपा। लटके सर्प कुण्डलन रूपा।।
गंग मौर शिर चमकन शशि के। सो उपमा जग दूज न केहु के।।
अंग भसम गा बनि सम चन्दन। उपजु दिव्यता पसरिय महकन।।
शंभु मगन बनि सो सब धारी। अवसर ब्याह जो प्रिय नर नारी।।
ब्याह विभूषन विविध बनाये। सब मंगल सब भांति सुहाये।।
बरनत शिव शोभा सुन्दराई। को जग कथु शारद थकि जाई।।
नाचै शिव गण विविध प्रकारा। नन्दी उछरि करै किलकारा।।
न्योतु जे आउ ते लह बड़ सेवा। फल पकवान खाइ मृदु मेवा।।
सुर गन्धर्व नाग नर नारी। करत नृत्य शिव धाम पसारी।।
जे जेस तइस पाउ सनमाना। पाइ परम सुख सबै सुहाना।।
शंकर सबै मानि चलि आपन। मांनु सबै शिव पुरुष पुरातन।।

जेस दूल्हा तेस सजिय बराता। बड़ कौतुक सब मन हरखाता।।
शिव विवाह अघ नाशन कारी। परम सुखद भव मंगल धारी।।
जिन देखा तिन आपु सराहा। सुनु जे श्रवन सुखी चौपाहा।।
ध्यान धरे उतरै नर पारा। अदभुत महिमा विविध प्रकारा।।
ऋषि समुदाय विवाह करावन। आपुहि वेद कीन तहं आवन।।
किन्नर यक्ष नाग गन्धर्वा। करहीं मुदित गान मिलि सर्वा।।
आगम निगम पुराण सिधाये। मानस ब्रह्म पुत्र सब आये।।
हा हा हू हू बोलन वारे। नाचि उठे चलि चहत अगारे।।

वेदचार उपचार विधि, गृह कर्मठ करवाइ।
भै निवृत सुर संत कुल, दूलहा शंभु बनाइ।।167।।
नाच गान बाजा बजे, उत्सव सुख अनतूल।
लै बरात नन्दी चढ़िय, भै शिव व्याह नुकूल।।168।।
प्रस्थान शंकर करिय, लै बरात हिम ओर।
जटामुकुट शशि गंग रह, सोहत सम शिर मोर।।169।।
नील चिन्ह रुद्राक्ष गल, तीन नयन त्रिशूल।
कुण्डल केयुरहार संग, वदन अलंकृत झूल।।170।।
वृष वाहन नन्दी सहित, नाना गण संग सोह।
सबै संग लै चलि पड़ेउ, करत जहां हिम जोह।।171।।

बिदा बरातिन लोका चारा। भा विधिवत भांती संसारा।।
बनि बरात आगे अगुवानी। धाईं सगुन कलश कल्यानी।।
नाचत गावत मगन अनन्दा। परइ दिखाइ चराचर वृन्दा।।
भूत प्रेत नाना खल योनी। सब भूले मति नीति घिनौनी।।
सुर मुनि साधु सन्त रह जेते। सम अगुवा चलि आउ अगेते।।
निज निज भूषन बसन संवारे। मने न काहू मोर बेकारे।।
जहं जे तहं ते परम सुखारी। जानि बराती करु किलकारी।।
हिम घर पहुंचन समय नुकूले। गयउ सबै बंधि इहिअ वसूले।।
अवसि देखिअय देखन्ह योगू। शिव बरात हर शोक वियोगू।।
दिन परिणय शिव संग भवानी। बड़ पुनीत श्रुति शास्त्र बखानी।।
नारदादि सुर वृन्दन प्रेरेउ। कह रति ते अब चलु शिव नेरेउ।।
करन्ह व्याह शिव कीन तयारी। मांगु तुमहुं पति बनि दुखियारी।।
इहि अवसर शिव होहिं सहाई। जौ तोहि ते मांगत बनि जाई।।
सुरन्ह वचन रति मन अति भावा। बनि सभीत शिव नेर सिधावा।।

हाथ जोरि रति कहन्ह लगि, हे जग के शिर मौर।
बनि वर अब तो देहु वर, जांउ कहन्ह केहि ठौर।।172।।

बाजहिं ढोल भेरि मृदंगा। नाचहिं अगन अप्सरा संगा।।
को न होइ जेहि मन न उमंगा। गै बनि अवनि धरनि रस रंगा।।
विरचइ निशि दिन पति भू संगा। सब सुख बरसु फुहारन गंगा।।
दुखी न बैरी कोउ कोउ ढंगा। ऋषिन्ह रचहिं प्रभु व्याह प्रसंगा।।
बहत दसों दिसि ते मदु पवना। बरसत पुष्प हिमालय भवना।।
मैं रति काम देव पति मोरे। सुरन्ह हेतु प्रभु पर शर छोरे।।
प्रभु प्रताप आपुहि भै छारा। पति वियोग दुख पाउ अपारा।।
कीन्ह विनय दीन्हेउ वर मोका। जीवित करब तजहु मन शोका।।
सकल मनोरथ पूरण काला। ब्यापा देखउं विश्व निहाला।।
पति वियोग दुख भयउं दुखारी। अस कहि रति नयने जल झारी।।
लागि चरन नहि उठइ उठाये। सबै सुरन्ह मिलि शंभु मनाये।।
शिव सोचहिं कहहीं का लोका। पति न दीन्ह केस तिय प्रिय मोका।।
वर बरदानी शिव इहि कारन। करि मनोज पूरब अनुहारन।।
रति पति पाइ नाचु मन ढेरा। सुरन्ह जयति करि घोर करेरा।।
मांनु सबै भै सगुन पुनीता। होहिं ब्याह शिव बनु सुर हीता।।

आगे बढ़ि ब्रह्मा कहेउ, नाथ कीन्ह जोउ काज।
मानो व्याह कराइ देह, सुर मुनि विश्व समाज।।173।।
एक विनय ओरउ करहुं, धरेउ न ऐसो बेश।
जौन देखि नारी डरहिं, मैना पाउ क्लेश।।174।।
सुरन्ह वचन स्वीकारि शिव, दीन्ह बरात बढ़ाइ।
निज निज दायित्व लीन्ह जे, ते तहं पहुंचा जाइ।।175।।
रति समेत सुर काम तहं, शंभु पदे बहु लाग।
मांगत क्षमा बराति बनु, राखि प्रबल अनुराग।।176।।

सुरन्ह विनय सुनि दीन दयाला। धारण करिय रूप वर वाला।।
जौन विलोकि लोक हरखाहीं। ध्याइअ लोक शोक विनशाहीं।।
नाच गान रह हर्ष अपारा। बाजैं बाजन विविध प्रकारा।।
सब तजु आपु लोक प्रीताई। देखन्ह शिव विवाह मन लाई।।
भीड़ देखि चिन्ता सुर करहीं। केहि विधि सबु इक ठांव ठहरहीं।।
सुरन्ह बोलाइ शंभु समुझावा। ठहरन्ह विधि चलि आगु बनावा।।
नारदादि सुर साधु समाजा। विधि हरि दल शिव संग बिराजा।।
चलहीं आगे झूमि पिशाचिनि। उछरत कूदत नाचत नागिनि।।
शोभा वर वाहन अनतूला। जिमे रिद्धि सिधि व्यापु समूला।।
शिव घर हिम घर तलक बिताना। बहु विधि दर्शक मन हरखाना।।
सुरन्ह सुमंगल अवसर माना। बरसहिं सुमन बजाइ निशाना।।

विधि मानस सुत ऋषि अनुरूपा। चले करन्ह परिणय जग भूपा।।
करत जयति जय कृपानिधाना। हिम गृह ओर करिय प्रस्थाना।।
विधि हरि चलेउ ब्रह्म वर संगा। चढ़िय विमानेउ लौकिक ढंगा।।
प्रेम पुलक तन अतुल उछाहा। चाह विलोकन शंभु बियाहा।।
सम इहि ब्याह व्याह दुज नाही। रहेउ देव मुनि मने समाहीं।।
सुंदरता प्रतिमा वर कन्या। जाइ न आंकि सबै कह धन्या।।
रह बड़ि भीर बरातिन जैसे। उत हिम राखु व्यवस्था वैसे।।
करत जयति शिव शिवा भवानी। हिम भवने बरात नियरानी।।
पाइ खबर हिम सखा समेता। मिलेउ ससादर कृपानिकेता।।
जेस जे तानुसार जनवासा। हिम रचाइ रह दिन पखवासा।।
रचना दीखि अलौकिक नाना। करि चित चकित विचित्र बिताना।।
को बरनै जनवास स्वरूपा। सोऊ रह बरात अनुरूपा।।
करि विश्वकर्मा ता रचनाई। दीखु जेई ता विस्मय खाई।।
बसहिं जहं शिव उमा भवानी। तहं शोभा गुण काव बखानी।।
सोह स्वर्ग सुख सर्वस हिमथल। मिलु तबते अब लौं प्रतिभा बल।।
कुल समेत हिम भयो अनन्दा। कर मनही मन शंकर वन्दा।।

वर देखन्ह धावा नगर, न्यौतारी हिम जाति।
सबै सराहत आपु मुख, धन्य उमा औकाति।।177।।
खानपान स्वागत सकल, समय प्रथा अनुसार।
हिम कराइ पुनि चाह करि, अब करु लोका चार।।178।।
शिव स्वरूप नख शिख सुभग, बारहिं बार निहारि।
आपु सुभागी मानि चलु, दोउ पक्ष नर नारि।।179।।
नारदादि अगुवाइ करि, व्याह करावन्ह हेत।
साजहिं षोडश मातृगण, बहु विधि कृपानिकेत।।180।।

जेहि पुर बनि वर सोह महेशा। रूप बराती सुर सरवेशा।।
सब सुख आपु तहां सम्पन्ना। कमी न कवनिव केउ नहि खिन्ना।।
रह शिव ब्याह रीति दरसावन। आपुन्ह सम संसार बनावन।।
धन्य धन्य हिम धाम धरातल। सहित उमा रिधि सिद्धि जहां पल।।
सुमिरत जासु नाम जग मांही। सकल अमंगल मूल नशाहीं।।
करतल होहिं पदारथ चारी। जे भजहीं गिरि सुता पुरारी।।
रहेउ घराति बराती जेई। मुदित अपार युगन्ह सुख सेई।।
शिव विलोकि जेई ते हरखा। वचन मृदूल सुमन कर बरखा।।
ब्याह विभूषन विविध बनाये। सब मंगल सब भांति सुहाये।।
नयन तीन त्रय लोक सुहावन। मनुज सुरासुर सब मन भावन।।

शिव बारात

शिव नहि मानव विश्वपति, ता परिणय संस्कार।
ऋषि मुनि भूजन ताहि को, गाइअ आप नुसार।।
पर शिव आदि अनादि अग, मर्म न जानत कोय।
होइ लोक हित जाहि विधि, शंभु चलिय जग बोय।।

परम मुदित गावहिं पुर नारी। मंगल गान मनोहर गारी।।
जेस बरात तेस गान दिखावन। करिय तीय सुख सिन्धु नहावन।।
ज्योति निहारत ज्योति पुरुष के। ज्योती आरत थाली भर के।।
बार बार आरति करि मैना। मुदित निहारु योग्य वर नैना।।
जे शिव ब्याह देखु भरि ही के। लह अभिलाष पूर जगती के।।
सो सुख लाभ दुरानेउ उनके। आसुरि वृत्ति सोह उर जिनके।।

सकल अलौकिक सुन्दरताई। कहि नहि जाइ पलक थिर भाई।।
त्रय पुर मंगल बरसइ वैसे। कह विधि शिव व्याहे दिन ऐसे।।
को नहि मंगल सुनि ललचावा। शिव लोभी बनि वसुधा आवा।।
मनुज सुरासुर हित शिव सोहें। कमला ब्राह्मी हरि विधि मोहे।।
शंभु विलोकि सबै मन माना। रहा न भल कोउ शंभु समाना।।

सब विधि मंगल देखि शुभ, नारद वचन उचारु।
हिम ते कह शिव लै चलउ, करहू ब्याहाचारू।।181।।

आयसु पाइ देव हिम वंशा। करु मन पुलकित आपु प्रशंसा।।
आये लेन ब्याह हित तांई। सुनिय शंभु लाइअ प्रीताई।।
साजि आरती मंगल बानी। गावन लागी तिय हरखानी।।
पहिरे विविध रंग पट चीरा। नाना भूषन सोह शरीरा।।
शशि वदनी सबही मृगनयनी। संग अनुपम छबि रति मृदुबयनी।।
चलहिं चाल मद काम उथाहीं। कर कंगन चूड़ी खनकाहीं।।
जहं तहं ठाढ़ि अटारिन्ह नारी। उमा योग वर पलक निहारी।।
शची आरती रमा भवानी। सुर तिय सहित बनिय इक खानी।।
साजि आरती पुष्पन संगा। उमगु हेतु शिव मिलन प्रसंगा।।
तन मदनी दीपावलि साजे। हीक भरे देखब दिन आजे।।
नारिन्ह आपन वेश निहारे। धाइ चलइ मन मिलब अगारे।।
करहिं गान कल मंगल बानी। हरख विवश रह लाज दुरानी।।
नर अरु नारि वृद्ध तन बाला। चलहिं हालि देखन महिपाला।।
नभ अरु नगर सुमंगल चारा। बाजहिं बाजन विविध प्रकारा।।

सुबर रूप धरि शिव चले, नन्दी पै असवार।
नन्दी पुष्प विमान सम, रहेउ आपु पग डार।।182।।
पुलकित पुरवासी परम, बड़ उत्साह बरात।
उड़ि उड़ि सब वाहन चलत, कम केउ नाहि दिखात।।183।।
शुभ सिंगार नारी नगर, पुष्प आरती संग।
मधुर गान मुख लाइ करि, कहि जय गौरी गंग।।184।।
शंभु आरती नगर जन, करत लगाइअ देर।
व्याह बिलम्बित जाइ बनि, नारद मुख अस टेर।।185।।

वर बरात आयउ हिम द्वारे। करि मैना हिम पुर जयकारे।।
परिछन करहिं मुदित हिम रानी। नयन प्रेम जल मंगल जानी।।
देखि बरात शैल परिवारा। विस्मय लाउ गांव पुर दारा।।
शिव बरात अस सुर मुनि संगी। धन्य उमा बनु बनि अरधंगी।।
शोभा संस्कृति गुण आगारा। सब सराह जे आइ निहारा।।

परम अनन्दित रह दोउ कूला। उपमा नाहि सबै सुख फूला।।
बढ़ि नारद आयउ अगुवानी। हिम मैना ते कहिय मृदु बानी।।
वाम दाम शिव विष्णु विधाता। जांनु सहोदर सम लघु भ्राता।।
कुल परिवार ढंग जन जाती। सुर समूह अदभुत औकाती।।
जटा जूट शशि पातरि रेखा। करत कथन शिव परम सरेखा।।
भानु छत्र सोहत शिर मौरा। नहि अस लाग कबहुं केहि औरा।।
गंगा यमुना चबंर डुलावत। रिद्धि सिद्धि मुद मंगल गावत।।
करहीं देव ऋषी मुख बानी। वेद विहित मुद मंगल सानी।।
करु गन्धर्व किनर यश गाना। नाचि उछरि बनि मन मस्ताना।।
रह मैना हिम परम उछाहा। देखि मनोहर वर बल पाहा।।
बार बार शिव ज्योति निहारी। नहि अघाइ मैना गिरि नारी।।
इत उत नगर निवासिन बाला। वर गुण गावत मिलइ निहाला।।
आपु सराहइ सुता समेता। बड़िय भाग्य मिलु शंभु निकेता।।
थाह न मोद देखि वर योगे। आइ गे नेर शंभु गण लोगे।।

कर उठाइ नारद कहेउ, शिव संग रह दिन रात।
भयाक्रान्त मैना भईं, भा जेस बज्राघात।।186।।
सखी सहेली दिल मिली, रिस्ता जाके नेर।
अड़बड़ाय सब गिरि परिय, हाय–हाय मुख टेर।।187।।
पल बीते मैना उठिय, व्यापेउ पश्चाताप।
तनया घर जौ भूत बसु, भल न पाउ वर बाप।।188।।

बा भल अबै नाहि भै भांवरि। बिटिया भूत देखि बनु बावरि।।
भूलि गईं मैना गिरि रानी। शिव संगी सुर सब गुण खानी।।
निर्विकार तन मानि विकारी। झुंझलानी वच कुरुष निकारी।।
बसहिं शंभु घर भूत पिशाचा। तेहि घर केसस व्याह सब राचा।।
हीन मुखे कोउ बहु मुख कारी। कोउ कुरूप कोऊ अन्धारी।।
सींग पूंछ बिनु हाथ हाथ के। पीठ अपेट कोउ महा माथ के।।
कान अकान नाक बिनु चरना। कोउ ढंग कोऊ अंग बहु वरना।।
नाहि निहारि जांहि शिव साथी। कोउ सम मनुज पेट सम हाथी।।
देखि न जाइ भूत भय नगरी। होत मने जावउं चलि भितरी।।
हा हा हू हू ध्वनि कइ धावै। नेर जे परु ते प्राण गंवावै।।
भांजै मुगदर लूक बहाई। खाउं खाउं दौरे मुंह बांई।।
काल कराल रूप विकराला। परम भयानक परम विशाला।।
जिन दरसइ बनु तिन सुख भंगा। को बति कथइ परइ जे संगा।।
देखि अशुभ दिन राति अनेकन। कहां आस सुख शंभु निकेतन।।

मानि शंभु गण मैना रानी। भई शोकाकुल लाइ गलानी।।

होइ भले वर मैन कह, पर संगति दुखदारु।
बिलखि उठिय कर माथ दै, का विधि लिखे लिलारु।।189।।
बोलि झूंठ फुर ऋषि ठगेउ, सन्मुख मिलै जो आइ।
नोचउं दाढ़ी मोंछ तिन, तौ मन जात जुड़ाइ।।190।।
उमा तपस्या व्यर्थ भै, कलुषै कोख हमार।
गुड़ माहुर मिलि दीन्ह सब, करउं काह इतबार।।191।।
देखि प्रिया दुख शैल कह, तजु अन्तर अवसाद।
उमा भाग्य नहि दीखु कोउ, व्यर्थ बढ़ाउ विवाद।।192।।
शिव विवाह देखन सबै, आये तारन गात।
होइ न सकै थिर अगुण कोउ, जहां उमा तप सात।।193।।
अगुण सगुण सब रूप शिव, सुर मुनि करु सेवकाइ।
प्रिया शोक संताप तजि, भांवरि देहु घुमाइ।।194।।

बहु विधि गिरिपति तिय समुझावा। शिव अनुपम तेस साज सजावा।।
होइ न झूंठ देव ऋषि बानी। सहित उमा सब विधि वर मानी।।
विधि हरि नारदादि सो जाने। चलि मैना लग मति अनुदाने।।
शिव महिमा जग तूलि न जाई। लै गण शिव बनु विश्व सहाई।।
तथ तनया गनु उमा भवानी। मूल प्रकृति विश्व निर्माणी।।
ब्याह रुके बनु सुता दुखारी। शिव हेतु सो तप करि भारी।।
जांनु न मर्म भले महतारी। काह उमा वर बनु त्रिपुरारी।।
जग नहि दूज उमा वर जोगे। कथइ एक स्वर ऋषि पुर लोगे।।
पति परमेश्वर वचन सुहावा। मानि वचन संशय दुरियावा।।
गवा शोक मन मोद दिखाने। बाजहिं बाजा विविध निशाने।।
पुर युवतिन शंकर प्रभुताई। भूरि भूरि गिरि तिया सुनाई।।
नाना दृष्टि विचारे नाना। सबै मनोहर रूप बखाना।।
तुष्टि पुष्टि सन्तुष्टि समेते। आगिल कृत मैना मन चेते।।
उभरु मोद पुनि मंगल सानी। पुनि पुनि आरति करु गिरि रानी।।
आपु भूल करिय पश्चातापा। नाहि प्रगटु करि अनतर तापा।।
बार बार शंकर पद लागी। बनि गिरिजा समान अनुरागी।।
वेद विहित अरु कुल आचारू। कीन भली विधि सब व्यवहारू।।
नृत्य गान चल मंगलचारा। आवहिं पंच शब्द चहुंवारा।।
सबके नयन जात शिव गाते। उमा धन्य कहि सब मुसकाते।।
इतै दीखु जे उमा शरीरा। बनु लोभी मन बनै अधीरा।।
वर कन्या दोउ पक्ष निहारी। होहीं एक दूज बलिहारी।।

आरति अरघ लाइ गिरि रानी। जोरि हाथ बोली मृदु बानी।।
नाथ पधारहु मण्डप मांही। कन्या देहुं देव सुख पांही।।
विधि विष्णु शिव नेर विराजे। विभव विलोकि लोकपति राजे।।
आसन उचित सबै बैठारे। करिय हिमाचल कुल सतकारे।।
समय समय सुर बरसहिं फूला। सोह देव ऋषि मति अनुकूला।।

अस अवसर न बनु कबहुं, मनहुं विचारत सर्व।
स्वस्तिवाक ऋषि गण पढ़त, नाचत सुर गन्धर्व।।195।।
तीन देव जोरू सहित, मण्डप बैठहिं एक।
बासहिं मुद मंगल भवन, भाव भरे सब नेक।।196।।

सकल बरात शैल सनमानी। सहित दान विनती मृदु बानी।।
विधि हरि दिसपति जे तहं आवा। रहा न बंचित मान न पावा।।
पूजे शैल देव सम जानिय। दिये सुआसन बिनु पहिचानिय।।
शिव शिर छत्र दिवाकर भानू। ज्योति अनन्त जे लख चकरानू।।
समय विलोकि गर्ग कह बानी। लावहु मण्डप उमा भवानी।।
सुनि रानी उपरोहित बाता। सखिन्ह बुलाउ परम मुद गाता।।
कह कुल वधू बुलाइ बतावा। करि कुल रीति सुमंगल गावा।।
लावहु साजि उमा वर वेदी। देर न लाउ शंभु तिन दे दी।।
नारि वेश जे सुर वर वामा। सकल सुभांय सुन्दरी स्यामा।।
एक नाहि धाईं दुइ चारी। करि मैना वचने अनुहारी।।
बार बार सनमानहिं रानी। उमा रमा शारद सम जानी।।
वेगहि उमा संवारि सहेली। आपु जे मानहिं मधुर नवेली।।
साजि संवारि भगवती गाता। दीन्हीं करि जैसे रवि प्राता।।
शशि वदनी मदनी मतवारी। मिलि दुइ चारि चली चहुंवारी।।
भले ज्योति शिव मण्डप मांही। पर नहि उमा ज्योति कमतांही।।
उमा सुन्दरता बरनि न जाई। अनुपम अतुल मनोहर ताई।।
आवत उमा बरातिन देखा। शोभा ते सुख पाउ विशेखा।।
सबहिं मनहिं मन करिय प्रनामा। जानु अभय भै पूरन कामा।।
विधि हरि नारदादि सुर जेते। कीन्ह जयति जय पुष्प समेते।।
ऋषि असीस धुनि मंगल मूला। होवन लागि समय अनुकूला।।
प्रेम प्रमोद भयो नर नारी। गावत गान कोलाहल भारी।।
जेहि पल उमा पधारिय मण्डप। सोचु मने भा सफल महातप।।
तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू। दुइनव कुल गुरु शास्त्र नुहारू।।
इत शिव ज्योति शिवा शशि बदनी। आभा दोउ जाइ नहि बरनी।।
लै लाली सोहत पग दोऊ। रह शोभा गुण आन न कोऊ।।

जय धुनि वन्दत वेद गन, गावत मंगल गान।
सुनि हरखहिं बरसहिं सुमन, वर कन्या सब ध्यान।।197।।

सबै निहारि मनो दुख टारत। सहित उमा पति छबि मन धारत।।
लेहीं नयन लाभ अनयासा। दुर्लभ जौन मिलब नहि आशा।।
जाइ न बरनि मनोहर जोरी। सो उपमा लागै चहुं थोरी।।
शंभु उमा सुन्दर प्रति छांही। जहं जे तहां विलोकत वांही।।
मुदित मदन रति धरि बहु रूपा। दीखु शिवा शिव ब्याह अनूपा।।
दरस लालसा पुरवत सब के। शंकर बनि दूल्हा हिम घर के।।
भयो मगन सब देखन वारे। रोग शोक भय विपति निवारे।।
उमा महेश आपु लखि लेहीं। आन छिपाइ दृष्टि तर देहीं।।
एक दूज संग शोभित वैसे। अवसर शीत धूप मिलु जैसे।।
जहं जे तहं ते मन रह एही। ब्याह विलोकन भाव सनेही।।
देव वंश मुद पाउ अकूता। सोचु गये दिन गढ़ु शिव पूता।।
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा। सब मन भांवरि आश निहारा।।
सकल लोक जन नगर निवासी। बोलहिं वचन भरे सुखराशी।।
मण्डप दिव्य रूप वर जोरी। सोह उमा लै सखिन सगोरी।।
जनम सुफल सुर मनुज बनावत। धन्य शिवा तप शिव वर पावत।।
इहि जोड़ी जग जोड़ न आना। जगमगात सब नयन समाना।।
करत प्रशंसा सब मुख आपे। जोड़ विलोकि विश्व कुल बापे।।

कनक कलश मंगल जले, शोभित दीप समेत।
शुचि सुगंध वातावरण, विरचि परम सुख देत।।198।।
हिम मैना पुलकित हृदय, मण्डप बैठे आय।
वेद मंत्र ध्वनि देव ऋषि, बोलत शुभद सुहाय।।199।।

गगन सुमन झरि बरसन लागे। बूझहिं देव भाग्य जग जागे।।
दरसि शिवा शिव छबि अनुरागी। हिम मैना गनु आपु सुभागी।।
हिम आंगन छबि नाहि समाहीं। कन्या दान कृत्य शुरुवाहीं।।
वेद मंत्र षटकर्म समेता। करु कन्या कर कृपानिकेता।।
मंगल गान वेद ध्वनि साथे। होहीं सफल उमा शिव हाथे।।
जोड़ी दरसि जुड़ाहीं नैना। कीन आरती पुनि हिम मैना।।
तनया तप बल संग पुरारी। परमातम निर्गुण निविकारी।।
कार्य क्रम परिणय व्यवहारा। शुरुवावा मुनि गर्गाचारा।।
मुनि सप्तर्षि मंत्र उच्चरहीं। मण्डप युवतिन भीड़ उभरहीं।।
पांव पुनीत पखारन लागी। सहित शैल कुल नारि सुभागी।।
पुरवासी सुख लहहिं अनन्दा। बिनु तारे तरहीं पल चन्दा।।

अनुपम नयन लाभ सब लेहीं। ब्रह्म प्रकृति विभूषित देहीं।।
जाइ न वरनि मनोहर जोरी। कीरति गान होत चहुं ओरी।।
ज्योति जगत सुन्दर सुखदाई। जगमगात मनि सम गिरिराई।।
मनहुं मदन रति रूप अनेकन। व्यापि रहेउ गिरिराज निकेतन।।
होइ शिवा शिव हिम घर भांवरि। जिन दरसा तिन धरु शुभ कांवरि।।
बनेउ बधू वर दोउ इक प्राना। पद्धति सोई भईं विद्यमाना।।

कन्या दै हिमगिरि कहेउ, देव गहउ इहि हाथ।
सुखद शुभद जीवन सरस, राखु अन्त तक साथ।।200।।

सो छबि जिन देखा तिन पावा। मंगल सकल अमिय उर छावा।।
मुदित मुनीगण भांवरि फेरी। नेग सहित सद नीति निबेरी।।
शंभु उमा शिर सेंदुर दीन्ही। तीन लोक अहिबाती कीन्ही।।
अरुन पराग जलज भरि हीके। सो सुख सम्पति व्यापु सभी के।।
गर्गाचार्य करिय अनुशासन। बैठहिं शंभु शिवा इक आसन।।
दीखु शिवा शिव आसन एके। गूंज उठी जय लोक प्रत्येके।।
विधि विष्णु सुर बैठेउ नेरेउ। मुनिगण मधुप सुमंगल टेरेउ।।
प्रीति पुनीत सुहात उमा तन। शशि प्रतेज अनतूल प्रभाबन।।
जटा जूट छबि नीत जनेऊ। उमा मुद्रिका सम कह केऊ।।
सोहत भानु मौर मुख माथे। मंगल मय प्रदीप सुख साथे।।
भाल तिलक रह तीसर नयना। कांखा सोती पीत उपरना।।
मण्डप तरे शिवा शिव स्वामी। सोह मुदित खोये सब खामी।।
वेद रीति विधि शंभु विवाहा। पूरन कीन होन जेस चाहा।।
शिव विवाह सुख सब मन छावा। भा प्रतीत जेस आपु करावा।।
गृह जीवन परिणय संकल्पा। विधिवत भयउ रहा न अल्पा।।
शिव संकल्प प्रीति सब लाई। स्वयं लोक करु आन बताई।।
जेस शिव ब्याह वेद विधि बरनी। तब ते लोक चलिय तेस करनी।।
तीन देव मंह देव महेशा। व्याह महत्व दीन्ह उपदेशा।।
कहि न जाइ जानहिं जिन देखा। शिव विवाह महिमा बड़ लेखा।।
हिम गिरि सहित महेश भवानी। मुदित आपु मन सब सुख मानी।।
कमी न काहू लग रह काहू। दीन्ह सबै जोउ जहं जोउ चाहू।।
रिद्धि सिद्धि व्यापी तेहि ठौरी। सुमति सुहागिन आइअ दौरी।।
पुरवा नेग चार जन मांगन। सुविधा सोह सकल हिम आंगन।।
भा नित नूतन हिम पुर मांही। निमिष सरिस दिन जामिनि जांही।।
भै अभिषेक दम्पती माथे। वाचिक स्वस्तिन मुद मन साथे।।
मंगल परिणय यज्ञाचारा। भये सम्पन्न सहित जय कारा।।

घिरेउ वधू वर सुरन्ह तिया से। नगरी युवतिन प्रेम हिया से।।

उमा शंभु कोहबर चलेउ, युवतिन मुद उफलान।
अपने मन सोचन लगिय, कहब अवसि कुछ खान।।201।।
मन अनुसारे भाव जेस, ते तेस कीन्ही बात।
बसै जाहि पुर भानु शशि, तहां न आवइ रात।।202।।
कोहबर लोकाचार करि, गांठ खुलन्ह प्रसंग।
सबै कहा नाही करब, दूरि उमा शिव संग।।203।।

सबै कहहिं करि विविध ठठोली। मृदुल सरस प्रेम रस घोली।।
प्रेम समेत कौतुकागारे। सहित नारि करु लोकाचारे।।
तब लौ मातृ शक्ति तेहि ठारी। आइअ गांठ विवाद निवारी।।
कह पटूक शिव गांठ समेते। जाहि उमा लै शयन निकेते।।
वर बरात पल वधू विदाई। देहिं उमा पुनि शिव पहनाई।।
ताहि संग पुनि चले भवानी। खुलै न गांठ बंधी जग जानी।।
मातृ शक्ति वचने अनुसारे। कीन्ह उमा हिम गृहे मझारे।।
दिन अब आउ बिदाई अवसर। जुड़ी गांठ शिव पाउ पितम्बर।।
शंभु पितम्बर भांति स्वयंबर। शैल सुता पहनाइ दिगम्बर।।
खुली न गांठ जुड़ी जेही पल ते। आगम निगम कहत तब कल के।।
शंकर वचन शिवा गठिलावा। सोई आदर्श लोक त्रय पावा।।
कोहबर भवन शंभु तजि आये। होत बहिर सबु शीश नवाये।।
जाइ बोलाइ बोलाइ बराती। हिम जेवनार करिय बहु भांती।।
सुतन्ह समेत शैल परिवारा। करन्ह लाग नाना सतकारा।।
करि आदर सब पांव पखारे। आसन दीन्ह विनय बैठारे।।
शील सनेह जाह नहि बरना। सो सुख मांनु शैल कुल तरना।।
कुल समेत गिरि आंगन भवने। धोयेउ विधि हरि हर पद मगने।।
आसन उचित दीन्ह तिन ढंगा। मानिय भ्रात भांति त्रय संगा।।
तीन लोक जन शंभु बराती। यथा योग्य सब रांचिय पांती।।
गारि गान नारिन्ह अनुरागा। जेवन अवसर होवन लागा।।
उभरु भांति जेहि प्रेम अपारा। गयउ सो मंगल गीत उचारा।।
भांति अनेक बने पकवाना। सुधा सरिस नहि जाइ बखाना।।
मिलि लगु परसन देव शैलकुल। व्यंजन विविध हाथ लै कलछुल।।

यदपि गनब दुश्वार रह, पर जो जेहि अनुकूल।
ताहि परोसा सो गयउ, सबै मुदित सुख फूल।।204।।

एक एक विधि बरनि न जाई। जेहि रचना करि सुर मिलि आई।।
मानव देव असुर अनुहारे। रहिय व्यवस्था हिम घर द्वारे।।

चाह नुसार होब लगु मांगन। को मापै शोभा गिरि आंगन।।
छारस रुचि व्यंजन बहु भांती। एक एक रस अगणित जाती।।
भाव विनीत ठाढ़ हिम आगे। नेग चार भै जो जेहि लागे।।
जेंवत देहिं मधुर तिय गारी। लै लै नाम बरातिन वारी।।
नहि कुल गोत नाम नहि जाना। बचा न केउ देइ वेश निदाना।।
समय सुहावन पुरुष हंसावन। लागिय नारिन्ह गारी गावन।।
सासु से सरहज अधिक पियारी। तथ भोजन ते मृदु लगु गारी।।
समय नुसार गीत तिय गाहीं। सरस पूर मन सुखद जनाही।।
समय सुहावन मोद बढ़ावन। गारी तीय देहिं मन भावन।।
तीन देव ससुरारि सवादा। रहत पाइ मुसकाइअ ज्यादा।।

गारी नहि इहि काल सम, जो सुनि हांसी होइ।
नव सृष्टी विज्ञान विधि, कह सो तीय संजोइ।।205।।

गान सुमंगल रह चौपाहा। सहित प्रेम जेवनार विवाहा।।
सो गुण गान तीय करि अर्जित। हित कर जौन रहा न वर्जित।।
तजि अश्लील विनोदक बानी। गीत रूप प्रज्ञा रस सानी।।
बनइ जिते परिवार सुखारी। वचन सोइ नर नारि निकारी।।
मान पान लै सकल बराती। गै जनवास करत भल बाती।।
नेगी नेगचार लै आपन। फिरत मुदित करि जयति शिवासन।।
कहत जयति जय शंभु महेश्वर। सम तुम्हरे जग दीखु न दूसर।।
आशिर्वाद देत ऋषि वृन्दा। कह शिव धन्य बंधेव वर फन्दा।।
बनु आदर्श विमल परिवारा। जे शिव नाइ गहइ संस्कारा।।
खान पान अवसर उपरन्ता। निपटा नेग चार वृतन्ता।।
पुनि दूल्हा भा भवन बुलावा। पुलकि तीय दल चहुं ते आवा।।
बाजन पांच खानि लगु बाजन। लगु शिव आसन शैल हिमांगन।।
करु मनमानी कामिनि बोली। बनु जेस तेस उपहास ठिठोली।।
चंवर डुलावत वचन सुनावत। विधि नाना गिरिजा गुण गावत।।
स्वामी तीन लोक त्रिपुरारी। बनि दूल्हा सुनु सब चुप मारी।।
एक तो आपु जनम कै भुलहा। शोभित आज दूज पद दुलहा।।
गीत विनोद गान रस भीना। ते मन बोरिय तीय नबीना।।
सासुन्ह प्रेम विवश पद लागी। छबि अवलोकि परम अनुरागी।।
देहिं विविध उपहार अनेका। होहिं मुदित वर पाइ मने का।।
जेस नहि लाज प्रीति अस प्रगटे। सहज सनेह छुअत मुख झपटे।।
हिम आंगन अस उपजु प्रसंगा। करु मजाक तिय दल बहु ढंगा।।
शालिन सरहजि पुनि पुनि आई। करि नूतन आदर निज नांई।।

देव न मानि मानि वर खानी। मुद उपहार विविध अनुदानी।।
नारिन मोद मिलन वर संगा। करत हास कौतुक प्रसंगा।।
बीति गये कछु पल इहि भांती। नारि झमेल सुखद मृदु बाती।।
सुनि पुरवासिन बिदा बराती। आये करन्ह बिदा सब जाती।।

इहि प्रकार आनन्दमय, कीन्हे सब व्यवहार।
नित्य नये रस रंगमय, नित्य नवल ज्योनार।।206।।
विदा विदाई बैन मति, गूंज उठी चहुं ओर।
शिव समीप हिम नारि लै, आइ कहा कर जोर।।207।।
नयन सजल गद गद बैन, बोली गिरिजा मात।
सुता प्राण सुर ईश जग, सुनो मोर कछु बात।।208।।
यज्ञ साख मंह दीन्ह करि, अर्पण तनया आप।
जानि शरण रक्षण करहु, जथा करहिं मां बाप।।209।।

लगत आज तुम ब्रह्म समाना। शीश झुकाइ हृदय सनमाना।।
सुनि मैना मुख वचन विचारा। मुद विहंसे जगती रखवारा।।
तबलुं जोरि कर प्रेम समेता। हिम बोलेउ कहि कृपानिकेता।।
मांनु वचन राखिय नित नेहू। जेस सेवा तेस आयसु देहू।।
करहु विदा बोलेउ त्रिपुरारी। हम नर ब्रह्म सो शक्ती नारी।।
दुइ तन भले भयउं इक प्राना। जित बल मोर देब सुख नाना।।
हम जो सो सो मोर स्वरूपा। ब्याह पाछ कहं को दुइ रूपा।।
मांनु व्याह भव ब्रह्म विधाना। जे न मांनु ते मूढ़ अजाना।।
होत ब्याह तन बिछुड़न नाही। जे दुख देहिं नरक ते जांही।।
तन मन एक व्रत दुइ बन्धन। भल जे साध माथ तिन चन्दन।।
सखी सहेली पुर घर नारी। उमा विदा सुनि करि दुख भारी।।
नगर निवासी कुल जन आये। नयन शिवा शिव छबि गठिलाये।।
लोक रीति अनुसारे जोरी। बंधे दोऊ इक गांठ पटोरी।।
करिय हिमेश विदाई साजा। लाग शंभु प्रिय देव समाजा।।
आगु शंभु भै उमा पिछारी। सबहि निहारि करिय जयकारी।।
सन्मुख आउ सगुन शुभ नाना। ठाढ़ द्वार रह पुष्पक याना।।
तिम सोहे शिव सहित भवानी। लगु निकसन चहुं मंगल बानी।।
शंभु समान देव नहि आना। करि सो जिते लोक सुख साना।।
भू रथ रवि शशि चक अनुहारे। विधि सारथि विष्णु शर वारे।।
जलज तुणीर वेद हय नाघे। गिरि धनु वसुकि प्रत्यंचा साधे।।
सो शिव शिवा बसै उर मांही। जियउं जबहुं रहहूं ता छांही।।
सहज सरल अति दीनदयाला। आउ जे शरण तासु दुख घाला।।

चढ़ि निज वाहन सकल बराती। निज पथ चलन्ह बनाइअ पांती।।
भा जेस लोक मनोरथ पूरा। शंभु ब्याह गा इहि सुख जूरा।।
होन बिदा शिव चहत पयाना। सहित उमा गा सजि सुर याना।।
आगु ठाढ़ जहं तहं मुनिराई। करत विनय नत शीश झुकाई।।

नमन करत ऋषि मुनि कर जोरी। जोरि मनोहर पाइअ खोरी।।

देखि विदाई हिम नगर, और शंभु प्रभुताइ।
मुदित हृदय त्रयलोक बनु, करि जय गगन गुंजाइ।।210।।

निरनिमेष करि सबै निहारन। नयन जलद बनु हिम परिवारन।।
रवि शशि सोह गगन उइ जैसे। हिमपुर सोह उमा शिव ऐसै।।
प्रेम विवश पुनि पुनि पद लागी। मातु रूप जे बड़ अनुरागी।।
रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेह बरनि नहिं जाई।।
करु आयसु चलु सहित भवानी। सहित प्रेम बोले शिव बानी।।
परम मुदित मैना संग नारी। बोलि न पाउ नैन बह नारी।।
हृदय लगाइ युगल छबि मैना। प्रेम विकल मुख आउ न बैना।।
सौंपति सम्पति प्राण पियारी। जानि तीन पुर पति शुभकारी।।
अस कहि चरन लागि गिरि नारी। करिय प्रनाम विदाई बारी।।
पुर जन सहित शैल परिवारा। करि प्रनाम जे जहं जेहि ठारा।।
हिम सादर भेटे जामाता। रूप शील गुन निधि संग भ्राता।।
जोरि पानि सब शीश नवाये। गाइ सगुन शुभ मंगल लाये।।
चलत काल व्याकुल पुरवासी। शुचि सेवक देवी घर दासी।।
सुमिरि देव ऋषि शशि सुर भानू। मानि स्वदेव लाइ उर ध्यानू।।
करिय पयान उमा शिवशंकर। बरसन लागेउ सुमन अछत वर।।
आशीर्वाद सबै सन पावा। सुर नर शैल ज्योति जे आवा।।
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी। चिदानन्द निर्गुन सुखराशी।।
सहित बरात फिरेउ घर वारा। मनसा जगहित विमल विचारा।।
फिरत बरात वेद ध्वनि उपजी। सुनु जे सोचु चलब इहि सिरजी।।
सोचि बरात शंभु करतूती। देइ अशीष बड़ नगर विभूती।।
जेहि पथ उमा शंभु चढ़ि याना। चलेव श्रवन सुनु मंगल गाना।।
पुर कैलास भांति बहु साजे। ज्योति तीन पुर तहां विराजे।।
देखन शंभु उमा भल जोरी। चहुं ते उमड़ि चले नर गोरी।।
सकल सुमंगल साजि आरती। गाउ शक्ति सब सहित भारती।।
षोडश मातृ शक्ति तेहि ठांही। प्रेम विवश फिरु आपु भुलाहीं।।
मोद प्रमोद विवश सब माता। चलहिं न चरन शिथिल मन गाता।।
शिवम शिवा दरसन अनुरागी। चलि परिछन जे परम सुभागी।।
विविध विधान बाजने बाजे। पुर कैलाश सोह सब साजे।।
हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूग फल मंगल मूला।।
सगुन सुगंध न जाइ बखानी। मंगल सकल सजहिं सुर रानी।।

कनक थार भरि मंगलन्ह, रांचि आरती कीन।
पुलकित मंगल गानमय, मन भरि मोद नवीन।।211।।

रह शोभित शिव सहित भवानी। ठाढ़ धाम जन रह अगवानी।।
मुदित विलोकन रह नव जोरी। यूथन यूथ चलिय नव गोरी।।
यान ठाढ़ रह गृह कैलासे। बसहिं जहां पूरक अभिलाषे।।
आरति षोडस शकति उतारिय। करत गान सब दुल्हनि निहारिय।।
बेगि खोलि सब यान किंवारी। दूलहनि दरसिय बनिय सुखारी।।
चलि सवाचि न बनहिं उघारी। गृह आसन करि स्वागत सारी।।
पुर कैलाश धाम अति पावन। बैठ शिवा शिव परम सुहावन।।
आप करै सो जो जग हीता। करि जग पाउ सवाद अमीता।।
बांटहि लोक हेतु सुरताई। गहि संस्कार बनन्ह युग तांई।।
सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे। सीखु जे चलन्ह महेश नुहारे।।
सुर संस्कृति भव बाढ़न तांई। लोकाचार सविधि अपनाई।।
दीखु साधु जित सुर परिवारा। सो सो कृत शंकर अरुवारा।।
नाना द्रव्य भेंट सुख राशी। सहित शिवा दीन्हेउ अविनाशी।।
धूप धूम नभ बनु अनुकूला। सावन शैल रूप बनु कूला।।
सुर तरु सुमन माल पहिनाये। पुर कैलाश न भीड़ अमाये।।
मंजुल मनिमय वन्दन वारे। पाक विविध सुर आइ संवारे।।
सुर सुगंध शुचि वरषहिं बारी। सुखी सकल सुर नर गिरि धारी।।
करत किलोल मगन मन नाचन। शिव गणिका गण पाइअ बाजन।।
भीड़ अपार विलोकिय द्वारे। काजी गण बल शंभु जोहारे।।
करहु तयार समय सुधि कइके। भोजन रहन्ह ठांव सब लइके।।
शिव आयसु अनुसारा योजन। दीन्हेउ सुरन्ह व्यवस्था भोजन।।
दरसक प्रेम प्रमोद अपारेउ। होहिं मुदित शिव शिवा निहारेउ।।
भूषन मनि पट नाना जाती। करहिं निछावरि अगनित भांती।।
परमानन्द मुदित सुर रानी। देखि शंभु संग शिवा भवानी।।
उमा छटा सब विशिख निहारै। गुण शोभा बनु जइस उचारै।।
बरषहिं सुमन करैं सुर सेवा। नाचहिं गावहिं जिव जग देवा।।
देखि मनोहर जोरी गोरी। निज मुख शारद वचन ढिंढोरी।।
सोह शंभु संग शैल कुमारी। जेहि विलोकि जग होइ सुखारी।।
इहिं छबि बसइ जासु उर नयने। तेहि सुख सुलभ मोर इहि बयने।।
भये शिवा शिव छबि भिन्नताई। बिनु पूंछे ग्रह ताहि सताई।।
उपजहिं आपु हृदय असुराई। सो रोवे जग नाहि ओनाई।।
शिव दर्शन महिमा अनकूता। लोक विदित प्रमाण बहूता।।

जानि समय भल देव ऋषि, रचना यज्ञ कराइ।
वर दूल्हनि आहुति करिय, सुर नर मंगल गाइ।।212।।

शिव विवाह उत्सव भयो, बनु सुखमय परिणाम।
स्वर्ग रूप कैलाश लगु, पाइ उमा शिव धाम।।213।।

जयति शिवा शिव बोलि समाजा। करहिं सकल पूजन गृह काजा।।
जय ध्वनि विमल वेद कर बानी। पुर कैलाश सुमंगल सानी।।
करहिं शिवा शिव क्रतु सम्पन्ने। संग देव ऋषि मन प्रसन्ने।।
लिहे संग विधना हरि जोरी। लगु सो भ्रात भांति दोउ ओरी।।
दीखु जे तिन कह सम देवरानी। आदि शकति कमला ब्रह्मानी।।
मातृ शक्तियां सासु नुहारन। इत उत चलि फिरि करहिं संवारन।।
तेहि समाज ऋषि वृद्ध समाने। सुर गण रूप सखा अनुमाने।।
वस्तु अनेक निछावरि होहीं। धरा न शिव इक बांटेउ वोही।।
अन्त रहित सब आशिष देहीं। आउ जे लागु फिरन्ह पुर गेही।।
पूजिय देव पितर विधि भांती। जग अब पूजु जथा शिवराती।।
सबहि वन्दि मांगहि वरदाना। फिरन्ह बेरि करि करि जलपाना।।
नेगी नेग योग सब लेहीं। रुचि अनुरूप जगतपति देहीं।।
को न मांनु इहि दम्पति आपन। पांव पखारि सजावत गातन।।
विश्व वधू सुख लह तेहि काला। पार्वती संग दीन दयाला।।
आदर दान मान प्रति संगा। तेहि अवसर कीन्ही हर गंगा।।
कहहिं सप्रेम वचन सब माता। अवसर विदा काल दिन राता।।
सुनि सुनि हरख होत सब काहू। मानिय जग हित शंभु विवाहू।।
प्रीति रीति सम्पदा सुहाई। जो शिव शिवा सो रह जग तांई।।
सहित भवानी यज्ञ उपरन्ता। लेइ वट आसन जग भगवन्ता।।
कश्यप अत्रि आदि मुनि राई। जोरि पानि मुख विनय सुनाई।।

लोकाचार कराइ सब, विश्व विधाता मानि।
नाथ भुलावहु भूल मम, सम सेवक जन जानि।।214।।

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां,
परस्पराश्लिष्ट वपुर्धराभ्याम्।
नगेन्द्र कन्या वृषकेतनाभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।1।।
नमः शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्यां,
नमस्कृताभीष्ट वर प्रदाभ्याम्।
नारायणेनाऽर्चित पादुकाभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।2।।

नमः शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्यां,
विरंचिविष्ण्विन्द्र सुपूजिताभ्याम्।
विभूतिपाटीर विलेपनाभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।3।।
नमः शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्यां,
जगत्पतिभ्यां जय विग्रहाभ्याम्।
जम्भारि मुख्यैरभिवन्दिताभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।4।।
नमः शिवाभ्यां परमौषधाभ्यां,
पंचाक्षरीपंजररंजिताभ्याम्।
प्रपंचसृष्टिस्थिति संहृतिभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।5।।

ऋषि समूह विनती सहित, करि त्रिदेव प्रनाम।
वर मांगिय अन्तर भगति, लोक होन सब काम।।215।।
ताप तीन हर बुद्धि प्रद, आयु प्रभा सुख लोक।
जन्म जन्म आनन्द धन, होन मुक्त मन शोक।।216।।
जेस अन जाने व्रत करिय, तरा भील परिवार।
शिव विवाह कथ सुनि श्रवन, तरै आपु संसार।।217।।
अवलोकिय शिव ब्याह सुख, जग जन कीन पयान।
अत्रि आदि शिव चाह जेहि, सो लेइ तहं स्थान।।218।।
अघ दारिद दुख बैन कटु, कलह कपट बिखराव।
व्रत प्रदोष जे लोक करु, बनु ता विपति दुराव।।219।।
भगति भावना भाव शिव, दीजइ भानु समान।
अस्त न सपने सो बनै, रखु इतना असमान।।220।।
सृष्टि रूप जग ज्योतिमय, विश्व रूप भगवन्त।
गिरिजा शंकर छबि युगल, आदि अनादि अनन्त।।221।।

इति श्रीमद् शिव शक्ति कथायां
सकल कलिकलुष विध्वंसने
द्वितीय अध्यायः
शिवा खण्ड समाप्तः